

NOT FOR SALE

# लक्ष्मी विज्ञापक सिद्धि विशेषांक

मई 2007

मूल्य : 18/-

# सत्र-तंत्र-संग्रह

विज्ञान



ज्ञान सागर तल अमृत मोती

तंत्र सिद्धि-घण्टाकर्ण भैरव

कैसे सिद्ध होती है विंध्यवासिनी

कौन सा व्यवसाय करें

आयुर्वेद अपनायें - सौ साल जिउं

पूर्व जन्म दोष शाप निवारणी महान् दीक्षा

A Monthly Journal





## COLLECTION OF VARIOUS

- HINDUISM SCRIPTURES
- HINDU COMICS
- AYURVEDA
- MAGZINES

FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)

Made with



By

Avinash/Shashi

[creator of  
hinduism  
server]



# विश्व की श्रेष्ठदम् दीक्षाएँ

जीवन में पूर्णता प्राप्त करने के लिए ये दीक्षाएं तो  
प्रत्येक साधक को प्राप्त करनी ही चाहिए

प्रत्येक मनुष्य, जिसने जन्म लिया है उसके लिए सर्वथा उपयोगी है दीक्षा, क्योंकि दीक्षा शिष्य के जीवन को पावन बनाने की दुर्लभ क्रिया है।

हमारे कई-कई जन्मों के दोष, पाप एवं कुसंस्कारों के रूप में संकलित रहते हैं। इन्हीं दुःसंस्कारों से साधक को मुक्त करने के लिए दीक्षाएं अपेक्षित हैं। गन्दे कपड़े के मैल को बिल्कुल निर्मूल करने के लिए जैसे कई बार कई प्रयास करने पड़ते हैं, वैसे ही उन दुःसंस्कारों को मिटाने के लिए दीक्षा ही सबल उपाय है।

इसीलिए पाप मुक्त होने के लिए साधक द्वारा अनेक बार दीक्षा लेने का शास्त्रीय विधान है। दीक्षाओं के अनेक स्वरूप एवं प्रकार हैं, इसलिए आवश्यकतानुसार उनको लेने का प्रयास करते रहना चाहिए।

शिष्य के जीवन की यह ऐतिहासिक घटना होती है, कि सदगुरु उसे गुरु दीक्षा के माध्यम से अपना ले, हृदय से लगाकर अपने जैसा पावनतम बनाकर, एकाकार कर लें। केवल शिष्य के कान में गुरु मंत्र पूँक देना ही गुरु दीक्षा नहीं होती। शिष्य के जीवन के पाप, ताप को समाप्त कर बन्धन मुक्त करना, जन्म-मृत्यु के चक्र से छुड़ा देना ही दीक्षा होती है, नर से नारायण बनाने की, पुरुष से पुरुषोत्तम बनाने की तथा मृत्यु से अमृत्यु की ओर ले जाने की पावनतम क्रिया ही गुरु दीक्षा होती है। गुरु दीक्षा लेने के बाद तो यह सम्पूर्ण जीवन ही विकसित कमल पुष्प की तरह सम्मोहक, पूर्णमासी के चन्द्र समान आह्वादक एवं अमर फल की तरह मधुर व रसपूर्ण होता ही है।

दीक्षा का महत्व इसलिए भी कई गुण बढ़ जाता है क्योंकि आजकल इस आपाधापी वाले युग में, इस तीव्र-गति से चलने वाले समय में हर कोई इस भाग-दौड़ में शामिल है और किसी में भी इतना संयम नहीं, और न ही किसी के पास इतना समय है कि वह अपनी इच्छाओं की पूर्ति हेतु साधनाओं में समय दे सके क्योंकि साधनाओं में लगातार कई दिनों तक साधक को पूर्ण मनोवेग के साथ जुटना पड़ता है... और यह सब आज के युग में संभव नहीं...

नीचे कुछ विशेष दीक्षाओं को स्पष्ट किया जा रहा है, जिन्हें गुरु दीक्षा के बाद ग्रहण करना चाहिए। ये दीक्षाएं पूर्णतः गोपनीय हैं और गुरु-शिष्य परम्परा के अनुसार ही ये अभी तक गतिशील रह सकी हैं। इन दीक्षाओं द्वारा शिष्य जीवन में अपने प्रत्येक अभीष्ट की प्राप्ति कर सकता है -

१. महालक्ष्मी दीक्षा - जिसके माध्यम से भगवती महालक्ष्मी को आबद्ध कर धन को चिरस्थायी रूप दे सकते हैं, और सम्पूर्ण वैभवयुक्त जीवन प्राप्त कर सकते हैं।

यंत्रः ॥३५० श्री हीं श्री महालक्ष्म्यै फट ॥

# शाक्त-प्रकाश

॥ उ० पक्षम तत्त्वाय नाकायणाय बुकभ्या नमः ॥



सद्गुरुदेव

सद्गुरु प्रवचन 5

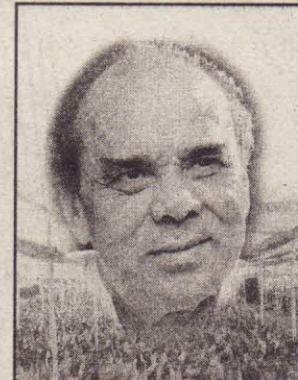
स्तम्भ

शिष्य धर्म	43
गुरुवाणी	44
नक्षत्रों की वाणी	60
मैं समय हूँ	62
वाराहमिहिर	63
इस मास दिल्ली में	80
एक दृष्टि में	84



साधना

नवग्रह साधना	30
घटाकर्ण भैरव	31
लक्ष्मी विनायक साधना	37
क्रीं साधना	40
भगवती विंध्यवासिनी	
साधना	57
महारौद्र ऋष्म्बक प्रयोग	77
Dakshinavarti Shankh Sadhana	82
Kaamdev Rati Sadhana	83



दीक्षा

पूर्वजन्म कृत दोष	
निवारण	
शापोद्धार दीक्षा	46

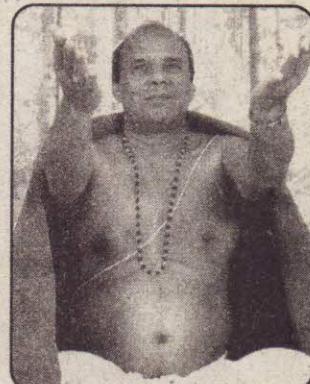
स्तोत्र

ब्रह्मकृत छिन्नमस्ता	
स्तोत्र	71



विशेष

तंत्र-मंत्र-यंत्र और आधुनिक विज्ञान	23
ज्योतिष और व्यवसाय	27
साधक जीवन में दैनिक चर्या आवश्यक है	55
एकांत तो वार्तालाप है, संगीत है	67
शातायु जीवन संभव है	75



प्रेरक संस्थापक

डॉ. नारायणदत्त श्रीमाली  
(परमांग स्वामी निखिलेश्वरानंद जी)

प्रधान सम्पादक

श्री नन्द किशोर श्रीमाली

कार्यवाहक सम्पादक

श्री कैलाशचन्द्र श्रीमाली

संयोजक व्यवस्थापक

श्री अरविंद श्रीमाली

प्रकाशक एवं स्वामित्व  
मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान  
द्वारा  
सुदर्शन प्रिन्टर्स  
487/505, पीरागढ़ी,  
रोहतक रोड, नई दिल्ली-87  
से मुद्रित तथा  
मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान हाईकोर्ट  
कॉलोनी जोधपुर से प्रकाशित

मूल्य (भारत में)

एक प्रति:	18/-
वार्षिक:	195/-

सिद्धाश्रम, 306 कोहाट एन्डलेव, पीतमपुरा, दिल्ली-110034, फोन: 011-27352248, टेली फैक्स: 011-27356700  
मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर - 342001 (राज.) फोन: 0291-2432209, टेली फैक्स: 0291-2432010  
WWW address - <http://www.siddhashram.org> E-mail add. - [mtv@siddhashram.org](mailto:mtv@siddhashram.org)

## नियम

पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाओं का अधिकार पत्रिका का है। इस मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान पत्रिका में प्रकाशित लेखों से सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। तर्क-कुतर्क करने वाले पाठक पत्रिका में प्रकाशित पूरी सामग्री को गल्प समझें। किसी नाम, स्थान या घटना का किसी से कोई सम्बन्ध नहीं है, यदि कोई घटना, नाम या तथ्य मिल जाय, तो उसे संयोग समझें। पत्रिका के लेखक घुमकड़ साधु-संत होते हैं, अतः उनके पते के बारे में कुछ भी अन्य जानकारी देना सम्भव नहीं होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी लेख या सामग्री के बारे में वाद-विवाद या तर्क मान्य नहीं होगा और न ही इसके लिए लेखक, प्रकाशक, मुद्रक या सम्पादक जिम्मेवार होंगे। किसी भी सम्पादक को किसी भी प्रकार का पारिश्रमिक नहीं दिया जाता। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद में जोधपुर न्यायालय ही मान्य होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी सामग्री को साधक या पाठक कहीं से भी प्राप्त कर सकते हैं। पत्रिका कार्यालय से मंगवाने पर हम अपनी तरफ से प्रामाणिक और सही सामग्री अथवा यंत्र भेजते हैं, पर फिर भी उसके बाद में असली या नकली के बारे में अथवा प्रभाव होने या न होने के बारे में हमारी जिम्मेवारी नहीं होगी। पाठक अपने विश्वास पर ही ऐसी सामग्री पत्रिका कार्यालय से मंगवायें। सामग्री के मूल्य पर तर्क या वाद-विवाद मान्य नहीं होगा। पत्रिका का वार्षिक शुल्क वर्तमान में 195/- है, पर यदि किसी विशेष एवं अपरिहार्य कारणों से पत्रिका को ट्रैमासिक या बंद करना पड़े, तो जितने भी अंक आपको प्राप्त हो चुके हैं, उसी में वार्षिक सदस्यता अथवा दो वर्ष, तीन वर्ष या पंचवर्षीय सदस्यता को पूर्ण समझें, इसमें किसी भी प्रकार की आपत्ति या आलोचना किसी भी रूप में स्वीकार नहीं होगी। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी साधना में सफलता-असफलता, हानि-लाभ की जिम्मेवारी साधक की स्वयं की होगी तथा साधक कोई भी ऐसी उपासना, जप या मंत्र प्रयोग न करें, जो नैतिक, सामाजिक एवं कानूनी नियमों के विपरीत हो। पत्रिका में प्रकाशित लेखों के लेखक योगी या संन्यासी लेखकों के विचार मात्र होते हैं, उन पर भाषा का आवरण पत्रिका के कर्मचारियों की तरफ से होता है। पाठकों की मांग पर इस अंक में पत्रिका के पिछले लेखों का भी ज्यों का त्यों समावेश किया गया है, जिससे कि नवीन पाठक लाभ उठा सकें। साधक या लेखक अपने प्रामाणिक अनुभवों के आधार पर जो मंत्र, तंत्र या यंत्र (भले ही वे शास्त्रीय व्याख्या के इतर हों) बताते हैं, वे ही दे देते हैं, अतः इस सम्बन्ध में आलोचना करना व्यर्थ है। आवरण पृष्ठ पर या अन्दर जो भी फोटो प्रकाशित होते हैं, इस सम्बन्ध में सारी जिम्मेवारी फोटो भेजने वाले फोटोग्राफर अथवा आर्टिस्ट की होगी। दीक्षा प्राप्त करने का तात्पर्य यह नहीं है, कि साधक उससे सम्बन्धित लाभ तुरन्त प्राप्त कर सकें, यह तो धीमी और सतत प्रक्रिया है, अतः पूर्ण श्रद्धा और विश्वास के साथ ही दीक्षा प्राप्त करें। इस सम्बन्ध में किसी प्रकार की कोई भी आपत्ति या आलोचना स्वीकार्य नहीं होगी। गुरुदेव या पत्रिका परिवार इस सम्बन्ध में किसी भी प्रकार की जिम्मेवारी वहन नहीं करेंगे।

## ★ प्रार्थना ★

ॐ नमः शम्भवाय च मयोभवाय च नमः  
शङ्कराय च मयस्कराय च नमः  
शिवाय च शिवतराय च ॥

कल्याण एवं सुख के मूल स्त्रोत भगवान् शिव को नमस्कार है। कल्याण के विस्तार करने वाले तथा सुख के विस्तार करने वाले भगवान् शिव को नमस्कार है। मङ्गलस्वरूप और मङ्गलमयता की सीमा भगवान् शिव को नमस्कार है।

## गुरु आज्ञा पालन परमो धर्म

विद्यालय सत्र पूरा होने पर आचार्य ने शिष्यों की परीक्षा लेनी चाही। सभी शिष्यों के हाथ में बांस की टोकरियां थमाते हुए आचार्य ने कहा, ‘‘इन में नदी का जल भर कर लाना है, और उस से विद्यालय भवन की सफाई करनी है’’।

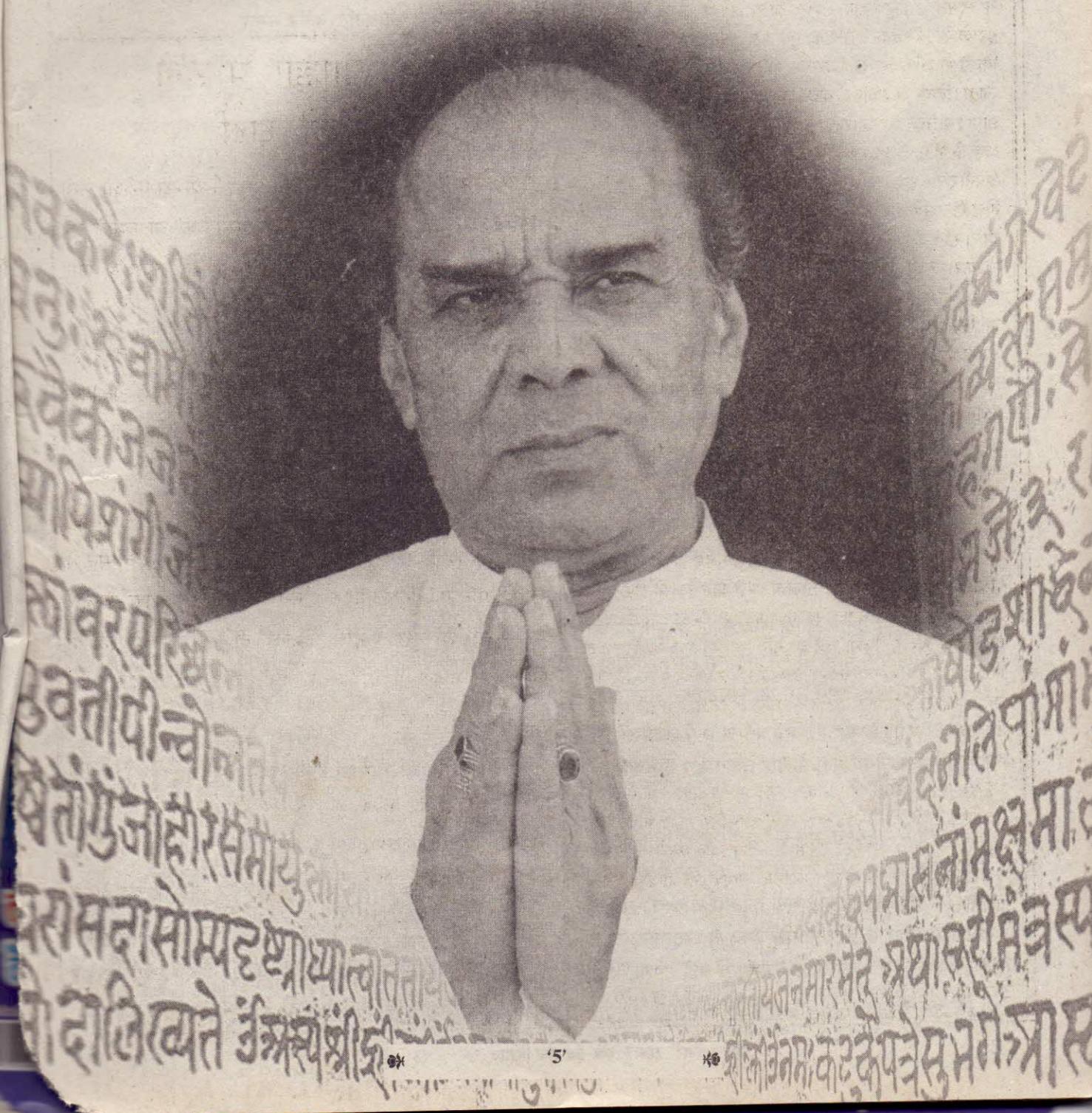
शिष्य आचार्य की आज्ञा सुन कर चकरा गए कि बांस की टोकरी में जल लाना कैसे संभव होगा, लेकिन सभी ने टोकरियां उठाई, नदी पर गए, प्रयास किया, किन्तु बांस की टोकरियों के छिद्रों में से जल रिस जाता।

हताश शिष्यों ने लौट कर गुरुदेव को बस्तुस्थिति बताई, किन्तु एक छात्र अपने कर्तव्य के प्रति नंगीर था। उस के मन में गुरु के प्रति पूर्ण निष्ठा और आस्था थी। वह यह सोच बारबार जल भरता कि गुरुदेव ने ऐसी आज्ञा दी है तो यों ही नहीं दी होगी, उन के कहे के पीछे जरूर कोई अर्थ होगा। प्रातः से सायं तक वह जल ही भरता रहा।

जल में बांस की टोकरी के रहने से बांस की तीलियां फूल चुकी थीं और छिद्र बंद हो चुके थे, अतः शाम को वह टोकरी में जल ले कर विद्यालय पहुंचा।

अब गुरु ने शिष्यों को इकट्ठा किया और परिश्रम का महत्व बतलाते हुए कहा, ‘‘कार्य तो मैं ने तुम्हें अकल्पनीय और दुरुहीनी सौंपा था, किन्तु विवेक, धैर्य, लगन, निष्ठा तथा निरंतर प्रयास से कठिन कार्य भी संभव हो सकता है’’।

# मंत्र पुस्तक - सद्गुरदेव





मंत्र विज्ञान केवल शब्द विज्ञान नहीं भावना विज्ञान भी है। मंत्र में ध्वनि की तरंगे भावनाओं और विचारों की चुम्बकीय शक्ति के स्वरूप में गमन करती है। मंत्र विज्ञान के सम्बन्ध में सद्गुरुदेव के संन्यास जीवन के सहयोगी वैताल भट्ट ने गुरुदेव के साथ बिताये कुछ काल को स्पष्ट किया है। गुरुदेव ने जीवन में ज्ञान से पूरे भारतवर्ष की मंत्र-तंत्र के सम्बन्ध में विचार धारा को बदला है। आज जब उन क्षणों को याद करते हैं। उन अनुभवों को पढ़ते हैं तो आँखें बरबस ही भींग उठती हैं, हमारे सद्गुरुदेव को कोटि-कोटि नमन् -

मंत्र की अपने आप में पूर्ण और स्वतंत्र सत्ता है। जीवन के पार्थिक अपार्थिक चेतन, अचेतन, निष्क्रिय और सक्रिय जीवन में मंत्र की सर्वोपरि महत्ता है। बिना मंत्र के जीवन का अस्तित्व संभव ही नहीं। वेदों में मंत्र की सर्वोच्च सत्ता एवं उन्हें ब्रह्म के समान माना है। हमारे जीवन में जो कुछ भी घटित हो रहा है इसके मूल में मंत्र की सत्ता विद्यमान है। यह बात अलग है कि हम उनके अस्तित्व को स्वीकार करें या न करें अथवा मंत्र के महत्व को समझें या न समझें, परन्तु यह निश्चित है कि बिना मंत्र के हमारे जीवन का कोई अस्तित्व नहीं।

मानव जो कुछ बोलता है वह अपने आप में शब्द है और जब शब्द का सम्बन्ध अर्थ से हो जाता है तो वह कल्याणमय बन जाता है। वे शब्द निरर्थक होते हैं जिनके मूल में अर्थ विद्यमान नहीं रहता। कालिदास ने 'वागर्धाविव' कह कर इसी कथन की पुष्टि की है, परन्तु जिसके मूल में अर्थ है, वह शब्द ही सार्थक है, ऐसा नहीं कहा जा सकता, क्योंकि जब शब्द को ब्रह्म कह दिया जाता है तब फिर प्रत्येक शब्द ब्रह्ममय बन जाता है। हम लौकिक व्यक्ति जिन शब्दों के अर्थ समझ लेते हैं उन्हें सार्थक कहते हैं पर जिन शब्दों को हम नहीं समझ पाते वे वास्तव में इतने उच्च कोटि के होते हैं कि हमारी बुद्धि उन शब्दों के मूल तक नहीं पहुंच पाती और इसी लिए हम अपने अहं के वशीभूत होकर उन शब्दों को निष्क्रिय कह देते हैं।

कई बार हम देखते हैं कि उच्च कोटि के साधक का ध्यान टूटने पर उनके मुंह से कई ऐसे शब्द निकल जाते हैं जिनका आपस में कुछ भी सम्बन्ध या तारतम्य नहीं होता, तब हम आश्चर्य चकित से, उनके मुंह की ओर तोकते रहते हैं और फिर अपने मन को समझाकर शांत कर लेते हैं कि स्वामी जी ने कुछ भी मुंह से कह दिया होगा।

परन्तु ये 'कुछ भी' शब्द अपने आप में अत्यन्त ही महत्वपूर्ण हैं, क्योंकि उनका धरातल इतना ऊँचा होता है कि हम सामान्य मानव उस ऊँचाई तक पहुंच नहीं पाते या हमारी बुद्धि इतनी विकसित नहीं है कि हम उस ऊँचाई को समझ सकें।

वास्तव में मानव के मुंह से जो भी शब्द निकलता है वह 'मंत्रमय' होता है। जिन शब्दों के अर्थ समझ में आते हैं उन्हें बातचीत की संज्ञा से विभूषित कर देते हैं पर जो शब्द यों ही मुंह से निकल जाते हैं या जिन शब्दों के अर्थ हमारी समझ में नहीं आते उन शब्दों को हम व्यर्थ का मान लेते हैं, जबकि वास्तव में बात यह है कि जिन शब्दों के अर्थ समझ में आते हैं, वे लौकिक शब्द या सामान्य शब्द कहे जा सकते हैं, इसके विपरीत जिन शब्दों का अर्थ या तारतम्य सामान्य व्यक्ति के समझ में नहीं आता, वे शब्द वास्तव में अपना महत्व रखने वाले होते हैं।

मेरे कहने का तात्पर्य यह नहीं है कि प्रत्येक वह शब्द जिसके मूल और अर्थ का रहस्य हम नहीं समझ पाते, वे

उच्च कोटि के होते हैं परन्तु इस प्रकार के निश्चित लय और शब्दों से बंधे हुए समूह को 'मंत्र' कहा जा सकता है।

मानव जब दूसरे से बात करता है तो वह मंत्र ही है, क्योंकि एक निश्चित लय और सीमा से बंधे शब्दों के समूह का प्रभाव सामने वाले के मन पर अवश्य पड़ता है, क्योंकि वह उन शब्दों के मूल और उसके अर्थ को समझता है। उदाहरण के लिए एक भिखारी किसी सम्पन्न व्यक्ति के दरवाजे पर जाकर घर के स्वामी को यह कहता है कि ‘मैं भूखा हूँ’ तो यह वाक्य मंत्रमय है क्योंकि इन शब्दों का अर्थ प्रभाव ग्रह स्वामी के चित्त पर पड़ता है।

एक व्यक्ति जा रहा है और एक भिखारी उससे याचना करता है पर वह उसे टरका देता है, परन्तु कुछ दूर जाने पर दूसरा भिखारी विगलित कंठ से वही वाक्य दोहराता है, जो कि पहले भिखारी ने कहे थे तो वह व्यक्ति द्रवित होकर उस भिखारी को कुछ-न-कुछ दे देता है।

यहां पर दोनों भिखारियों ने एक ही प्रकार के शब्दों का प्रयोग किया है, परन्तु पहले भिखारी ने सामान्य तरीके से अपनी बात कही थी, जबकि दूसरे भिखारी ने उन्हीं वाक्यों को एक विशेष लय के साथ उच्चरित किया, जिसका प्रभाव उस व्यक्ति पर गहराई के साथ पड़ सका।

मेरे कहने का तात्पर्य यह है कि मंत्र के प्रभाव में ध्वनि और लय का विशेष महत्व होता है, क्योंकि वह मंत्र निरर्थक होता है, जिसके मूल में निश्चित लय या ध्वनि नहीं होती। इस प्रकार से वे शब्द निरर्थक कहे जा सकते हैं जिनके मूल में अर्थ भले ही हो परन्तु यदि वे शब्द एक विशेष लय के साथ नहीं कहे जायें तो उनका प्रभाव सर्वथा नगण्य होता है।

एक कवि सम्मेलन में जब हास्य रस का कवि मंच पर खड़ा होकर एक विशेष लय के साथ अपनी हास्य कविता सुनाता है तो दूर-दूर तक बैठे श्रोता खिलखिला पड़ते हैं और हंसते-हंसते दोहरे हो जाते हैं, परन्तु इसके कुछ ही समय बाद या किसी अन्य अवसर पर इसी प्रकार के मंच पर खड़े होकर उसी हास्य कवि की वही कविता कोई अन्य पाठक पढ़ता है तो एक भी श्रोता नहीं हंस पाता।

यहां पर स्थान वही है, शब्द वही है, परन्तु एक व्यक्ति उन शब्दों को एक विशेष लय के साथ पढ़ता है जिससे उन शब्दों का प्रभाव दूर बैठे श्रोताओं के चित्त पर पड़ता है, परन्तु यदि वे ही शब्द बिना लय के साथ पढ़े जायें तो उनका प्रभाव बिल्कुल नहीं होता।

इससे यह स्पष्ट होता है कि शब्द या उसके अर्थ मंत्र शास्त्र की दृष्टि से विशेष महत्व नहीं रखते, अपितु एक विशेष लय या ध्वनि महत्पूर्ण प्रभाव रखती है। कवि ने जिन शब्दों का प्रयोग किया था वे शब्द एक दूसरे से जुड़े होने के कारण अर्थमय अवश्य थे, परन्तु उसके साथ कहने का एक विशेष ढंग या लय महत्पूर्ण था जिसका प्रभाव श्रोताओं पर पड़ा और वे दर बढ़ते हुए भी खिलखिलाने या हँसने लगे।

यदि मोटे रूप में कहा जाय तो, यदि हास्य कविता का प्रभाव श्रोताओं के चित्त पर पड़ सकता है तो अन्य पंक्ति का भी प्रभाव पड़ सकता है, यदि उस पंक्ति को विशेष लय के साथ कहा जाय।

मंत्र का मूल यह 'लय' ही है, कि जो साधक एक निश्चित लय के साथ मंत्र का उच्चारण करता है वह निश्चय ही सफलता प्राप्त कर लेता है, परन्तु यदि सीधे-सादे रूप में उस मंत्र का पठन किया जाए तो उसका प्रभाव नहीं होगा, क्योंकि उस शब्द या वाक्य के साथ लय का संयोग नहीं है।

शब्दों की शक्ति अपने आप में अत्यन्त महत्वपूर्ण मानी गई है क्योंकि विज्ञान के अनुसार हम जो भी उच्चारण करते हैं वह ध्वनि पूरे ब्रह्माण्ड में फैल जाती है और वह युगों-युगों तक अक्षण्ण बनी रहती है। उदाहरण के लिये रेडियो पर जो भी भाषण या संगीत सुनते हैं वह ध्वनि हजारों मील दूर से उच्चरित होती है, परन्तु हमारे पास रेडियो के रूप में ऐसा साधन विद्यमान है जिससे कि हम उस ध्वनि को पकड़ पाते हैं और तब हम उस व्यक्ति की आवाज सुनने में समर्थ हो जाते हैं जो कि हजारों मील दूर बैठा बोल रहा है।

अतः शब्द की सीमा अपार है, सामने बैठे व्यक्ति पर ही शब्द का प्रभाव पड़ता हो यही सब कुछ नहीं है अपितु हजारों मील दूर बैठे व्यक्ति के चित्त पर भी हम उन शब्दों के द्वारा एक निश्चित प्रभाव डालने में समर्थ हो सकते हैं। उदाहरण के लिए यदि हास्य रस का कवि हजारों मील दूर बैठा विशेष लय के साथ कविता सुना रहा है और हम रेडियो के द्वारा उस कविता को सुनें तब भी हम खिलखिला पड़ते हैं क्योंकि उस ध्वनि का प्रभाव हमारे चित्त पर पड़ रहा है। फलस्वरूप उस शब्द के द्वारा जो प्रभाव हम पर होना चाहिए वह होता है और इसीलिए हम हँसते हैं। इसी प्रकार करुण रस की कविता सुनकर सुबकने लग जाते हैं, वीर रस सुनकर रोमांचित हो उठते हैं और वीभत्स रस के द्वारा हम घोर घृणा से भर जाते हैं।

किसी शब्द की मूल ध्वनि क्या है जिससे कि उसका निश्चित और स्थायी प्रभाव पड़ सके? यह पुस्तक नहीं बता सकती। इसके लिए गुरु की आवश्यकता होती है, क्योंकि वही उच्चारण करके उस शब्द की मूल ध्वनि को समझा सकता है और जब हमें शब्द की मूल ध्वनि का ज्ञान हो जाता है तो हम उसी लय के साथ उस शब्द का उच्चारण कर निश्चित प्रभाव डालने में समर्थ हो सकते हैं।

यहां पर 'गुरु' शब्द का प्रयोग विशेष अर्थ में नहीं कर रहा हूं। गुरु वह होता है जिसे उस क्षेत्र का विशेष ज्ञान हो। अतः जो मंत्र की व्याख्या, उसका उपयोग, उसकी क्रिया, उसका अर्थ और उसकी ध्वनि समझा सके वही गुरु कहा जा सकता है।

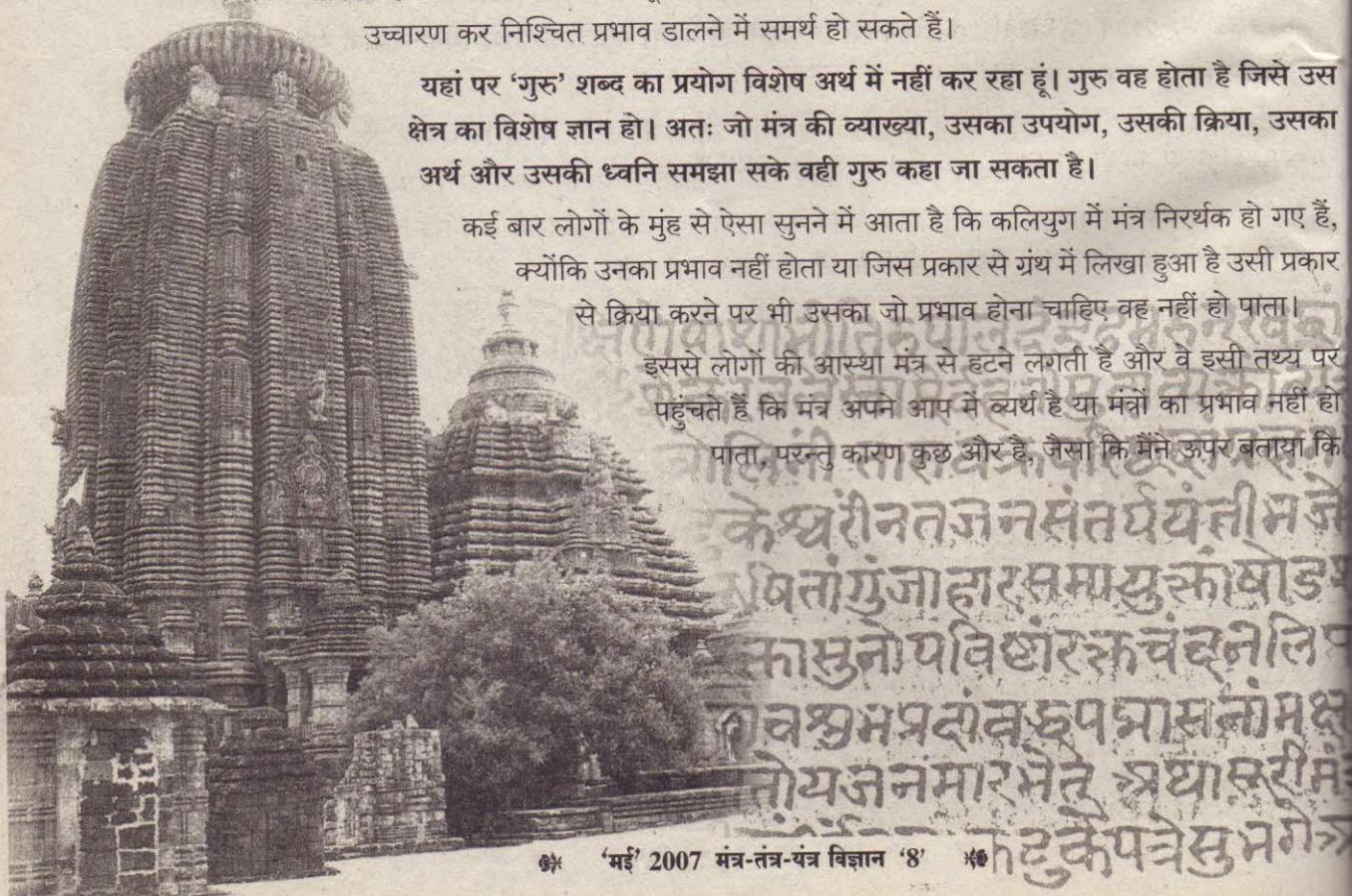
कई बार लोगों के मुंह से ऐसा सुनने में आता है कि कलियुग में मंत्र निरर्थक हो गए हैं,

क्योंकि उनका प्रभाव नहीं होता या जिस प्रकार से ग्रंथ में लिखा हुआ है उसी प्रकार

से क्रिया करने पर भी उसका जो प्रभाव होना चाहिए वह नहीं हो पाता।

इससे लोगों की आस्था मंत्र से हटने लगती है और वे इसी तथ्य पर पहुंचते हैं कि मंत्र अपने आप में व्यर्थ है या मंत्रों का प्रभाव नहीं हो

पाता, परन्तु करण कुछ और है, जैसा कि मैंने ऊपर बताया कि



मंत्र या शब्द अथवा उसका अर्थ अपने आप में बहुत अधिक महत्व नहीं रखता, अपितु उसकी ध्वनि विशेष महत्व रखती है, और मंत्र में जो चेतना मानी गई है, वह 'ध्वनि' ही है। यह ध्वनि पुस्तक के निर्जीव पृष्ठ नहीं बता सकते। इसके लिए गुरु की उपस्थिति अनिवार्य है क्योंकि वही मंत्र और मूल ध्वनि उच्चारण करके समझा सकता है।

अतः तब तक मंत्र और मंत्र-जप निरर्थक हैं जब तक कि उसकी ध्वनि का ज्ञान हमें नहीं हो जाता। यही नहीं, अपितु आवश्यकता इस बात की है कि ठीक उसी रूप में ध्वनि-उच्चारण होना चाहिए जो कि उस शब्द का मूल जीवन्त है। केवल मात्र उसी प्रकार से उच्चारण कर देना ही सब कुछ नहीं होता।

मंत्र की सत्ता अपने आप में सर्वोपरि है और इसका प्रभाव निश्चित और स्थायी होता है परन्तु दुःख इस बात का है कि धीरे-धीरे हमारी वर्तमान पीढ़ी मंत्र के महत्व को अस्वीकार करने लगी है, उसकी उपयोगिता से हम दूर हटने लगे हैं, हममें इतना धैर्य नहीं रह गया है कि हम सही गुरु की खोज कर सकें और उसके द्वारा मंत्र की मूल ध्वनि को प्राप्त कर सकें।

हमारा भारतवर्ष इस क्षेत्र में सर्वोपरि था, क्योंकि यहाँ के साधक और महर्षि अपने आप में मंत्रमय थे, उनका पूरा जीवन मंत्र और उनके रहस्य को समझने-समझाने में बीत जाता था। वे शिष्यों को अपने साथ रखकर उन्हें पुत्रवत् स्नेह देते थे और उन्हें मंत्र की मूल ध्वनि का ज्ञान कराते थे। यह परम्परा मौलिक रूप से बराबर आगे बढ़ती गयी, परन्तु मुगलकाल में इस पद्धति का हास हुआ और उस समय फारसी कलमा तथा इसी प्रकार के मंत्रों का प्रचलन बढ़ा, फलस्वरूप मूल मंत्र और उसके रहस्य समझने वाले महर्षि कम होते गए। इसके बाद जो रहा सहा वैभव था वह अंग्रेजों ने लगभग समाप्त कर दिया। यह विद्या ब्राह्मणों के पास पीढ़ी-दर-पीढ़ी चली आ रही थी, परन्तु जब ब्राह्मणों के पुत्रों ने अंग्रेजों की गुलामी और नौकरी करनी शुरू कर दी तो वे उसी रंग में रंग कर चोटी और यज्ञोपवीत से हाथ धो बैठे और मंत्र आदि विद्याओं को दकियानूसी कहने लगे।

कुछ समय बाद बहुत ही कम साधक ऐसे रह गए, जिन्हें मंत्रों का और उनकी ध्वनि का पूर्ण ज्ञान था। वे यह चाहते थे कि यह मौलिक परम्परा आगे भी जीवित रहे, परन्तु उसके पास सर्वथा अयोग्य शिष्यों की ही भरमार बनी रही जो कि चमत्कार में तो विश्वास करते थे परन्तु परिश्रम करने से जी चुराते थे। जो एक ही दिन में मंत्र मर्मज्ञ होना चाहते थे, उसकी ध्वनि या उनके स्वरूप को समझने का परिश्रम करना नहीं चाहते थे। ऐसी स्थिति में गुरु किंकर्तव्यविमूढ़ बन गया कि इन शिष्यों को किस प्रकार से ज्ञान दिया जाय, क्योंकि गुरु ज्ञान तो देना चाहता था, पर योग्य शिष्यों का ही अभाव हो गया था और वे उस विद्या को प्राप्त करने में सर्वथा अयोग्य और असमर्थ दिखाई देने लगे।

वर्तमान पीढ़ी ने मंत्र को रटे-रटाये तरीके से बोलने में ही पूर्णता समझ ली। आज भी ब्राह्मण के पुत्र को पन्द्रह, बीस, चालास मंत्र अवश्य कंठस्थ होंगे, परन्तु उसके लिये का धूम करत ही ज्ञान नहीं होगा। पुस्तकों के माध्यम से उसे कुछ देखा, आजीविका वृत्ति बनाने के जो कुछ देखा,

**नवकाञ्जननाकाह  
व्यापिशंगीजयविश्वा  
स्त्रांवरपरिष्ठेनारक  
युवतीयीन्वोलतप्त  
शितोंगुंजोहीरसंमोयु  
घरांसदासोम्यहष्टाध्यात्वात्तायज्जनमारभेत् श्रद्धास्त्रीमंत्रस्याद  
मौदालिख्यते उच्चार्या नदुकेपत्रेसुभग्नश्चास्त्री**

लिए उन मंत्रों को रट लिया और इस प्रकार से अपनी जीविकोपार्जन में सहायता प्राप्त कर ली। उनका मूल उद्देश्य पेट भरना रह गया। मंत्र के मूलस्वरूप को समझने में उनकी रुचि नहीं रही। इस प्रकार धीरे-धीरे इस विषय में जानकार कम होते गए। जिन महर्षियों को या साधकों को इनका ज्ञान था वह ज्ञान उनके साथ ही समाप्त हो गया। वे शिष्य की झोली में बहुत कुछ डालने के लिए लालायित थे परन्तु शिष्य की झोली ही जब फटी हुई थी तो गुरु क्या कर पाता? साथ ही साथ शिष्य में धैर्य और परिश्रम करने की भावना ही नहीं थी, तब गुरु अपने ज्ञान को दे ही कैसे पाता? और इस प्रकार मंत्र को समझने वाले साधकों का अभाव होता गया।

कुछ साधक अपने आपको समाज से तब अलग कर बैठे जब उन्होंने देखा कि हमारी उपयोगिता नहीं के बराबर रह गई है। मत्र या इसे सम्बन्धित व्यक्तियों को हेय दृष्टि से देखा जाने लगा है, समाज की भावना केवल मात्र यही रह गई है कि येन केन प्रकारेण धन-संचय किया जाय, इसके लिए चाहे कुछ भी करना पड़े। उनका सारा तत्र या कार्य केवल इसी बिन्दु पर केन्द्रित हो गया कि किस प्रकार ज्यादा से ज्यादा धन इकट्ठा किया जाय। ऐसी स्थिति में उन साधकों ने अपने आपको समाज से अलग कर दिया और पहाड़ में दूर एकान्त स्थान में अपनी साधना में रह गए, इस प्रकार उनका सम्पर्क समाज से टूट गया।

ऐसी स्थिति में पूरा समाज दिग्भ्रमित हो गया है। वह मंत्रों की महत्ता को स्वीकार करता है। वह चाहता है कि मंत्रों को समझा जाय और उसका उपयोग जीवन को सुखबमय बनाने के लिए किया जाय। इसके लिए वह साधुओं, संन्यासियों के चारों ओर चक्कर लगाता है, और वे नकली साधु या लम्बी-लम्बी जटाएं बढ़ाकर आंखों में ललाई लाकर इन्हें सब्ज बाग दिखाते रहते हैं कि तुम्हें मैं सब कुछ दे सकता हूं जबकि हकीकत में उनके पास कुछ है ही नहीं। जब उनके पास कुछ है ही नहीं तो वे दूसरों को क्या दे पाएंगे? उनके ठोकर खाने पर जब कुछ भी प्राप्त नहीं हो पाता, तब सामान्य मानव परेशान हो जाता है, मंत्रों पर से उनका विश्वास डिग्ने लगा है तथा साधु और संन्यासियों पर उसकी अनास्था पैदा हो गई है।

मंत्र शास्त्र की दृष्टि से पिछले पांच सौ वर्ष अंधकार के ही थे, जिसमें धीरे-धीरे इस विद्या का लोप होता गया। एक समय ऐसा भी आया जबकि सही गुरु प्राप्त होना हिमालय पर चढ़ाई करने के समान हो गया। आज नकली साधु, गुरु और सन्न्यासी तो गली कूचों में मिल जायेंगे, परन्तु इस क्षेत्र में सही जानकारी रखने वाले गुरु दस लाख में एक या दो ही होंगे।

जब प्रतिशत इतना कमजोर है तो यह सामान्य मानव के बस की बात नहीं रह गई है। जब भी वह इस प्रकार के लेख पढ़ता है या किसी साधु के चमत्कार की कहानियां सुनता है तो वह उस तरफ भागता है, परन्तु बदले में उसे कुछ भी नहीं मिल पाता।

आजादी के बाद इस भयावह

स्थिति पर भी

मात्रवहनोमुदाव्यक्ताव  
स्थानिकाधीलनी तारावक्रपरिषदाप्रह  
रिष्टेन्नारक्षामरणम्भवितांगुजाहारसमायुक्ताव  
चोन्नतयोधरा रक्षासुनोपविष्टंरक्षाचंद्रन  
जोहोरसमायुक्ताकानंवश्चभ्रमप्रदावद्धमप्राप्तं  
दासोम्पद्धथाध्यात्वाततोयजनमारभत् श्रद्धास  
द्वादि—०३ ‘मई’ 2007 मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान ‘10’ ०५  
—०६ लिंगोर्जनमः कटुकेपवेसु

विचार हुआ और यह आशंका बलवती हो गई कि यदि इसी प्रकार बना रहा तो एक समय ऐसा भी आ सकता है जबकि इस विद्या को जानने वाला एक भी व्यक्ति न रहे, अतः इस पर गहराई के साथ विचार किया गया और यह देख रहा हूं कि पिछले दस वर्षों में एक नई चेतना पैदा हो रही है जो कि लोगों का विश्वास पुनः मंत्र पर स्थापित करने में सफल रही है। जिनका विश्वास पूरी तरह से डगमगा गया था, उन्हें संबल मिला है। सामान्य मानव को अब यह विश्वास होने लगा है कि यह विद्या पूरी तरह से लुप्त नहीं हो गई है, क्योंकि जिन लोगों ने इस विद्या को जीवन्त बनाए रखने के लिए प्रयत्न प्रारम्भ किए हैं, वे समर्थ हैं, उन्हें मंत्रों का गहराई के साथ ज्ञान है।

मंत्र को समझने के लिए धैर्य की आवश्यकता होती है, क्योंकि मंत्र अपने आप में पूर्ण नहीं हैं अपितु उसके साथ जो क्रिया-पद्धति है वह मिल कर एक पूर्ण मंत्र का निर्माण करती है, जैसे आटा अपने आप में पूर्ण रोटी नहीं है अपितु आटे के साथ जिस प्रकार से पूरी क्रिया करने पर रोटी का निर्माण होता है तभी उससे भूख शांत हो सकती है, उसी प्रकार जब तक मंत्र और उसकी पद्धति का पूर्ण ज्ञान नहीं होता तब तक उससे पूरा लाभ नहीं उठाया जा सकता।

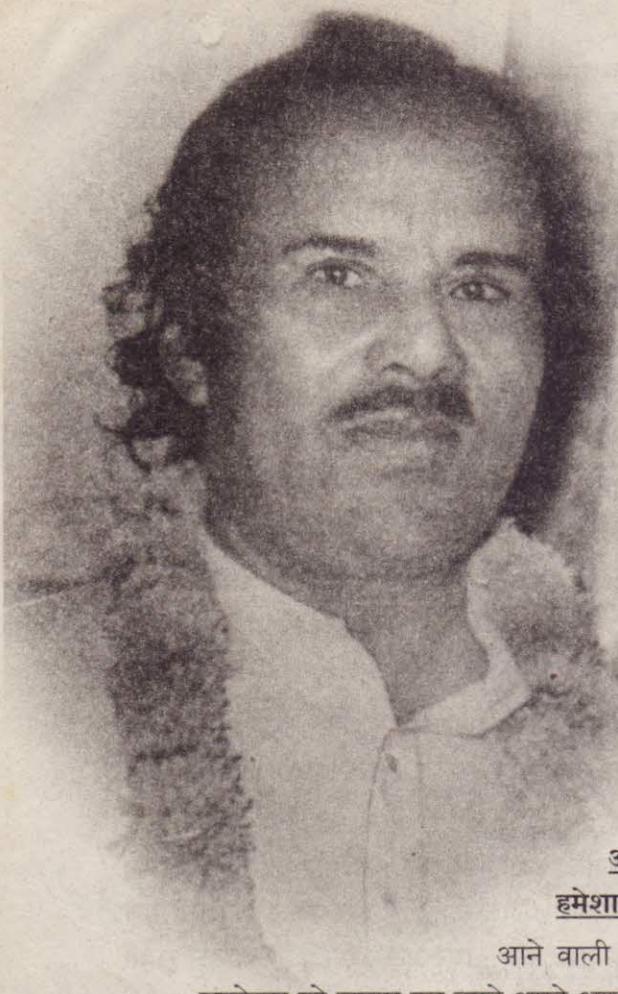
मुझे याद है कि कुछ वर्षों पूर्व केदारनाथ के पास एक साधु सम्मेलन हुआ था, जिसमें मुख्य रूप से उन साधुओं, साधकों एवं मंत्र अध्येताओं को निर्माण किया गया था जो इस क्षेत्र के पूर्ण जानकार थे। उसमें लगभग तीन सौ साधु महर्षि आदि इकट्ठे हुए थे, जो कि अपने आपमें वीतरागी थे, साधु थे, ऐसे व्यक्ति थे जो घर गृहस्थी से सर्वथा मुक्त थे और जिनका पूरा जीवन मंत्रों की शोध में ही व्यतीत हुआ था।

उस सम्मेलन में मैं भी उपस्थित था और मेरे गुरु भाई डॉ. श्रीमाली जी भी उपस्थित थे। मेरा उपस्थित होने का मूल कारण यह देखना था कि अब तक मंत्रों को जानने वाले कितने लोग शेष हैं और वे इस विद्या को आगे बढ़ाने के लिए कितने अधिक प्रयत्नशील हैं?

पर सम्मेलन में यह बात सामने आई कि धीरे-धीरे मंत्र और उसकी ध्वनि को सही रूप से समझने वाले लोग समाप्त हो रहे हैं और जिनके पास यह विद्या ही भी, वे पूरी तरह से समाज से कटे हुए हैं। इस प्रकार हमारा समाज इस प्रकार की उच्च विद्या से वंचित रह गया है और वह प्रागलों की तरह इधर-उधर भटक रहा है परन्तु उसे सच्चा साधु या सच्चा मंत्र मर्मज्ञ प्राप्त नहीं हो रहा है।

सम्मेलन की समाप्ति तक भी कोई ठोस निर्णय नहीं लिया गया। सबके मन में एक ही दुःख था कि योग्य शिष्यों की प्राप्ति नहीं हो रही है, जिन्हें यह ज्ञान दिया जा सके, साथ ही साथ यदि कोई शिष्य प्राप्त होता भी है तो वह परिश्रम करने से घबराता है और





इस प्रकार का एकाकी जीवन जीने का अभ्यस्त न होने के कारण थोड़े समय बाद ही भाग खड़ा होता है।

सम्मेलन में उन मंत्र मर्मज्ञों की मृत्यु पर भी दुःख प्रकट किया गया जो पिछले दो वर्षों में मृत्यु को प्राप्त हो गए थे। इस प्रकार धीरे-धीरे मंत्रों की वास्तविक ध्वनि और उसकी क्रिया को समझने वाले लोगों की समाप्ति हो रही थी और नये व्यक्ति तैयार नहीं हो रहे थे जो कि इस प्रकार की चेतना को और भारत की इस दुर्लभ विद्या को जीवित रख सकें।

सम्मेलन का निर्णय लगभग यही था कि ऐसी स्थिति में कुछ भी नहीं किया जा सकता और जो कुछ हो रहा है, वह ठीक ही हो रहा है। यदि प्रभु को यहीं मंजूर है तो इसके आगे क्या किया जा सकता है?

यह स्थिति एक प्रकार से कायरता की स्थिति थी। इस स्थिति को डॉ. श्रीमाली सहन नहीं कर सके। उन्होंने खड़े होकर कहा कि सम्मेलन जो भी निर्णय ले रहा है, यदि हकीकत में देखा जाय तो यह वास्तविकता से भाग्यने का निर्णय है। यदि सम्मेलन का यहीं निर्णय रहा तो भारतवर्ष के लिए यह अत्यन्त भयावह स्थिति होगी। और वह दिन दूर नहीं होगा जबकि इस पृथ्वी से मंत्र और उसकी ध्वनि हमेशा-हमेशा के लिए समाप्त हो जाएगी।

आने वाली पीढ़ी हमें और हमारे सम्मेलन को धिक्कारेगी कि कायरता के साथ सम्मेलन को समाप्त कर हमने अपने आपको मृत्यु के मुंह में डाल दिया। आने वाला समय हममें से किसी को भी क्षमा नहीं करेगा। आवश्यकता इस बात की है कि हम इस चुनौती को स्वीकार करें और एक ऐसी पीढ़ी का निर्माण करें जो कि इस प्रकार के ज्ञान से पूर्ण हो, जिनमें मंत्रों को सीखने, समझने और उनके प्रयोग में रुचि लेने की ललक हो और जो पूर्ण रूप से मंत्रों के प्रति समर्पित हो। वे युवक आगे आवें या ऐसे युवकों की खोज की जाय जो कि इस प्रकार के कार्य के लिए पूर्णतः समर्थ हों।

भारतवर्ष की भूमि नपुंसक नहीं है। साठ करोड़ जनता में कम-से-कम सौ युवक ऐसे प्राप्त हो सकते हैं जिन्हें परिश्रम करने की और मंत्रों को जीवित बनाए रखने की रुचि हो और सारे सुखों को त्याग कर इस क्षेत्र में कुछ कर गुजरने का हौसला रखते हों।

अपनी बात को समाप्त करते हुए डॉ. श्रीमाली जी ने कहा कि मुझे दुःख इस बात का हो रहा है कि हम रचनात्मक भूमिका निभाने की अपेक्षा कायरता की भूमिका निभाने की कोशिश कर रहे हैं। यदि आप इस बात के लिए कृतसंकल्प हों तो ऐसी कोई बात नहीं है, परन्तु आपने भगवे वस्त्र धारण करके इस बात का निश्चय कर लिया है कि अब आपका समाज से कोई सम्बन्ध नहीं रह गया है, यह एक प्रकार से पलायन की भूमिका है, संघर्ष से छुटकारा पाने का प्रयत्न है, कठिनाईयों से मुक्ति पाने की चाह है। आपके ये निर्णय किसी भी प्रकार से योग्य नहीं है और इस सम्मेलन के उपयुक्त तो सर्वथा ही नहीं हैं।

मैं इस बात के लिए भी दृढ़ संकल्प हूं कि चाहे मुझे कितना ही त्याग करना पड़े या चाहे मैं अकेला ही रह जाऊं फिर भी मैं इसी प्रयत्न में बराबर लगा रहूँगा कि यह विद्या सर्वथा लुप्त न हो जाय और इस विद्या की पूर्णता में किसी प्रकार की न्यूनता न आवे।

यह छोटा सा वक्तव्य अपने आपमें चुनौतीपूर्ण था और एक प्रकार से उस पूरे सम्मेलन पर थप्पड़ की तरह था

जिसने एक बार पुनः सही ढंग से सोचने के लिए मजबूर कर दिया। सम्मेलन के अधिकांश मंत्र मर्मज्ञ डॉ० श्रीमाली से परिचित थे और उनके कार्यों से तथा उनकी साधनाओं से तभी से परिचित थे जब वे गृहस्थ जीवन में थे। वे इस बात को जानते थे कि आज विश्व में मंत्र के क्षेत्र में स्वामी सच्चिदानन्द जी से उच्चकोटि का व्यक्ति नहीं है, वे सही रूप में युग पुरुष हैं, और मंत्र साधना आदि के क्षेत्र में सर्वोपरि हैं। उनका ज्ञान हिमालय से भी महान् है, मंत्र के क्षेत्र में और साधना के क्षेत्र में उनकी महत्ता निर्विवाद रूप से सभी स्वीकार करते हैं।

डॉ० श्रीमाली इस प्रकार की महान् विभूति के प्रमुख शिष्य हैं यह बात सभी को ज्ञात थी। वे सभी इस बात को अनुभव करते थे कि वास्तव में उनका शिष्य होना ही अपने आप में पूर्णता है। इस प्रकार की चुनौती वही व्यक्तित्व दे सकता है, जिसमें आग हो या जिसमें इस विषय की पूर्णता हो।

सम्मेलन के लगभग सभी साधु और महर्षि प्रसन्न थे कि जिस व्यक्ति ने इस चुनौती को सबके सामने रखा है वह अपने आप में एक सम्पूर्ण और समर्थ व्यक्तित्व है, मंत्र के क्षेत्र में आज भी उनकी राय को सबसे ऊंचा महत्व दिया जाता है। सम्मेलन के सभापति के रूप में उनका नाम निर्विवाद रूप से लिया गया था, परन्तु यह उनकी ही विनम्रता थी कि उन्होंने अस्वीकार करते हुए सामान्य मंत्र शास्त्री के रूप में ही भाग लेने का निश्चय किया था।

सभी ने एक प्रकार से हृष्ठधनि की और उनकी अभ्यर्थना करते हुए एक मत से प्रस्ताव पास किया कि आज के युग में परमहंस स्वामी सच्चिदानन्द के प्रमुख शिष्य डॉ० श्रीमाली मंत्र के क्षेत्र में निर्विवाद रूप से सर्वश्रेष्ठ व्यक्तित्व हैं और एक प्रकार से उन्हें 'मंत्र-पुरुष' कहा जाए तो कोई अत्युक्ति नहीं होगी।

सम्मेलन को प्रसन्नता है कि उन्होंने इस गंभीरता को समझा है और इस विद्या को समाज से जोड़ने में रुचि ली है, सम्मेलन को विश्वास है कि यह विद्या भारतवर्ष से विलुप्त नहीं हो सकेगी। और आने वाली पीढ़ियां डॉ० श्रीमाली की आभारी रहेंगी कि उनके प्रयत्नों से मंत्रों की मूल ध्वनि और उनकी क्रिया जीवित रह सकी है।

इस प्रस्ताव के साथ ही सम्मेलन समाप्त हो गया।

डॉ० श्रीमाली जी को मैं तब से जानता हूं जब वे यायावर जीवन में थे। वे गृहस्थ होते हुए भी पूर्णतः साधु थे और उन्होंने गृहस्थ के अनन्य पथ को इसीलिए छोड़ दिया था जिससे कि उन साधुओं और महर्षियों के सम्पर्क में आकर उस ज्ञान को प्राप्त किया जा सके, जो कि वास्तव में उच्चकोटि का है और जिस ज्ञान की वजह से ही भारत पूरे विश्व में सम्मानित है।

इस प्रकार के साधु जीवन के रूप में लगभग सत्रह वर्ष रहे और इन वर्षों में उन्होंने जो कुछ प्राप्त किया वह भारत और विश्व से छिपा हुआ नहीं है। इन वर्षों में वे उन सभी लोगों के सम्पर्क में आए जिनके पास इस प्रकार का थोड़ा बहुत भी ज्ञान था। वे कई साधुओं के पास रहे और उनसे उन सभी प्रकार की विद्याओं को सीखने का प्रयत्न किया जो कि वास्तव में ही दुर्लभ थी और यह उनका सौभाग्य था कि उन्हें इस प्रकार के साधु मिलते गए जो कि वास्तव में अपने क्षेत्र में उच्चकोटि के थे।



सबसे बड़ी उपलब्धि परमहंस स्वामी सच्चिदानन्द जी की शिष्यता प्राप्त करना है, जो साधना के क्षेत्र में हैं वे परमहंस के नाम से सुविख्यात हैं और वे ही इस बात को अनुभव कर सकते हैं कि उन तक पहुंचना ही हिमालय को लांघने के बराबर है या जीवन में उनके दर्शन उच्चकोटि के पुण्य संवरूप माना जाता है, तब उनसे शिष्यत्व प्राप्त कर लेना अपने आप में उच्चकोटि का भाग्य है। विश्व में मात्र तीन ही शिष्य उनके माने जाते हैं जिनको उन्होंने विधिवत् दीक्षा दी है।

यह बात इसका प्रमाण है कि डॉ०श्रीमाली ने इस स्तर को प्राप्त करने के लिए कितना अधिक प्रयत्न किया होगा, कितना कष्ट उठाया होगा और इस स्तर को प्राप्त करने के लिए कितना कठोर संघर्ष किया होगा? सुना है कि किसी को शिष्य बनाते ही नहीं, क्योंकि उनकी शिष्य बनाने की परीक्षा इतनी कड़ी और कठोर है कि उस परीक्षा को पास करना सामान्य जीवन में संभव नहीं है। आज भी साधक मंत्र या साधना कार्य को प्रारम्भ करने से पूर्व मन-ही-मन स्वामी सच्चिदानन्द जी का स्मरण करते हैं जिससे कि वे अप्रत्यक्ष रूप से उपस्थित होकर सहायक हो सकें।

पिछले हजार वर्षों में केवल तीन शिष्य बनाना ही इस बात का प्रमाण है कि उनका चयन कितना कठिन है किस प्रकार से वे उनकी परीक्षा लेते हैं। साधना के क्षेत्र में उनका शिष्य होना ही अपने आपमें पूर्णता माना जाता है, मेरे कथन की गंभीरता केवल वे व्यक्ति समझ सकते हैं जो कि साधना क्षेत्र में है इस प्रकार की क्रिया से परिचित है।

डॉ०श्रीमाली जी का जीवन एक ही कार्य को पूर्णता देने के लिए नहीं बना है। कई बार मैं आश्चर्यचकित रह जाता हूँ कि एक ही व्यक्तित्व इतने अधिक कार्यों का बोझ किस प्रकार से संभाल लेता है? किसी एक विद्या में पूर्णता प्राप्त करने के लिए ही जब पूरा जीवन खप जाता है तो किस प्रकार से उन्होंने कई विद्याओं में पूर्णता प्राप्त की है और उन सभी विद्याओं में वे उस स्तर पर हैं जो कि अपने आपमें अन्यतम है।

ज्योतिष के क्षेत्र में उनकी महत्ता निर्विवाद रूप से स्वीकार की जाती है। इस क्षेत्र में उन्होंने उन सभी आयामों को पूर्णता दी है जो कि इस से सम्बन्धित हैं। सामुद्रिक शास्त्र, अंक शास्त्र, मुखाकृति विज्ञान आदि क्षेत्र में उन्होंने ग्रन्थ की रचना की है, तथा ज्योतिष के गणित और फलित पक्ष में उनकी मान्यता पूरे भारतवर्ष में निर्विवाद रूप से स्वीकार की जाती है।

इसके अलावा आयुर्वेद का उन्हें अन्यतम ज्ञान है, यद्यपि इस विद्या से अभी सामान्य जन परिचित नहीं है, परन्तु उन्होंने इस क्षेत्र में जो कुछ प्राप्त किया है वह अपने आप में अन्यतम है। तंत्र के क्षेत्र में उनकी महत्ता को सभी स्वीकार करते हैं, मंत्र के क्षेत्र में स्वामी सच्चिदानन्द जी का शिष्य होना ही इस बात का प्रमाण है कि पूरे सम्मेलन में उपस्थित साधुओं का ज्ञान भी उस अकेले व्यक्तित्व के ज्ञान से न्यून है, क्योंकि उन्हें सभी प्रकार के मंत्रों का पूर्ण ज्ञान है और उसकी मूल धृति और क्रिया का विधिवत् अभ्यास है।

वे मूलतः सरल गृहस्थ हैं, और गृहस्थ

कास्तपक्षात्यात्मी तारावक्षपाठसम्पूर्ण  
त्रिभाण्डंकादुकेष्वरीनतज्जनसंपूर्यनीजनेत  
रस्तामरणाभ्यवतांगुजाहारसम्पूर्णयाडशाद  
तंयोधरां रस्तासुनोपविद्यांस्त्रिविनिपात्र  
योयुक्तोस्तानांचश्चभ्रतांवद्यन्तनंमक्षम  
आध्यात्मिकोंतोयजनमान्तर्यामीमूर्तिमेव

४५ मई 2007 मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान '14'

कुशलता के साथ संचालन कर रहे हैं। पूरे दिन जिस प्रकार से वे व्यस्त रहते हैं उसको अनुभव करके आज भी मैं सोचने के लिए बाध्य हो जाता हूं कि ऐसी कौन-सी जीवट शक्ति है, जो कि उन्हें इतना श्रम करने के लिए उत्साहित करती रहती है।

डॉ० श्रीमाली से मेरा परिचय एक संयोग के रूप में हुआ था। यद्यपि आयु में उनसे चार-पांच वर्ष बड़ा हूं परन्तु ज्ञान के क्षेत्र में उनकी महत्ता को निर्विवाद रूप से स्वीकार करता हूं।

मेरा उनका परिचय एक संयोग ही था और मैं सोचता हूं कि यह संयोग मेरे लिए अत्यन्त सुखदायक रहा है, उस समय मैं भी साधु जीवन में था और आज भी मैं साधु जीवन में ही हूं। बचपन से ही मैंने यह निश्चय कर लिया था कि मुझे विवाह नहीं करना है और अपना सारा जीवन योग्य गुरु की खोज में बिता देना है जिसके सान्निध्य में बैठकर मैं ज्ञान के उन आयामों का स्पर्श कर सकूं जो कि अपने आप में उच्चतर रहे हैं।

मैं अपने जीवन में एक जगह बहुत कम टिका हूं, भटका ज्यादा हूं और इसी भटकते हुए जीवन में जो भी अनुभव हुए हैं वे अपने आप में अलग हैं परन्तु मैं इस बात को स्वीकार करता हूं कि मैं अपने जीवन में जितना और जो कुछ प्राप्त करना चाहता था वह प्राप्त नहीं कर पाया हूं, जबकि मेरे जीवन का लक्ष्य मंत्र-तंत्र के क्षेत्र में उच्च भावभूमि का स्पर्श करना था।

उस समय मैं बद्रीनाथ से पन्द्रह किलोमीटर दूर भृकुण्डी आश्रम में था और वहां स्वामी प्रवृज्यानन्द जी के सान्निध्य में मंत्र साधना सीख रहा था। उनके पास रहते हुए मुझे लगभग तीन वर्ष हो चुके थे और मैं यह अनुभव कर रहा था कि स्वामी प्रवृज्यानन्दजी मंत्र के क्षेत्र में सिद्धहस्त हैं और उन्हें सैकड़ों प्रकार के मंत्र तथा उनकी क्रियाओं का ज्ञान है।

उन्हीं दिनों की बात है एक दिन प्रातः काल जब मैं स्नान कर वापस लौट रहा था तो मुझे आश्रम के बाहर एक युवक साधु दिखाई दिया जो अत्यन्त ही आकर्षक और प्रथम बार में ही हृदय पर गहरी छाप छोड़ देने वाला व्यक्तित्व लिये हुए था। सामान के नाम पर उसके पास कुछ नहीं था, शरीर पर मात्र भगवे वस्त्र धारण किए हुए थे।

परन्तु उसकी आंखों में एक विशेष प्रकार की चमक थी। कुछ ऐसा लग रहा था जैसे उसकी आंखों में एक अतृप्त प्यास हो, एक ऐसी इच्छा हो जो कि अभी तक शांत नहीं हुई हो। जीवन को एक विशेष ढंग से जीने की चाह हो। कुल मिलाकर उसका व्यक्तित्व अपने आप में आकर्षक था और ऐसा लग रहा था जैसे यह व्यक्तित्व अपने आप में एक सशक्त अभिव्यक्ति है जिसके रोम-रोम में महानात्मा स्पष्टतः अनुभव हो रही थी। मैं जब कुटिया के पास पहुंचा तो वे एकटक खड़े मुझे आते हुए एकाएक देख रहे थे। मैं जब पास पहुंचा तो उन्होंने शांत गंभीर स्वर से प्रश्न किया कि क्या स्वामी प्रवृज्यानन्द जी का आश्रम यही है?

मैंने स्वीकृति में गर्दन हिलाई तो उन्होंने  
दूसरा प्रश्न किया कि क्या  
स्वामीजी



कुटिया के अन्दर विद्यमान हैं और क्या मैं उनसे इस समय भेट कर सकता हूँ?

मैंने जब उनका नाम पूछा तो उन्होंने दार्शनिक भाव से उत्तर दिया कि मिट्टी के एक कण को किसी भी नाम से पुकारा जाय इससे उस मिट्टी के कण में कोई अन्तर नहीं आता। मेरा जीवन भी इस ज्ञान के क्षेत्र में मिट्टी के कण के समान है, इसलिए इसको किसी विशेष संज्ञा से सम्बोधित करना आवश्यक नहीं है, यों यदि आप चाहें तो मुझे नारायण के नाम से सम्बोधित कर सकते हैं।

पहली बार में ही उनके उत्तर ने मेरे मन पर गहरी छाप छोड़ी। मैंने अनुभव किया कि यह व्यक्तित्व आयु में भले ही कम हो परन्तु इसके अन्दर ज्ञान की गरिमा है, वह अपने आप में उच्चतर है क्योंकि इसकी वाणी में एक विशेष चुम्बकीय शक्ति है, इसकी बातचीत में एक विशेष लोच है, जिससे सामने वाले व्यक्ति को प्रभावित किया जा सकता है। इसके सारे शरीर में एक ऐसा आकर्षण है जिसे बार-बार देखने की जी चाहता है और बातचीत के बाद ऐसा लगता है कि जैसे इससे बार-बार मिला जाय, बातें की जायें और इनके पास ज्ञान का जो भी सागर है, उसमें अवगाहन किया जाए।

मैंने अन्दर जाकर स्वामी जी को नवागन्तुक के आने की सूचना दी तो उन्होंने अन्दर आने की स्वीकृति दे दी। मैंने नवागन्तुक को स्वामी जी के मन्त्रव्य से परिचित कराया तो वे कुटिया के भीतर आकर स्वामी जी के सामने बैठ गये।

स्वामी जी ने जब उन्हें अपना परिचय और आने का कारण पूछा तो नवागन्तुक ने मुंह से कुछ भी न कहकर योग मुद्राओं से अपनी सारी बात स्पष्ट की और अपना नाम, अपना उद्देश्य और अपने आने का कारण योग मुद्राओं के माध्यम से व्यक्त किया। जब नवागन्तुक ने अपनी सारी स्थिति स्पष्ट कर दी तो स्वामी जी की आँखों में एक



आश्चर्यजनक हृष्ट की लहर दौड़ गई। उन्हें यह विश्वास हो गया कि आने वाला व्यक्ति सामान्य साधु नहीं है अपितु एक उच्च भावभूमि पर खड़ा हुआ व्यक्तित्व है जिसने साधना के क्षेत्र में काफी ऊंचे स्तर का स्पर्श किया है, क्योंकि इस प्रकार की योग मुद्राओं के माध्यम से अभिव्यक्ति वही दे सकता है जो कि साधना के क्षेत्र में उच्च धरातल पर स्थित हो और जिसकी कुण्डलिनी पूर्ण रूप से जाग्रत हो। स्वामी जी ने पास बैठे हुए नवागन्तुक को अपने पास खींचकर सीने से भींच लिया, उनकी आंखों से हृष्ट के आंसू बह निकले और विगलित कंठ से कहा कि मैं जिस प्रकार के व्यक्तित्व की कल्पना करता था या मेरे मन में जिस प्रकार के साधक से मिलने की चाह थी तुम ठीक वैसे ही हो।

प्रकार के साधक से मिलने की चाह थी तुम ठीक वैसे ही हो।

निश्चय ही तुमने साधना के क्षेत्र में बहुत कुछ ज्ञान प्राप्त किया

है और मैं इस समय अपने तीसरे नेत्र से जो कुछ देख रहा

हूं, वह अपने आप में अन्यतम है।

परो रक्तासुना पविष्ठां रक्तचब्दलिपां  
नां वृषभप्रदं वृषभप्रासनां मक्षम  
नां दालिख्यते अप्यात्मात् तोयजनं मारभेत् श्रद्धास्त्रीमेति

इस पूरी क्रिया में मैं आश्चर्यचकित होकर उन दोनों को देख रहा था। मैं स्वामी जी के पास लगभग तीन वर्ष से था परन्तु यह पहला अवसर था, जब मैंने अनुभव किया कि बिना जुबान के भी बात हो सकती है और इस प्रकार की बातचीत वही कर सकता है जो कि इस क्षेत्र में श्रेष्ठ स्तर पर पहुंचा हुआ हो।

मैंने देखा कि आयु में मुझसे छोटा होते हुए भी यह जो आया है, वह ज्ञान के क्षेत्र में अनुपम है तथा मुझे अपनी विशेष इन्द्रिय या विशेष साधना से यह भी आभास हो गया कि यह मंत्र के क्षेत्र में जिज्ञासु अवश्य है परन्तु साधना के क्षेत्र में विशेष स्तर पर है। यह ऐसा व्यक्तित्व है, जिसे यदि मंत्र साधना का ज्ञान कराया जाय तो वह पूर्ण क्षमता के साथ स्वीकार कर सकता है।

इसके साथ-ही-साथ उन्होंने भविष्यवाणी भी की कि यह व्यक्तित्व अपने आप में अद्भुत और विशेष महिमामण्डित है, क्योंकि आने वाला समय इसका है। यह अपने कार्यों से, अपने विचारों से पूरे देश में एक नई क्रांति लाने में समर्थ हो सकेगा और यही एक ऐसा व्यक्तित्व है जिसके द्वारा भारतवर्ष की मूल्यवान विद्याएं पुनर्जीवित हो सकेंगी। यह व्यक्तित्व अपने लेखन से उन विद्याओं को युगों-युगों तक जिन्दा रखने में समर्थ हो सकेगा और उन सभी विद्याओं में यह अग्रण्य माना जाएगा।

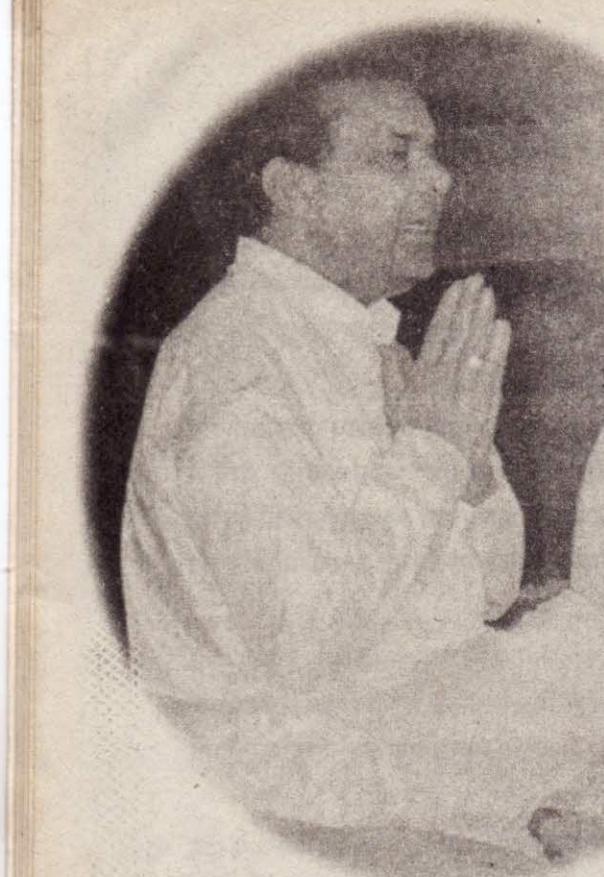
उन्होंने यह भी भविष्यवाणी की थी कि मैं इस व्यक्तित्व में बहुत ऊँची साधना पद्धति और ज्ञान के अत्यन्त उच्च क्षेत्र को देख रहा हूं। मैं देख रहा हूं कि निकट भविष्य में ही इसको ऐसा गुरु मिलने वाला है जो विश्व में सर्वोपरि है और जिसका शिष्य होना ही अपने आप में गौरवशाली घटना होगी। आने वाला समय इस व्यक्तित्व का है जो अपने जीवन में ऐसा कार्य कर सकेगा जिससे आने वाली पीढ़ियां इसकी क्रृणी रहेंगी।

मैं यह सब आश्चर्यचकित होकर सुन रहा था। कुटिया के बाहर जब इस व्यक्तित्व को देखा था तो मैंने इसे एक सामान्य व्यक्तित्व या साधारण साधु समझा था जो कि भटकता हुआ इधर आ गया हो, परन्तु अब जबकि मैं अपने गुरु के मुंह से इस प्रकार की भविष्यवाणी सुन रहा था तो मेरा सिर स्वयं ही इस व्यक्तित्व के सामने मन ही मन झुक गया।

स्वामी जी के स्थिरचित्त होते ही नारायण ने विनम्रतापूर्वक कहा कि “आप जो मेरे बारे में कह रहे हैं यह मेरे लिए आशीर्वाद के रूप में है। इस समय तो मैं एक सामान्य रजकण ही हूं परन्तु यदि आप जैसे महर्षि का मुझ पर आशीर्वाद रहा हो निश्चय ही मैं आपकी वाणी को, आपके आशीर्वाद को सत्य सिद्ध करके दिखाने का प्रयत्न करूँगा।”

“इस समय मैं आपके सामने एक बालक की तरह उपस्थित हूं और मैंने यह अनुभव किया है तथा वायकी साधना के माध्यम से ज्ञात किया है कि मंत्र के क्षेत्र में आप एक महान विभूति हैं, मंत्रों की मूल भावना को आपने संजोकर रखा है। मैं इस ज्ञान में से यदि कुछ पाने का अधिकारी हूं तो मैं आपसे नम्रतापूर्वक प्रार्थना करता हूं कि आप मुझे उन मंत्रों का ज्ञान दें जो अब तक दुर्लभ रहे हैं। मुझे उन स्वरों को तथा मंत्रों की





ध्वनि को समझाने का विचार करें जो कि अपने आप में मूल रूप से रही हैं, मैं आपके सात्रिध्य में कुछ समय बिताने का इच्छुक हूं और आपके चरणों में बैठकर ज्यादा सीखने की इच्छा रखता हूं।”

मैंने देखा कि महान्-व्यक्तित्व होते हुए भी इनमें घमण्ड का नामो निशान तक नहीं था। इनके मुंह से जो भी बात निकल रही थी उसमें कहीं से भी कृत्रिमता नहीं थी, उसके सारे वाक्य हृदय से निकले हुए थे इसलिए सीधे प्रभ्राव डालने में समर्थ थे।

स्वामी जी ने कहा, “यह मेरा सौभाग्य है कि तुम मेरे पास रहने की इच्छा प्रकट कर रहे हो, अब यदि मृत्यु भी आ जाएगी तो मुझे किसी प्रकार की चिन्ता नहीं रहेगी, क्योंकि मैं स्वयं इस प्रकार के शिष्य की खोज में था जिसे मैं अपना सारा ज्ञान दे सकूँ, अपने हृदय के जमृत सिंचन से उसे आप्लावित कर सकूँ। अब मुझे निश्चिन्त होकर रहना है, क्योंकि अभी तक मैं इस चिन्ता में था कि मेरे पास जो ज्ञान है वह मैं किस प्रकार से कहां देकर जाऊँ? ऐसा कोई योग्य शिष्य मुझे नहीं मिल सका था जिसे पाकर मैं पूर्णरूप से आश्वस्त हो सकूँ।

आज तुम्हें पाकर मैं अपने आपको गौरवान्वित अनुभव कर रहा हूं, क्योंकि मेरी वायवी साधना यह कह रही है कि वही वह व्यक्तित्व है जो मेरे ज्ञान को आगे के समय में अक्षुण्ण रख सकेगा। यही व्यक्तित्व मंत्रों के मूल रहस्य को समाज के सामने स्पष्टता के साथ प्रदर्शित कर सकेगा। अतः तुम्हें पाकर वास्तव में मैं निश्चिन्तता अनुभव कर रहा हूं। तुम यहां सानन्द रहो और मैं अपने सारे ज्ञान को तुम्हारे हृदय में उड़ेलने के लिए उत्सुक हूं।”

स्वामी जी ने मुझे पास की कुटिया में स्थान प्रदान किया तथा नवागुन्तक के रहने, आदि की व्यवस्था के लिए आज्ञा दी और कहा कि यह मंत्र के क्षेत्र में भले ही प्रार्थी है, परन्तु तंत्र, आयुर्वेद, साधना आदि के क्षेत्र में अत्यन्त ही उच्च धरातल पर स्थित है, अतः इससे यदि तुम कुछ प्राप्त कर सकोगे तो यह तुम्हारा सौभाग्य ही होगा।

बातचीत समाप्त करते-करते स्वामी जी उठ खड़े हुए। वे मध्याह्न स्नान के लिए नदी तट पर जाने के लिए उद्यत थे। मैं नवागन्तुक को लेकर पास वाली कुटिया में आ गया और उनके रहने आदि की व्यवस्था में जुट गया।

लगभग दो महीने उसी आश्रम में मुझे श्रीमाली जी के साथ रहने का सौभाग्य मिला और मैंने देखा कि इस व्यक्तित्व में सीखने की जितनी चाह है उतनी शायद ही किसी व्यक्ति में हो। परिश्रम करने की अपूर्व क्षमता है और प्रत्येक क्षण का उपयोग करने की भावना इनके मन में बराबर बनी रही है।

इतना होते हुए भी सुविधा के नाम पर कोई विशेष इच्छा इनके मन में नहीं थी। मैंने जब पहली ही रात बिस्तर का प्रबन्ध किया तो मुझे बताया कि मैंने बिस्तर पर सोना छोड़ दिया है और मात्र घास के पुआल पर ही सोता हूं, शाम को जब वे नदी में स्नान करके वापस लौटे तो अपने साथ कुछ घास काटकर लेते आये थे वही उस कुटिया में एक तरफ कोने में बिछा दी जो कि उनका बिस्तर बन गया था।

उनकी दिनचर्या निश्चित बंधी हुई थी। प्रातः तीन बजे के लगभग उठ जाते और स्नान आदि से निवृत्त होकर अपनी व्यक्तित्व साधना में रत हो जाते, लगभग छः बजे अपनी दैनिक पूजा सन्ध्या आदि से निवृत्त होकर गुरु की कुटिया में पहुंच जाते और उस समय जबकि गुरु स्वामी प्रवृत्यानन्द जी नदी तट पर प्रातः सन्ध्या में व्यस्त होते, तब तक वह व्यक्तित्व उनकी कुटिया को अपने हाथों से साफ करता और पानी से उसे धोकर पवित्र सा बना देता, इसके साथ-ही-साथ गुरु के कपड़ों को भी साफ करने का उपक्रम करना प्रातः कालीन नियम सा बन गया था।

लगभग आठ बजे से मंत्र दीक्षा प्रारम्भ हुई और पहली ही बार में उनको जो कुछ बताया गया उसे पूर्ण क्षमता के

साथ स्वीकार कर लिया। जहां तक मुझे याद है दूसरी बार बताने की आवश्यकता उन्हीं कभी नहीं रही। मंत्रों को सिद्ध करने की उनकी चाह चरम सीमा पर थी और जब तक मंत्र सिद्ध नहीं हो जाता तब तक न तो उन्हें भूख की चिन्ता रहती और न विश्राम की आवश्यकता ही अनुभव होती। उनको एक ही धुन लग जाती कि जैसे भी हो, इस मंत्र को पूर्णता के साथ सिद्ध करना है तथा सिद्ध करने के बाद जब उसे प्रयोगात्मक रूप से सफल देखते तभी उन्हें निश्चिंतता होती। मंत्रों के प्रति इतना समर्पण भाव मैंने पहली बार देखा था।

उस एक महीने में ही उनकी कार्य पद्धति को देखकर मैं आश्चर्यचकित था, उनके जीवन का ध्येय केवल मात्र गुरु सेवा और मंत्र साधना ही रह गया था। मंत्र साधना के बाद जो भी अवसर मिलता वह गुरु सेवा में ही व्यतीत होता, क्योंकि श्रीमाली जी के अनुसार गुरु सेवा ही मंत्र की पूर्णता में सहायक है। जब तक हृदय से गुरु का आशीर्वाद प्राप्त नहीं होता तब तक मंत्र में पूर्णता संभव ही नहीं है।

एक बार चर्चा के दौरान डॉ श्रीमाली ने बताया था कि मुझे गुरु सेवा करने से अपूर्व आनन्द की प्राप्ति होती है। जब मैं गुरु चरणों को अपनी जंघा पर रखकर सहलाता हूं तो मुझे ऐसा अनुभव होता है जैसे मैं साक्षात् अपने इष्ट की साधना कर रहा हूं, उस समय किसी प्रकार का व्याघात मुझे सहन नहीं होता। मेरे लिए गुरु-सेवा से बढ़कर और कोई आनन्द की बात नहीं है, मैं चाहे कितना ही थक जाऊं परन्तु यदि मुझे कुछ क्षण ही सही, गुरु के चरण दबाने को मिल जाय तो मेरी सारी थकावट दूर हो जाती है और मैं अपने हृदय में एक विशेष प्रकार का आनन्द, जोश और उमंग अनुभव करने लग जाता हूं।

गुरु के प्रति ऐसी निष्ठा मैंने पहली बार देखी थी। यद्यपि मैं लगभग तीन वर्षों से उस आश्रम में था। परन्तु तब मैंने पहली बार अनुभव किया कि गुरु-सेवा में मैं कितना अनाड़ी हूं। मैंने केवल मात्र गुरु के कार्य को ही पूर्ण सेवा मान ली थी, जबकि श्रीमाली जी उमंग के साथ और हृदय के आनन्द के साथ गुरु-सेवा को अपने जीवन का अंग मान रहे थे। उन्हें इस प्रकार के कार्य में एक विशेष आनन्द की अनुभूति होती थी जो कि उस समय उनके चेहरे से स्पष्ट इलकती थी। ऐसी एकनिष्ठता होने पर गुरु किस प्रकार न्यूनता बरत सकता है?

श्रीमाली जी अपनी धुन के पक्के हैं। एक बार वे जिस निश्चय को कर लेते हैं उसे जब तक पूरा नहीं कर लेते उनके मन में चैन नहीं आता। उस आश्रम में भी मैंने उनके इसी व्यक्तित्व के दर्शन किए थे। मैं दिन भर मंत्र साधना सीखता था, परन्तु रात को दस-ज्याहर बजे के लगभग थक कर सो जाता था, परन्तु उस समय भी मैं श्रीमाली जी को एक ही आसन पर स्थिर चित्त बैठ हुए देखता और जब प्रातःकाल तीन बजे मेरी आंख खुलती तब भी उन्हें उसी आसन पर उसी प्रकार से स्थिरचित्त एक ही आसन पर बैठे हुए देखता। दूसरे दिन भी उनके चेहरे पर किसी प्रकार की थकावट के चिह्न दृष्टिगोचर नहीं होते। मैं सोचता कि इस

व्यक्तित्व में ऐसी कौन-सी जीवट शक्ति है, जिसके बल पर इस

मृत्युको इतना परिश्रम करने पर भी थकावट नहीं आयी और हर

समय अपने आपको तरोताजा बनाए रखता है।

स्वेकजजननीकास्पक्ष्योलिती त

व्यापिशंगीजयविभ्राणंदादुकेश्वरी

स्त्रांवरपरिष्ठेन्नारस्त्रामरणम्भूषितांगुल

युवतीपीचोलतंयोधरो रस्तासुने

षितांगुंजाहोरसंमायुक्तोस्तानंवश्चमध्य

धर्मसद्वासोप्यदृष्ट्यात्कात्तोयजनम्

मैदालिख्यते उंच्चाम्पात्

मैंने अनुभव किया था कि उनमें सीखने की विशेष चाह है, उनका मुख्य जोर इस बात पर था कि मंत्र की मूल आत्मा को और उसके रहस्य को समझा जाय। मैंने उन्हें कभी भी डायरी पर या पन्नों पर कुछ अंकित करते हुए नहीं देखा। उन्हें एक बार सुनकर ही मंत्र पूरी तरह से याद रहता था और स्वामी प्रवृत्त्यानन्द जी जिस प्रकार से उसके रहस्य को बताते थे उसी प्रकार से वे उस मंत्र की साधना में संलग्न हो जाते थे। मैंने देखा कि वे प्रत्येक क्षण को पूर्ण तन्मयता के साथ जीते हैं। उस क्षण का उपयोग करने की कला का उन्हें ज्ञान है।

उस आश्रम में डॉ० श्रीमाली जी लगभग तीन महीने तक रहे। यद्यपि पहले वे मात्र दो महीने ही रहने के लिए आए थे, परन्तु स्वामी जी के आग्रह पर वे एक महीने और रुक गये और इन तीन महीनों में उन्होंने जितना और जो कुछ प्राप्त किया वह अपने आप में अन्यतम है। जहां तक मुझे स्मरण है उन तीन महीनों में उन्होंने एक भी क्षण व्यर्थ नहीं खोया था। प्रत्येक क्षण मंत्र साधना में लगे रहते और गुरु मुंह से मंत्र की मूल ध्वनि समझ कर उसी ध्वनि को जीवन्त बनाने का उपक्रम करते। मैं देखता कि जब श्रीमाली जी उसी मूल ध्वनि को वास्तविक रूप से उच्चारण करते तो स्वामी जी का चेहरा खिल उठता। कई बार बातचीत के दौरान उन्होंने कहा कि इस मूल ध्वनि को पकड़ना ही कठिन है, परन्तु नारायण पर सरस्वती की विशेष कृपा है, जिससे कि यह पहली ही बार मैं उस मूल ध्वनि को आत्मसात कर पुनः दोहरा देता है।

इन तीन महीनों में लगभग सभी प्रकार के मंत्रों को उन्होंने सीखा और उनकी क्रिया पद्धति का ज्ञान प्राप्त किया। यही नहीं अपितु क्रियात्मक रूप से भी उन्होंने उन मंत्रों की साधना सम्पन्न कर उन्हें वास्तविक कसौटी पर कसकर अनुभव भी किया।

तीन महीने के बाद एक दिन प्रातः स्वामी जी ने कहा कि मेरे पास जो कुछ भी ज्ञान था वह मैं तुम्हें दे चुका हूं, मुझे अब निश्चिंतता प्राप्त हो गई है, क्योंकि मेरे पास जो भी ज्ञान था वह मैं तुम्हें पूर्णता के साथ दे सका हूं और इससे भी ज्यादा प्रसन्नता इस बात की है कि तुमने पूर्ण क्षमता के साथ उस ज्ञान को ग्रहण किया। अब मैं यदि मृत्यु को भी प्राप्त करता हूं तो मेरे मन में किसी प्रकार का विषाद या दुःख नहीं रहेगा - और कहते कहते स्वामी जी की आंखें भीग गर्यीं।

स्वामी जी ने कहा कि आज सोमवार है, गुरुवार को मैं तुम्हें मंत्र दीक्षा दूंगा और उसी दिन चाहो, तुम प्रस्थान कर सकते हो, क्योंकि आने वाले समय में तुम्हें एक विशेष महिमा-मण्डित व्यक्तित्व मिलेगा। एक ऐसा गुरु तुम्हें प्राप्त होगा जिसके दर्शन ही साधकों को दुर्लभ हैं, जो इस समय समस्त साधकों और महर्षियों के सिरमौर हैं, ऐसे स्वामी सच्चिदानन्द तुम्हें गुरु रूप में प्राप्त हो सकेंगे, जिनका शिष्यत्व प्राप्त करना ही अपने आप में महत्वपूर्ण घटना होगी।

गुरुवार के दिन श्रीमाली जी नित्य क्रिया से निवृत्त होकर पूर्ण समर्पण भाव से गुरु चरणों में जाकर बैठ गए। गुरु ने उन्हें मंत्र दीक्षा देने की

तैयारी कर ली। यह दीक्षा इस बात का सूचक है कि स्वामी जी अपना



उत्तराधिकारी निश्चित कर लिया है, क्योंकि उनके ज्ञान की पूर्णता को इसी शिष्य ने प्राप्त किया है, एक प्रकार से यह व्यक्तित्व गुरु का ही अंशभूत बन गया है।

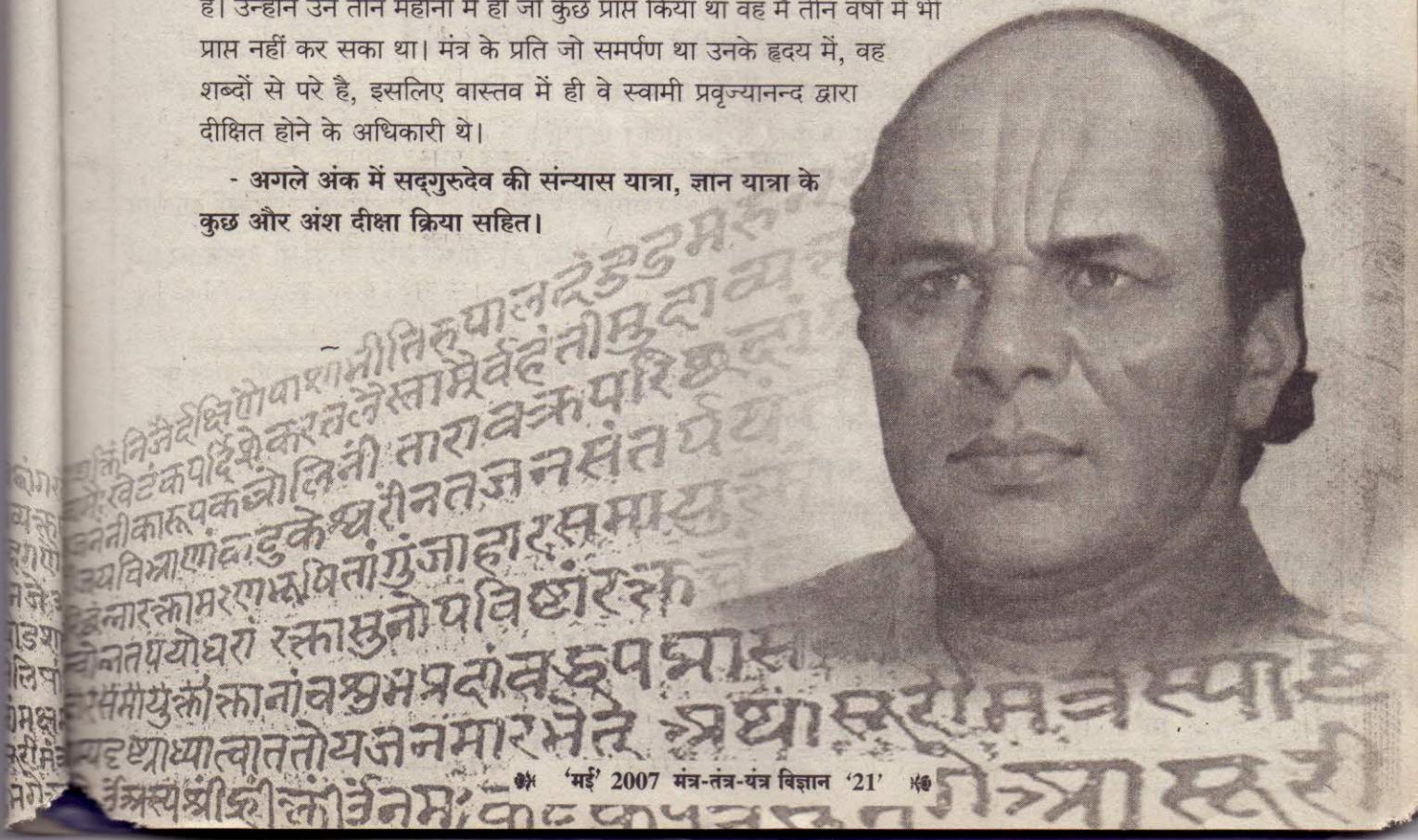
साधना के क्षेत्र में दीक्षा का तात्पर्य यह है कि गुरु के पास जो कुछ था वह पूरी तरह से दिया जा चुका है और जिस प्रकार से ज्ञान दिया गया है उसी प्रकार से शिष्य ने ग्रहण भी कर लिया है, अतः गुरु इस बात के लिए निश्चिन्त है कि उनका ज्ञान शिष्य ने पूर्णता के साथ स्वीकार कर लिया है।

मुझसे पहले ही स्वामी जी के पास कई शिष्य आये होंगे और मैं भी लगभग तीन वर्षों से उनके सान्निध्य में था, परन्तु दीक्षा प्राप्त करने का सौभाग्य मुझे या मुझसे पूर्व आने वाले शिष्यों को प्राप्त नहीं हुआ था क्योंकि इस प्रकार की दीक्षा गुरु अपने जीवन में केवल एक शिष्य को ही देता है और यह दीक्षा उसी शिष्य को दी जाती है जिसके प्रति गुरु निश्चिन्त होता है कि उसके पास जो भी और जितना भी ज्ञान था वह शिष्य ने प्राप्त कर लिया है और आने वाले समय में वह इस ज्ञान को आगे बढ़ाने में समर्थ हो सकेगा। यह दीक्षा इस बात की सूचक होती है कि वह शिष्य उस गुरु का अंशभूत बन गया और गुरु ने पूर्व में अपने गुरु से जो विशेष अध्यात्म बल प्राप्त किया है उसी को आगे प्रवृहित कर लिया है। यह दीक्षा इस बात की भी सूचक होती है कि गुरु उस शिष्य के ज्ञान से, उसके व्यक्तित्व से पूर्णतः सन्तुष्ट है।

मंत्र के क्षेत्र में स्वामी प्रवृज्यानन्द जी का नाम आदर के साथ लिया जाता है और जो मंत्र-मर्मज्ञ हैं या जो मंत्र के अध्येता हैं उनके लिए यह नाम अपरिचित नहीं है। एक प्रकार से देखा जाय तो मंत्र का पर्याय ही स्वामी प्रवृज्यानन्द को माना जाता है अतः उनके द्वारा किसी को दीक्षा दिया जाना युगान्तकारी घटना माना जाता है।

कई शिष्यों ने इस प्रकार की आशा संजोयी थी कि उन्हें गुरु के द्वारा दीक्षा प्राप्त हो सकेगी। यदि असत्य न कहूं तो मुझे भी यह आशा थी कि संभवतः मैं इस महिमा से मण्डित हो सकूंगा और मैं स्वामी प्रवृज्यानन्द द्वारा दीक्षित होने का सौभाग्य प्राप्त कर सकूंगा, परन्तु यदि तुलना की दृष्टि से देखा जाय तो मैं बेहिचक यह स्वीकार करने के लिए तैयार हूं कि डॉ श्रीमाली का व्यक्तित्व मुझसे महान् था और वर्तमान में भी महान है। उन्होंने उन तीन महीनों में ही जो कुछ प्राप्त किया था वह मैं तीन वर्षों में भी प्राप्त नहीं कर सका था। मंत्र के प्रति जो समर्पण था उनके हृदय में, वह शब्दों से परे है, इसलिए वास्तव में ही वे स्वामी प्रवृज्यानन्द द्वारा दीक्षित होने के अधिकारी थे।

- अगले अंक में सद्गुरुदेव की सन्यास यात्रा, ज्ञान यात्रा के कुछ और अंश दीक्षा क्रिया सहित।



# वार्षिक सदस्यता

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान पत्रिका आपके परिवार का अभिन्न अंग है। इसके साधनात्मक सत्य को समाज के सभी स्तरों में समान रूप से रचीकार किया गया है क्योंकि इसमें प्रत्येक वर्ग की समस्याओं का हल सरल और सहज रूप में समाहित है।

इस पत्रिका की वार्षिक सदस्यता को प्राप्त कर  
आप पाचेंगे अद्वितीय और विशिष्ट उपहार

# सिद्धिप्रदा अर्गला

जिसे प्राप्त कर आप स्वतः इसकी महिमा का गुणगान करने लगेंगे क्योंकि यह एक सिद्धिप्रदा अर्गला है और किसी भी प्रकार की साधना में सफलता के लिए आवश्यक है। इस अति विशिष्ट उपहार द्वारा पत्रिका ने तो आपके लिए सौभाग्य का द्वारा खोल दिया है।

किसी भी दिन प्रातः गुरु पूजन के बाद किसी प्लेट में स्वस्तिक बना कर अर्गला को स्थापित कर दें, उसके बाद धूप, दीप दिखाकर सामान्य पूजन करें। सामान्य पूजन के पश्चात् ३ माला गुरु-मंत्र की जप करनी चाहिये। इसके पश्चात् आपको जिस साधना में सफलता पानी है उसका स्मरण करें, गुरुजी से साधना में सफलता प्राप्ति हेतु आशीर्वाद प्राप्त करें। इसके बाद गुटिका को अपने पूजा स्थान में स्थापित कर दें।

इस गुटिका को अपने पूजा स्थान में सवा महीने तक धूप-दीप दिखायें, इस बीच आपको किसी प्रकार के मंत्र जप की आवश्यकता नहीं है, आप केवल प्रतिदिन इसका पूजन करें। सवा महीने पश्चात् इसे नदी अथवा जल सरोवर में विसर्जित कर दें।

पत्रिका की एक वर्षीय सदस्यता ग्रहण करने पर उपरोक्त यंत्र आप प्राप्त कर सकते हैं। अपनी मनोनुकूल सामग्री का नाम पोस्टकार्ड संख्या 4 पर लिखें दें। वी.पी.पी. द्वारा सामग्री आपको सुरक्षित भेज दी जाएगी तथा वी.पी.पी. छूटने पर वर्ष पर्यन्त पत्रिका नियमित रूप से भेजी जाएगी।

यह दुर्लभ उपहार तो आप पत्रिका का वार्षिक सदस्य अपने किसी मित्र, रिश्तेदार या स्वजन को बनाकर ही प्राप्त कर सकते हैं। यदि आप पत्रिका-सदस्य नहीं हैं तो आप स्वयं भी सदस्य बनकर यह उपहार प्राप्त कर सकते हैं। आप पत्रिका में प्रकाशित पोस्टकार्ड नं. 4 स्पष्ट अक्षरों में भरकर हमारे पास भेज दें, शेष कार्य हम स्वयं करेंगे।

वार्षिक सदस्यता शुल्क - 195/- डाक खर्च अतिरिक्त - 45/- Annual Subscription 195/- + 45/- postage

Fill up and send post card no. 4 to us at :

सम्पर्क

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर 342001, (राजस्थान)

Mantra-Tantra-Yantra Vigyan, Dr. Shrimali Marg, High Court Colony, Jodhpur-342001, (Raj.), India

फोन (Phone) -0291-2432209, 2433623 टेलीफैक्स (Telefax) - 0291-2432010

# तंत्र-मंत्र-यंत्र और आधुनिक विज्ञान

तंत्र में सदाशिव और महाकाल दोनों वस्तुतः एक हैं, जो तांत्रिक भेदभव का एक सिद्धान्त है। अपनी मृत्यु से लगभग दस वर्ष पूर्व आइंस्टाइन ने सर्वप्रथम इस तांत्रिक भेदभव को समझ कर अपनी नवीनतम रचना 'जनरल रिलेटिविटी प्रिसिपल' में इनकी मूल एकता सिद्ध की है।

तंत्र के 'चेतना-सिद्धान्त' को अब तक आधुनिक विज्ञान नहीं मानता था। विश्व का मूल 'चेतना' या 'चिति' शक्ति है, - यह तांत्रिक सिद्धान्त है। आधुनिक विज्ञान चेतना (काँडशस) को आदि मानकर मेके निकल या केमिकल संयोग से उत्पन्न मानता आया है। यही कारण है कि वह सत्य पदार्थ उसके लिए अज्ञात रहा किन्तु अब थोड़े ही दिनों में मूर्धन्य वैज्ञानिकों को चिति शक्ति का आभास होने लगा है। आधुनिकतम सर्वश्रेष्ठ वैज्ञानिक आइंस्टाइन ने अपने जीवन के उत्तर काल में अनुभव कर लिखा है - 'अचिंत्य की धारणा से ही जो सत्य विज्ञान की शक्ति है, प्रगाढ़ सुन्दरता का हृदयग्राही अनुभव होता है।'

तंत्र शब्द का पारिभाषिक अर्थ 'विज्ञान' है, तंत्र विज्ञान है सिद्धान्त स्थिर किया है कि 'एक महत् आदिबिन्दु फटने से और विज्ञान तंत्र है। जिस तरह ज्ञान-विज्ञान का अंत नहीं है, यह विश्व बना है, जैसा कि हम देखते हैं।' इस सिद्धान्त की उसी प्रकार तंत्र भी असंख्य हैं। जैसे वेद और वेदशास्त्र में, व्याख्या करते हुए अमेरिका के वैज्ञानिक 'जॉर्ज गामो' ने कहा योग और योगशास्त्र में भेद होता है, उसी प्रकार तंत्र और तंत्र है कि 'किस प्रकार विश्व-रचना से पूर्व अवर्णनीय ज्वाला से शास्त्र में भी भेद है। मंत्र-शक्ति और मंत्र शक्ति से कार्य करने सभी विश्व निर्माणकारक तत्व समूह बने। इस महती ज्वाला की युक्ति तंत्र है और तंत्र की पद्धतियां बताने वाला शास्त्र तंत्र में अणु क्या, परमाणुओं का भी पता नहीं था, केवल एक प्रकार के स्वच्छन्द विद्युत्कण (न्यूट्रोन) की धारा का प्रवाह था।'

ज्ञान दो प्रकार का होता है - एक प्रत्यक्ष, दूसरा परोक्ष (काल्पनिक)। प्रत्यक्ष ज्ञान से यथार्थ का बोध होता है किन्तु काल्पनिक ज्ञान पूर्णरूप से अथवा आंशिक रूप से सत्य भी हो सकता है और असत्य भी।

प्रत्यक्ष ज्ञान का आधार काल्पनिक ज्ञान होता है। आधुनिक जीव-विज्ञान, रसायन-विज्ञान, भूत-विज्ञान (फिजिक्स) आदि इसके उदाहरण हैं। जैसे फिजिक्स का ज्ञाता इस विषय को समझता है कि किस प्रकार विज्ञान के प्रत्येक विभाग में तात्कालिक ज्ञान से कल्पना कर अनुसंधान द्वारा अनुमान को सिद्धान्त बना लिया गया है।

तंत्र का मत है कि एक बिन्दु से सृष्टि की उत्पत्ति हुई है। इसी का समर्थन अब आधुनिक पाश्चात्य विज्ञान भी करने लगा है। बेलजियम के एक कॉस्मोलॉजिस्ट आवेलेन ने भी यह

तंत्र के अनुसार 'गामो' द्वारा प्रतिपादित महाज्वाला की तुलना हमारे वर्तमान ब्रह्माण्ड के सौरमण्डल की अन्तर्ज्वाला से नहीं की जा सकती क्योंकि हमारे सूर्य की अन्तर्ज्वाला का तापमान केवल चार करोड़ डिग्री है और विश्व-रचना से पूर्व के ताप का तो अनुमान ही नहीं किया जा सकता है, जिसकी गर्मी लाखों-करोड़ों वर्षों बाद जब कुछ शांत हुई तब सूर्य और नक्षत्र बने। तंत्र में उस कल्पनातीत महाज्वाला को 'कोटि सूर्यप्रकाश आद्याशक्ति' कहा गया है। उस समय यह आद्याशक्ति अकेली थी। दिशाएं, दिक्षक्षति और सदाशिव प्रेत हो रहे थे और कालशक्ति एवं महाकाल स्तब्ध पड़े हुए थे -

अवष्टभ्यं पदभ्यं शिवं भैरवं च। तंत्र के इस कथन का निस्पत्ति आधुनिक वैज्ञानिक शब्दावली से इस प्रकार किया जा सकता है -

आद्याशक्ति	- इनर्जी क्वान्टा
आदि अवस्था	- मैक्रिसमम एण्ट्रोपी
आदि अवस्था की दो प्रधान शक्तियां	
सदाशिव	- ग्रेमिटेशन या पावर ऑफ कानफिगरेशन
महाकाल	- एलेक्ट्रोमेंजेटिज्म

तंत्र में सदाशिव और महाकाल दोनों वस्तुतः एक हैं, जो तान्त्रिक भेदभेद का एक सिद्धान्त है। अपनी मृत्यु से लगभग दस वर्ष पूर्व आइंस्टाइन ने सर्वप्रथम इस तान्त्रिक भेदभेद को समझ कर अपनी नवीनतम रचना 'जनरल रिलेटिविटी प्रिंसिपल' में इनकी मूल एकता सिद्ध की है।

तंत्र में आद्या मूलशक्ति काली का वर्ण काला बताया गया है। 'इनर्जी क्वान्टा' की इस विशिष्ट अवस्था में विश्व घोर अन्धकार में व्यास रहता है। प्रकाश-शक्ति उस समय सिकुड़ी-सिमटी रहती है। सूर्य-चन्द्र आदि ग्रह-नक्षत्रों का कुछ अता-पता नहीं रहता है।

इस क्वान्टा इनर्जी का प्रतीक जिस प्रकार तंत्र में 'बिन्दु' माना गया है, उसी प्रकार अब पाश्चात्य आधुनिक विज्ञान भी मानने लगा है। बिन्दु केन्द्र का प्रतीक है। इससे अधिक आधुनिक विज्ञान इसके सम्बन्ध में अभी तक कुछ नहीं जान पाया है। बिन्दु अपने रूप में अलक्ष्य है, इसलिए अव्यवहार्य होने के कारण अव्यक्त कहा जाता है। अव्यक्त बिन्दु की अभिव्यक्ति का जो क्रम आधुनिक विज्ञान बताता है, बिल्कुल वही क्रम तत्त्रों में भी बताया गया है।

बिन्दु की पहली व्यक्तावस्था है त्रिकोण। इस त्रिकोण में दिक् (स्पेस) के तीन 'डाइमेन्शन' और काल 'डाइमेन्शन' परस्पर नित्य सम्बद्ध हैं। एक ही त्रिकोण नहीं बनता, बल्कि अनेक त्रिकोण इसलिए बनते हैं कि सभी प्रकार की गति-शक्तियों के मूल 'एलेक्ट्रोमेंजेटिज्म' विविध त्रिकोण बनते हैं। विश्वरूपिणी घोड़शी के श्रीयंत्र में यही सिद्धान्त दृष्टिगत है। आद्या के यंत्र में केवल पांच त्रिकोण हैं, इसीलिए कि वह आदि अवस्था का बोधक है। आदि में आकाश व वायु (वेपर) ही दिक् (स्पेस) में था, इसके बाद वायु हुआ। वायु ने अपनी एक प्रकार की गति से अग्नि तत्व (गर्मी) उत्पन्न किया, अग्नि तत्व ने जल तत्व या द्रव (लिकिवड) तत्व उत्पन्न किया। जल तत्व की गर्मी पर्याप्त मात्रा में कम होने पर पृथ्वी या ठोस पदार्थ बना। करोड़ों-अरबों वर्षों तक यह दशा रहने के बाद दिक् (स्पेस) अर्थात् सदाशिव की ग्रेविटेशन शक्ति और महाकाल (एलेक्ट्रोमेंजेटिज्म) ने अनेकानेक तत्वों

(ऐलीमेण्ट्स) की सृष्टि की है। इसी सिद्धान्त के उदाहरण श्रीयंत्र के इतने त्रिकोण हैं।

त्रिकोण के बाहर या पश्चात् जो वृत है, वह शक्ति की 'रेडिएशन' का द्योतक है। इस वृत पर जो दल हैं, वे शक्ति के विभागों (सेक्शन्स) के द्योतक हैं।

सब के पश्चात् 'भूपूर' विश्व की सीमा होने से शक्ति गति-क्षेत्र (फील्ड ऑफ फोर्स) है। अभी तक पाश्चात्य विज्ञान विश्व को असीम मानता था किन्तु आइंस्टाइन ने गणित द्वारा यह सिद्ध कर दिया है कि 'स्पेस' सीमित है, पर घिरा हुआ नहीं।

तंत्र का यह कथन कि 'स्वयं वही (अनादि अनन्त महाशक्ति) अपने को जानती है, दूसरा कोई उसे नहीं जान सकता।'

आधुनिक विज्ञान भी यह कहता है कि 'ज्यों-ज्यों गणित के साधन बढ़ते हैं, वैसे-वैसे ज्ञेय दूर होता जा रहा है। सत्य पदार्थ का ज्ञान तो होता नहीं, केवल क्यों होता है, किस प्रकार होता है, इसी का आंशिक ज्ञान प्राप्त होता है। वर्तमान भौतिक या आधिदैविक (हैटा-फिजिकल या स्परिच्युअल) क्षेत्र में जाने की आवश्यकता का अनुभव करने लगा है।

तंत्र के 'चेतना-सिद्धान्त' को अब तक आधुनिक विज्ञान नहीं मानता था। विश्व का मूल 'चेतना' या 'चिति' शक्ति है, - यह तान्त्रिक सिद्धान्त है। आधुनिक विज्ञान चेतना (कॉन्शंस) को आदि मानकर मेकेनिकल या केमिकल संयोग से उत्पन्न मानता आया है। यही कारण है कि वह सत्य पदार्थ उसके लिए अज्ञात रहा किन्तु अब थोड़े ही दिनों में मूर्धन्य वैज्ञानिकों को चिति शक्ति का आभास होने लगा है। आधुनिकतम सर्वश्रेष्ठ वैज्ञानिक आइंस्टाइन ने अपने जीवन के उत्तर काल में अनुभव कर लिखा है - 'अचिंत्य की धारणा से ही जो सत्य विज्ञान की शक्ति है, प्रगाढ़ सुन्दरता का हृदयग्राही अनुभव होता है।'

इस पर टिप्पणी करते हुए वैज्ञानिक 'वारनेट' ने कहा है कि 'संसार समझता है कि डॉ. आइंस्टाइन एथीस्ट (अनीश्वरवादी) है; पर नहीं, वे महाचिति को विश्व का मूल समझते हैं।'

मंत्र विज्ञान - तंत्रशास्त्र की दृष्टि से श्रव्य ध्वनि निम्न कोटि की है। आधुनिक विज्ञान के मत से मंत्रों में निहित ध्वनि इसलिए महत्वपूर्ण नहीं है कि श्रव्य ध्वनि यदि डेढ़ सौ वर्षों तक निरन्तर उत्पन्न की जाए तो उससे केवल एक प्याला पानी गरम करने की ऊर्जा उत्पन्न हो सकती है। तंत्रविज्ञान का

मत है कि सबसे अधिक प्रभावशाली ध्वनि सुनी नहीं जाती, वह केवल अनुभवगम्य होती है। मानसिक जप या अजपाजप में जीभ-ओंठ आदि कुछ नहीं हिलते, फिर भी जपते समय सांसों में वह ध्वनि प्रस्फुटित होती है। निष्कर्ष यह कि जो हमें अनुभव होता है, उस शब्द के लिए 'स्फोट' आवश्यक होता है। आधुनिक विज्ञान में स्फोट को नापने के लिए अब तक कोई साधन नहीं है।

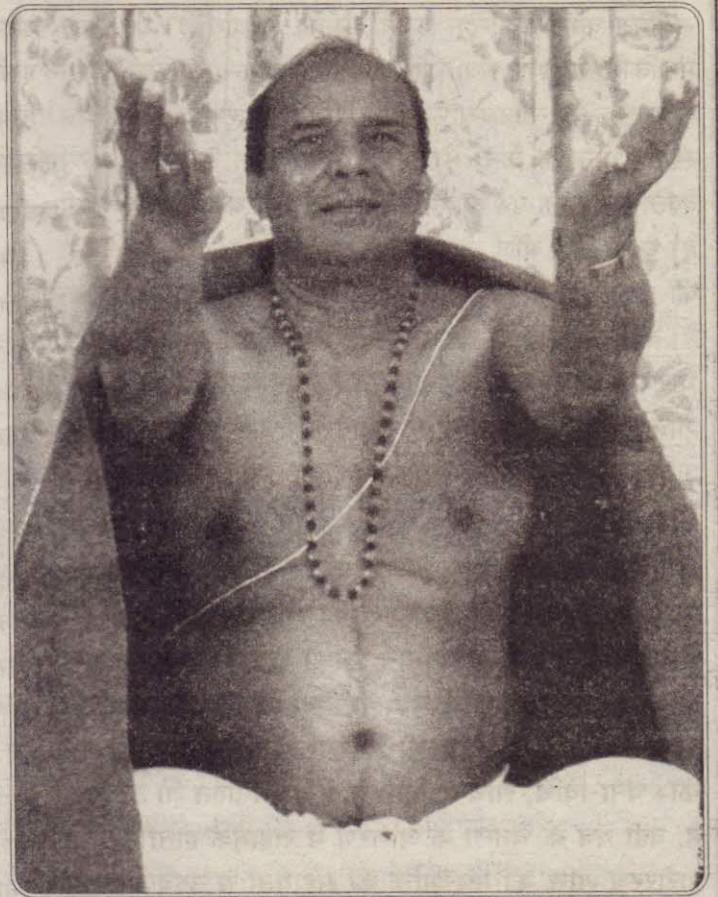
कर्णातीत तरंगें उत्पन्न करने के लिए हमारे शरीर में ऐसा कोई आधार अवश्य नहीं है, किन्तु मंत्रों का जप करते समय जो 'स्फोट' होता है, वह उन कर्णातीत तरंगों से कम प्रभावशाली नहीं होता है। तंत्र विज्ञान शब्द को आदिशक्ति - परम शिवब्रह्म मानता है। उसके मत से शब्द में केवल एक 'तन्मात्रा' है। शेष तत्वों में तन्मात्राओं का भार बढ़ता जाता है। मन्त्र शास्त्र में आकाश तत्व की साधना की जाती है और योग शास्त्र में वायु तत्व की। योगी प्राण वायु द्वारा जिस कुण्डलिनी को जाग्रत करता है, मंत्र-साधक उसका जागरण मंत्र-जप से उत्पन्न 'स्फोट' से करता है। योग-साधना द्वारा योगी जिस अगम्य स्थिति को प्राप्त करता है, मंत्र साधक उसी स्थिति को आकाश की उपासना से सहज ही प्राप्त कर लेता है।

मंत्र विज्ञान केवल ध्वनि विज्ञान ही नहीं है - भावना विज्ञान भी है। ध्वनि तो गुणित करने की शक्ति है। किन्तु मंत्र की भावना क्रियाशील रहती है। ध्वनि की तरंगें क्रमशः गमन करती हैं और भावनाओं तथा विचारों की चुम्बकीय (~~~) शक्ति रूप में गमन करती है। वैदिक क्रत्चाओं की स्वर-प्रक्रिया में यही चुम्बकीय शक्ति रहती है।

संगीतशास्त्र में ध्वनि रहती है। मेघ-मल्हार राग गाने से पानी बरसने लगता है। दीपक राग गाने से बुझे हुए दीपक जल उठते हैं। आजकल युरोप में संगीत द्वारा गायों से अधिक दूध दुहा जाता है, पेड़-पौधों को बढ़ाया जाता है और वृक्षों में फल-फूल उत्पन्न किए जाते हैं।

ध्वनि से अधिक शक्तिशाली और प्रसन्नसाध्य वैखरी वृत्ति का स्फोट होता है। इस दृष्टि से मंत्र का फॉर्मूला बनता है -

**शब्द+भावना=शक्ति।** ध्वनि अपने आप में एक वातावरण है। देवार्चन के समय घंटा घड़ियाल तथा शंख की ध्वनि भक्ति भावना पैदा करती है और युद्ध क्षेत्र के रणवादों की ध्वनि कायरों में भी वीर रस का उद्रेक उत्पन्न करती है। मृत्यु-संगीत, शोक-संगीत शोक उत्पन्न करता है। ध्वनि का यह प्रभाव अन्तर्राष्ट्रीय साम्य रखता है।



शब्द की शक्ति अपरिमेय होती है। पृथ्वी पर होने वाले अनेक परिवर्तन शब्द द्वारा किए जाते हैं। शब्द शक्ति के स्रोतों का एक स्रोत है। तंत्र-विज्ञान का मत है कि जो पिंड में है, वही ब्रह्माण्ड में है। किसी भी इन्द्रिय को प्रबल और विशुद्ध बना लेने पर वह इन्द्रिय प्रत्यक्ष और परोक्ष ज्ञान प्राप्त करने में समर्थ होती है।

विचारों में हर समय चुम्बकीय प्रवाह रहता है, उसका अनुभव भी हमें हुआ करता है। जैसे शमशान में जाकर मनुष्य के हृदय में भय और वैराग्य उत्पन्न होता है। हिंसक जन्तुओं से आकीर्ण जंगल में पहुंचकर दिल धड़कने लगता है। भावनाओं और विचारों के पवित्र प्रवाह से ऋषि-आश्रमों में सिंह और मृग एक साथ साधु-भाव से रहा करते थे। किसी कुत्ते को जब हम प्यार से पुचकारते हैं तो वह भौंकना बंद कर पूँछ हिलाने लगता है और क्रोध प्रकट करने पर वही गुर्जता है, भौंकता है, आक्रमण भी कर बैठता है। इन सब में भावनाओं की विद्युत-शक्ति का ही प्रभाव प्रभावी होता है।

निष्कर्ष यह कि शब्द और भावना दोनों में एक प्रबल शक्ति रहती है और मंत्रों में इन दोनों शक्तियों का समावेश रहता है।

**मंत्र-विज्ञान - 'यं' धातु से 'यंत्र' शब्द निष्पन्न होता है।**

संयमित करना, केन्द्रित करना इसका शब्दार्थ है। यंत्र द्वारा मन केन्द्रित होकर यंत्राधिष्ठित देवता या मन्त्राधिष्ठित देवता से साधक का तादात्म्य स्थापित होता है। शरीर के भिन्न-भिन्न स्थान शक्ति के केन्द्र हैं। अभीष्ट-सिद्धि के लिए अधिष्ठात् देवता की शक्ति पर ध्यान केन्द्रित करने में यंत्र सहायक होता है। ध्यान और बीज मंत्र के जप तथा हवन के द्वारा इष्ट देवता की शक्ति यंत्र में समाविष्ट होकर यंत्र को 'चैतन्य' बना देती है। यही कारण है कि यंत्र-पूजन करने से तथा शरीर में यंत्र को धारण करने से कार्य सिद्धि होती है। यंत्र मूल रूप से विभिन्न शक्ति-केन्द्रों के मानचित्र के समान है, जिन्हें धारण करने से अथवा उनकी पूजा करने से साधक की अभीष्ट शक्ति उद्बुद्ध हुआ करती है।

यंत्र लिखने की भी एक विशेष विधि होती है जिसमें रेखाओं, बिन्दुओं, बीजांकों या बीजाक्षरों का संयोजन विधिविशेष से किया जाता है। यों ही मनमाने ढंग से रेखाएं खींचकर उनके कोष्ठों में अंक या बीज मंत्र भर देना अज्ञता को प्रमाणित करता है और ऐसे यंत्र कभी भी सिद्धिप्रद नहीं होते हैं। यंत्र की रचना-विधि, साधना-विधि के मूल में निहित जो तत्त्वाद है, वही यंत्र के चैतन्य के जागरण में सहायक होता है। यंत्र शरीरस्थ शक्ति को मंत्र-शक्ति की सहायता से उद्बुद्ध करता है और तंत्र उस उद्बुद्ध-शक्ति को सम्पूर्ण देह के विभिन्न केन्द्रों में प्रसारित करता है।

यंत्र बनाते समय शुद्ध भाव के अवलम्बन से रेखाओं को खींचा जाता है। यंत्र की वे रेखाएं अन्तःकरण की शक्तियों को आन्दोलित-स्पन्दित कर उन्हें उद्बुद्ध करती हैं; उस समय मन और चित के संयोग से असक्ति उत्पन्न होती है और अहंकार तथा बुद्धि के संयोग से भाव तत्व का उदय होता है। अन्तःकरण विशुद्ध निर्मल बन जाता है और साधक की कामना सिद्ध होती है।

जो यंत्र स्वतः दैवी शक्ति सम्पन्न होते हैं, उन्हें दिव्य यंत्र कहा जाता है। ये यंत्र स्वतः सिद्ध माने जाते हैं। बीसायंत्र, श्रीयंत्र, पंचदशीयंत्र, दिव्ययंत्रों के वर्ग में परिणित हैं। मंत्रों की भाँति यंत्र बहुविध और बहुसंख्यक हैं और उनका रचना-विज्ञान भी प्रयोजन के अनुसार कई प्रकार का होता है। यंत्रों को सिद्ध करने के लिए प्रयोजन के अनुसार दिन, तिथि, नक्षत्र, मास काल आदि निर्धारित हैं। लिखने की स्थाई, लेखनी और पत्र भी प्रयोजन के अनुसार भिन्न होते हैं।

यंत्र में तीन विज्ञान हैं - 'कादि', 'हादि' और 'सहादि'। 'कादि' आद्यशक्ति बोधक है। 'हादि' श्रीविद्या का बोधक है

और 'सहादि' सरस्वती शक्ति का बोधक है। इनके यंत्र भी इसी आशय को प्रकट करते हैं। 'कादि' का यंत्र केवल शक्ति-त्रिकोणों से बनता है। 'हादि' का यंत्र शिव और शक्ति के सम्मिलित त्रिकोणों से बनता है और सहादि यंत्र उभयात्मक है।  
बीजमंत्र-विज्ञान

महाप्रकृति पराविद्या अविद्या क्रिया के अलग-अलग देवता होते हैं। प्रत्येक विद्या दैवत की शक्ति में सूक्ष्मतम तत्व निहित रहते हैं। तत्त्वयुक्त विद्या दैवत की क्रिया के अनुसार ध्यान भी पृथक प्रकल्पित हैं। ध्यान के अनुकूल ही महाविद्या के नाम भी भिन्न-भिन्न रखे गये हैं। प्रत्येक महाविद्या की क्रिया के मूलभाव - बीजाक्षरनाद (मूलबीज) में योगियों, सिद्धों ने प्रत्येक महाविद्या के बीज संयुक्त किए हैं। उस दिव्य 'नादब्रह्म' को ही क्रियाशील के 'बीज मंत्र' के नाम से जाना जाता है।

बीजमंत्र का सतत मनन करने से वह बीज साधक के मन और उसकी जीवनी शक्ति के सम्पुटन में दबकर प्रस्फुटित होता है। इस प्रस्फुटन को आधुनिक विज्ञानी भाषा में 'बैकिंग कॉस्मिक एम्ब्रायो एण्ड जनिसिस ऑफ एलेक्ट्रॉन्स एण्ड एटम्स' कहा जाता है। इस क्रिया से बीज में निहित अन्तः शक्ति साधक के 'चित्' मन पर प्रभाव डालती है और साधक के 'चित्' अस्तित्व में एक विचित्र प्रकार की महाशक्ति उत्पन्न करती है जिसे तंत्र शास्त्र अणिमा, महिमा, गरिमा आदि आठ सिद्धियां कहता है। इन सिद्ध-शक्तियों में जो साधक फंस जाता है, वह अपनी इष्ट साधना का लक्ष्य नहीं प्राप्त कर पाता है।

इस प्रकार के बीजमंत्र जब भिन्न-भिन्न दैवत शक्ति के भिन्न-भिन्न नाम से जपे जाते हैं, तब साधक को विशेष दैवी सहायता प्राप्त होती है और वह सिद्धि प्राप्त करता है। उस नाम और दैवत के ध्यान युक्त 'नाद' को मंत्र कहा जाता है।

बीजमंत्रों से बनाये गये मंत्र पञ्चाक्षरी से लेकर सहस्राक्षरी तक होते हैं। मूल बीज का उपदेश दीक्षाकाल में कायशोधन के लिए दिया जाता है। बीज सहित पूरे मंत्र का जप साधक को सिद्धि प्रदान करता है।

इस प्रकार मंत्र, तंत्र और यंत्र का एक विशेष वैज्ञानिक आधार है तथा तीनों को एक-दूसरे से अलग नहीं किया जा सकता। मंत्र-तंत्र-यंत्र परम सत्य एवं चिरंजीवी है, उन्हें प्रत्येक विज्ञान स्वीकार करता है और इसका आधार मनुष्य की देह, मन विचार है जो शक्ति उत्पन्न करते हैं। जिस दिन मनुष्य इस अपार ऊर्जा को जान लेगा समझ लेगा, उस दिन वह अपने आप में दिव्य आलोकित बन जाता है, अपने शक्ति के विस्तार को जान महान कार्य कर सकता है।



क्या आपका व्यवसाय आपके लिए उचित है?  
क्या आपको अपने व्यवसाय में उज्ज्ञति प्राप्त होगी?  
क्या आप नौकरी और व्यवसाय ढौन्हों कर सकते हैं?  
कौन सा व्यवेसाय करें और कब व्यवसाय करें?

इन्हीं सारे प्रश्नों का उत्तर देता

ज्योतिष विज्ञान

# ज्योतिष और व्यवसाय

जीवन और कर्म का घनिष्ठ सम्बन्ध है, कर्म के आधार पर व्यक्ति अपने जीवन को उज्ज्ञति के शिखर पर पहुंचाने का प्रयास करता है कई बार व्यक्ति को एक व्यवसाय में सफलता नहीं मिलती तो दूसरा व्यवसाय प्रारम्भ कर देता है, लेकिन बार-बार व्यवसाय की असफलता व्यक्ति को कर्ज के बोझ से भर देती है। ज्योतिष विज्ञान यह बताता है आपकी आजीविका और उज्ज्ञति के लिए कौन सा व्यवसाय उचित है।

मेरे एक मित्र बैंक में नौकरी करते हैं, 'ए' ग्रेड के ऑफिसर है। तन्त्रवाह भी अच्छी खासी मिलती है। लेकिन अपनी तन्त्रवाह से सन्तुष्ट नहीं थे और उन्होंने शेयर खरीदने, बेचने का काम शुरू कर दिया। देखते ही देखते उन्हें दो महीने में ही बीस लाख का घाटा हो गया, अपनी जमा पूँजी के साथ बैंक से कर्ज भी ले लिया। मेरे पास आकर रोने लगे कि इतना बड़ा कर्ज कैसे उतार सकता है। और कर्ज का ब्याज भी बढ़ता जा रहा है। मुझे आशर्चय हुआ, मैंने पूछा कि आपकी तो अच्छी नौकरी, तो इतना कर्ज कैसे हुआ? कोई शादी इत्यादि के लिये भी कर्ज नहीं लिया है तो उन्होंने पूरी बात बताई। उन्होंने कहा कि मेरे यहां बैंक में रोज व्यापारी आते हैं और मेरे पास बैठकर शेयर मार्केट की चर्चा करते हैं तथा पिछले महीनों में उन्होंने लाखों रुपये कमाएं हैं। लेकिन मुझे घाटा हो गया है। मैंने उनकी जन्मपत्री देखी तो और कहा कि आपने किससे पूछ कर यह कार्य प्रारम्भ किया। आपकी कुण्डली में तो इस प्रकार के व्यवसाय का योग ही नहीं है। और अब यह कर्ज उतारना

आपके लिये संभव ही नहीं है। वास्तव में उन्हें कर्ज उतारने के लिये गांव की पैतृक सम्पत्ति बेचनी पड़ी।

वर्तमान समय में यह अधिकतर देखा गया कि लोग अपनी बुद्धि से व्यवसाय नहीं करते हैं अपितु किसी को उच्चति करते देख या दूसरों की बातों में आकर वह कार्य प्रारम्भ कर देते हैं। ऐसी घटनाएं आम हैं। लोगों को लगता है कि शेयर मार्केट के काम में, जमीन के क्रय-विक्रय के काम में, जुए में पैसा ही पैसा है। वास्तविक स्थिति में व्यक्ति को अपनी कुण्डली में जो योग है, उसी के अनुसार व्यवसाय करने से उज्ज्ञति प्राप्त होती है। हर व्यक्ति के लिये अलग-अलग प्रकार का व्यवसाय ही उचित माना गया है। इस सम्बन्ध में ग्रह गणना के अनुसार कार्य करना चाहिये।

जिस प्रकार जीवन साथी के चयन के लिये कुण्डली मिलाई जाती है, उसी प्रकार व्यवसाय का चयन भी अपनी कुण्डली के अनुसार करना चाहिये।

व्यक्ति को व्यापार या नौकरी किसमें सफलता मिलेगी? के कार्य से जीविका होती है। मंगल की वृत्ति से युद्ध तथा व्यवसाय का चुनाव करते समय यह आम समस्या होती है। प्रहार, अग्नि, साहस, धातु, कलह की वृत्ति, चोर वृत्ति का नौकरी करने वाला व्यक्ति उच्च अधिकारी तो हो सकता है पता लगता है। बुध की वृत्ति से काव्यज्ञान, शास्त्र, वेदान्तमार्ग, परंतु आमदनी निश्चित होती है, जबकि व्यापारी हजारों, लाखों पुरोहिताई जप, वेदपाठ, शिल्प कलादि। गुरु की वृत्ति से एक ही समय में कमा लेता है। व्यापार की सफलता के लिए द्वितीय, पंचम, नवम्, दशम् और एकादश भाव तथा उन भावों पुराण, शास्त्र, नीति, धर्मोपदेश, अध्यापन मार्ग द्वारा जीविका में ग्रहों की स्थिति सम्पत्ति की सूचक है। जिनके उपरोक्त पांचों होती है। शुक्र के नवांश में माणिक्य, वाहन, चावल, नमक, भाव निर्बल हों तो उन्हें नौकरी मिलती है। स्त्री, गाय आदि। शनि की वृत्ति में घूमने-फिरने, निम्न कार्य, लकड़ी, शिल्प, परिश्रम, भार वहन से जीविका होती है।

द्वितीय भाव जातक की आर्थिक स्थिति को विशेष रूप से स्पष्ट करता है। द्वितीय भाव की स्थिति से विशेष जानकारी प्राप्त की जाती है। धन-लाभ का तरीका क्या होगा? एकादश भाव से विचार करना चाहिए। एकादश भाव आय (आमदनी) को बताता है। सप्तम् भाव जातक की दैनिक आमदनी तथा साझेदारी के विषय में प्रकाश डालता है तथा नवम् भाव जातक के भाग्यशाली अथवा भाग्यहीन होने की सूचना देता है। आकस्मिक लाभ के संबंध में विचार करते समय चतुर्थ, पंचम् तथा अष्टम् भाव की स्थितियों पर विशेष ध्यान देना चाहिए।

चतुर्थ भाव जातक की स्थायी, पैतृक संपत्ति के सम्बन्ध में बताता है। पंचम भाव लॉटरी, आकस्मिक धन लाभ के विषय में सूचित करता है। सप्तमभाव साझेदारी के व्यवसाय तथा ससुराल द्वारा होने वाले धन का सूचक है। दैनिक आमदनी के सम्बन्ध में भी सप्तम् भाव से विचार किया जाता है। अष्टमभाव रिश्वत, लॉटरी द्वारा धन लाभ, गड़े हुए धन का लाभ अथवा पर स्त्री आदि से होने वाले धन-लाभ की सूचना देता है। नवम् भाव भाग्यशाली होने के बारे में, दशम् भाव ऐश्वर्य, सत्ताधिकार, राज सम्मान, उपजीविका, धंधे, नौकरी के सम्बन्ध में जानकारी देता है। धन-हानि के सम्बन्ध में द्वादश भाव से विचार करना चाहिए।

लग्न में चंद्रमा से दशम् में सूर्योदि ग्रह हों तो पिता से या पिता के व्यवसाय से धन की प्राप्ति होती है। उसी प्रकार चंद्र हो तो माता से, भौम हो तो शत्रु से, बुध हो तो मित्र से, गुरु हो तो भाई से, शुक्र हो तो स्त्री से, शनि हो तो नौकर से धन की प्राप्ति होती है। लग्न चंद्र तथा सूर्य इन तीनों के मध्य जो अधिक बली हो उससे दशम् में जो राशि हो उसका स्वामी

जिस ग्रह के नवांश में हो उसकी वृत्ति अनुसार जीविका होती है। अर्थात् सूर्य की वृत्ति से चिकित्सा, झगड़ा, धन धान्य, मोती, मंत्रोपदेश, मनोरंजन आदि से। चंद्रमा की वृत्ति से वस्त्र, राजा तथा स्त्रियों के आश्रय से, मिट्टी के काम, खेती पड़ती हो; चिकित्सा कार्य, सरकारी नौकरी आदि, उनमें ऐसे

व्यवसाय या कर्म, आज्ञा, कृषि, पिता, आजीविका, यश, सप्तम-प्राप्ति, पद-प्राप्ति, मान, वंश, संन्यास, आगम, आकाश, प्रवास ऋण, विज्ञान, विद्या, वस्त्र, राज-सम्मान, दास आदि इन सभी वस्तुओं का विचार दशम् भाव से करें। उपरोक्त सभी बातों का विचार करते समय बुध, गुरु, रवि तथा दशमेश से भी विचार करें। मंगल स्वराशि मेष या वृश्चिक का हो, वह शुक्र बुध से युक्त हो एवं दशम स्थान उस मंगल से दृष्ट हो तो उपने कर्मफल की स्वल्पता होनी चाहिए। षष्ठम, द्वादश या अष्टम् में शुक्र, बुध, गुरु हों और वे पाप ग्रह से दृष्ट हों तो उक्त योगों में निज कर्मों का नाश होता है।

ग्रहों का फल विचारते समय ग्रह के अंश उच्च राशि व नीच राशि का भी ध्यान रखना चाहिए। जो ग्रह सूर्य के साथ हों, समान्यतः उन्हें अस्त ही माना जाता है। पत्रिका में वर्तमान में दशा, अन्तर्दशा तथा प्रयन्तर्दशा का भी ध्यान रखना चाहिए क्योंकि ग्रह अपनी दशा तथा अन्तर्दशा में अधिक फलदायी होते हैं।

राशियां तीन प्रकार की होती हैं। चर राशियां-मेष, कर्क, तुला, मकर। स्थिर राशियां-वृष, सिंह, वृश्चिक, कुंभ। द्विस्वभाव राशियां-मिथुन, कन्या, धनु, मीन। इन राशियों से हम व्यवसाय आदि की गणना करते हैं।

यदि जन्मकुंडली में चर राशिगत ग्रह अधिक संख्या में हों तो जातक कोई स्वतंत्र व्यवसाय करने वाला महत्वकांक्षी होता है। वह अपनी योग्यता, व्यवहार एवं कुशलताओं के आधार पर अपने क्षेत्र में सर्वोच्च स्थान पाने के लिए प्रयत्नशील रहता है। जिस व्यवसाय में सदव्यवहार, विनम्रता, युक्ति आदि की विशेष आवश्यकता पड़ती हो, वे उसके लिए लाभदायी सिद्ध होते हैं।

यदि जन्मकुंडली में स्थिर राशिगत ग्रह राशि अधिक संख्या में हों जातक धैर्यवान, सहनशील तथा दृढ़ विचारों का होता है। जिस नौकरी में इन सब गुणों की अधिक आवश्यकता से वस्त्र, राजा तथा स्त्रियों के आश्रय से, मिट्टी के काम, खेती पड़ती हो; चिकित्सा कार्य, सरकारी नौकरी आदि, उनमें ऐसे

ग्रहों वाले जातक को विशेष सफलता मिलती है।

यदि जन्मकुंडली में द्विस्वभाव राशिगत ग्रह अधिक संख्या में हों तो जातक को व्यवसाय की अपेक्षा अध्यापन, मुनीमी, एजेंसी आदि के कार्यों तथा नौकरियों में अधिक सफलता मिलती है क्योंकि द्विस्वभाव राशिस्थ ग्रहों में चर एवं स्थिर दोनों प्रकार के ग्रहों के सम्मिलित गुण पाये जाते हैं।

यदि तीनों प्रकार की राशियों में से दो बराबर की संख्या में ग्रह हों तथा तीसरी की राशि में कम ग्रह हों तो अधिक ग्रहों वाली दोनों राशियों के बलाबल को देखकर ही जातक के व्यवसाय अथवा नौकरी आदि के सम्बन्ध में विचार करना चाहिए।

यदि लग्न तथा चन्द्र राशि दोनों अलग-अलग हों तो मिश्रित फल प्राप्त होगा। लग्न पर जिस ग्रह की दृष्टि हो उसका प्रभाव भी दृष्टिगोचर होगा। राशि तथा ग्रहों के बलाबल भी फलादेश में अंतर ला देते हैं।

यदि दशम् स्थान में कोई ग्रह न हो तो दशमेश के नवाशेश द्वारा धन-प्राप्ति के सम्बन्ध में विचार करना चाहिए। दशमेश के नवाशेश विभिन्न ग्रहों का फल; यदि सूर्य हो तो व्यवसाय, चिकित्सा, युद्ध कार्य, ठेकेदारी से, यदि चन्द्रमा हो तो जलीय पदार्थ, वस्त्र आदि के व्यवसाय से, यदि मंगल हो तो धातु, शस्त्र, मशीनरी से, यदि बुध हो तो लेखन, व्याख्यान, शिल्प से, यदि गुरु हो तो धार्मिक अथवा न्याय सम्बन्धी कार्य से, यदि शुक्र हो तो पशु, वाहन, स्त्री सेतथा यदि शनि हो तो मजदूर, मजदूरी, श्रम से।

### ग्रहों के आधार पर आजीविका

**सूर्य:** सब ग्रहों का तेजस्वी राजा सूर्य है। यदि सूर्य व्यवसाय का कारक हो तो जातक उच्च श्रेणी का व्यवसाय करता है। सूर्य का सम्बन्ध राज्य से है, उसका सम्बन्ध दूरवर्ती स्थान से भी है। ऐसा जातक अधिक पूँजी लगाकर व्यवसाय करता है। जातक शासनाधिकारी या उच्च पद पर प्रतिष्ठित होता है। सूर्य-शनि या राहु से सम्बन्ध रखता हो तो चिकित्सक बनता है। यदि सूर्य का सम्बन्ध गुरु से हो तो धर्मचार्य, पुजारी आदि होता है।

**चन्द्रः:** जल तत्व प्रधान ग्रह है इससे सम्बन्धित जीविका, पेय पदार्थ, जल, नाविक आदि होती है। चन्द्र का सम्बन्ध राहु से होने पर शराब या मादक औषधियाँ, यदि चन्द्र का सम्बन्ध शुक्र से हो तो सुगंध व तेल। चन्द्र का बुध से सम्बन्ध होने पर खाद्य पदार्थ का व्यवसाय होता है। चन्द्र गुरु का सम्बन्ध

होने पर खाद्य पदार्थ का व्यवसाय होता है। चन्द्र स्त्री ग्रह है, शुक्र-शनि-बुध-स्त्री ग्रह से सम्बन्ध होने के कारण जातक फिल्म लाइन से जुड़ जाता है। चतुर्थभाव से चन्द्रमा का सम्बन्ध होने पर जातक निम्न स्तरीय कर्म से धन उपार्जन करता है।

**मंगलः:** अग्नि तत्व प्रधान ग्रह है। पराक्रम, हिंसा, कर्मठता, रक्त, मांस आदि का अधिपति है, अतः दशम भाव में मंगल प्रधान व्यक्ति सेना, पुलिस, सर्जन आदि होता है। भूमि पुत्र होने के कारण भूमि, भवन, कृषि कार्य, सम्पत्ति को किराये पर उठाने से सम्बन्ध रहता है। मंगल का सम्बन्ध सूर्य के साथ भट्टा, बिजली का सामान, मंगल का सम्बन्ध चन्द्र से होने पर होटल, लॉज, किराये के मकान आदि का व्यवसाय होता है। मंगल लग्न में होने पर चतुर्थेश या एकादशेश से सम्बन्ध होने पर क्लूर कर्मों या चोरी द्वारा धन की प्राप्ति होती है।

**बुधः:** पृथ्वी तत्व का प्रतीक ग्रह बुध है। यह व्यापार का नायक है। यदि बुध लग्नेश, सूर्य तथा चन्द्र को प्रभावित करता है तो जातक अध्यापन कार्य करता है। यदि बुध द्वितीयेश या पंचमेश होकर गुरु से सम्बन्ध हो तो जातक वकील, अध्यापक, उपदेशकर्ता होता है। बुध यदि सूर्य से प्रभावित हो तो कलर्क, लेखाकर, बैंक आदि के पद पर होता है। बुध का शनि-शुक्र से सम्बन्ध होने पर वस्त्र विक्रेता, बुध द्वितीयेश के साथ होने पर ज्योतिषी बना देता है। बुध तृतीयेश होने पर विद्वान लेखक या पत्रकार होता है।

**गुरुः:** वायु तत्व प्रधान ग्रह है। यह विद्या, कानून, वित्त, वाणी, राज्य की कृपा आदि का प्रधान ग्रह है। अधिक बली गुरु न्यायाधीश बनाता है। गुरु द्वितीयेश या एकादशेश होकर लग्न और लग्नेश पर प्रभाव हो तो बैंक, किराया, व्याज, सरकारी आदि का कार्य हो सकता है।

**शुक्रः:** जल तत्व प्रधान ग्रह है। यह भोग-विलास वाला ग्रह है। इसके प्रभाव से कलात्मक तथा सौन्दर्य प्रसाधन वस्तुएं, सुगंध आदि से सम्बन्धित व्यवसाय होते हैं। यदि चतुर्थेश से सम्बन्ध हो तो वाहन आदि से सम्बन्धित कार्य होता है। यदि शुक्र लग्नेश, धनेश अथवा गुरु से प्रभावित हो तो जातक जौहरी होता है। शुक्र चतुर्थ चतुर्थेश के साथ चन्द्रमा को प्रभावित करता हो तो जातक कवि होता है।

**शनिः:** वायु तत्व प्रधान ग्रह है। इसका प्रभाव रोग, धातु, मृत्यु, भूमि, पत्थर आदि पर है। शनि मंगल से प्रभावित हो तो इंजीनियर अथवा बिजली का काम करने वाला होता है। बुध से प्रभावित होने पर बिजली का काम करने वाला, शनि से

सूर्य व राहु प्रभावित होने पर चिकित्सा कार्य, चतुर्थेश शनि होते हैं। इन ग्रहों की शांति के लिए उनकी उपासना करनी पृथ्वी के अंदर वाले पदार्थ तेल, पेट्रोल, कोयला आदि का चाहिए।

कारक है। सप्तम से शनि का सम्बन्ध हो और लग्न या लग्नेश को प्रभावित कर रहा हो तो व्यक्ति भवन-ठेकेदार होता है या उसका व्यवसाय करता है। कम अंश का शनि यदि तुला राशि में हो तो नौकरी करता है।

**राहु-केतु:** छाया ग्रह है। इनका पृथक अस्तित्व नहीं है। किसी की दृष्टि होने पर या युक्ति होने पर कारकत्व को प्राप्त होते हैं। दशम भाव में मंगल प्रधान व्यक्ति चुनौतियों को स्वीकार करते हैं। जब तक जीते हैं, स्वाभिमान से जीवन व्यतीत कर समाज में त्याग व बलिदान की परम्परा डालकर राष्ट्रीय सम्मान भी दशम भाव में हो तो निश्चित है। राष्ट्र में सर्वोच्च सम्मान मिलता है। मंगल के साथ शुक्र की स्थिति कुँडली में हो तो व्यक्ति नाइट क्लब, होटल या मनोरंजन घर, सिनेमा निदेशक इत्यादि हो सकता है। उसका विपरीत लिंग वालों से सम्बन्ध रहता है।

पत्रिका के पिछले अंक (अप्रैल 2007) में हमने शनि से सम्बन्धित विशेष साधना दी थी और इस साधना को हजारों साधकों ने सम्पन्न किया। कई साधकों के पत्र और फोन भी आये, कि शनि के साथ अन्य सारे ग्रहों की अनुकूलता, और श्रेष्ठ ग्रहों को ओर अधिक बली बनाने के लिये कौन सी साधना सम्पन्न करनी चाहिये। जिससे उनके जीवन में उच्चति हो। ज्यादातर लोगों के पास अपनी सही जन्मपत्री इत्यादि भी नहीं होती है अतः नवग्रह साधना ही करना उनके लिये अनुकूल रहता है। इस साधना से जीवन के प्रत्येक पक्ष में श्रेष्ठता प्राप्त होती है तथा ग्रहों के कुप्रभाव को टाला जा सकता है।

### नवग्रह साधना

भारतीय संस्कृति में नवग्रह उपासना का उतना ही महत्त्व है, जितना कि भगवान विष्णु, शिव या अन्य देवताओं की उपासना का। जन्म से ले कर मृत्यु पर्यन्त जितने भी उपनयन, विवाह आदि संस्कार होते हैं, इन सब में नवग्रहों का विशेष महत्त्व है। किसी भी प्रकार का यज्ञ नवग्रह स्थापना के बिना अपूर्ण रहता है, क्योंकि यज्ञ की रक्षा नवग्रहों के माध्यम से ही होती है। इसलिए गणेश आदि की स्थापना के साथ ही साथ नवग्रह की स्थापना होनी भी आवश्यक है।

प्रत्येक राशि का स्वामी कोई न कोई ग्रह होता है। जब कोई ग्रह खराब स्थान में बैठ कर विपरीत प्रभाव उत्पन्न करता है, तब मानव को कष्ट, पीड़ा और दुःख भोगना पड़ता है। जीवन के सुख-दुःख, लाभ-हानि आदि इन्हीं ग्रहों पर आधारित

### **नवग्रह साधना विधि**

नवग्रह शांति जीवन में भाग्योदय के द्वारा खोलती है। इसके प्रभाव से ग्रहों के कुप्रभाव से बचा जा सकता है और पारिवारिक जीवन में आने वाली बाधाओं से छुटकारा मिलता है और जीवन में उच्चति के नये आयाम खुलते हैं और अपने लक्ष्य को पाने में असफल व्यक्ति भी जल्द ही पूर्णता को प्राप्त कर लेता है।

इस प्रयोग को प्रारम्भ करने के लिए सर्वप्रथम अपने पूजा स्थान में पीली धोती पहनकर बैठें एवं सामने बाजोट पर लाल वस्त्र बिछाकर उस पर नौ ढेरियां बनाएं, ये ढेरियां अक्षत की बनाएं। एक-एक ढेरी पर एक-एक ‘नवग्रह गुटिका’ स्थापित करें। उसके सामने एक तांबे के पात्र में स्वस्तिक बनाकर उस पर ‘नवग्रह यंत्र’ स्थापित करें। यंत्र के ऊपर अक्षत चढ़ाएं और कुंकुम, पुष्प से पूजन करें।

उसके बाद एक-एक गुटिका पर प्रत्येक ग्रह का साधनात्मक मंत्र बोलते हुए ग्रह विशेष की गुटिका पर अक्षत चढ़ाएं। प्रत्येक ग्रह का निम्न सौम्य मंत्र बोलते हुए यह क्रिया करनी है। ये मंत्र इस प्रकार है -

**सूर्य :** //ॐ हौं हौं सूर्याय नमः//

**चन्द्र :** // ॐ एं क्लर्तीं सोमायै नमः//

**मंगल :** //ॐ हुं श्रीं मंगलाय नमः//

**बुध :** //ॐ एं श्रीं श्रीं बुधायै नमः//

**गुरु :** //ॐ एं क्लर्तीं बृहस्पत्यै नमः//

**शुक्र :** //ॐ हौं श्रीं शुक्रायै नमः//

**शनि :** //ॐ एं हौं श्रीं शनैश्चरायै नमः//

**राहु :** //ॐ एं हौं राहवे नमः//

**केतु :** //ॐ केतवे एं सौः स्वाहा//

मन ही मन नवग्रह देवताओं का ध्यान करें। इस प्रकार नौ गुटिकाओं के ऊपर पुष्प चढ़ाएं और नवग्रह देवताओं को स्थापित करें और कहें कि आप स्थापित होकर मेरे सभी कार्य निर्विघ्न सम्पन्न करें और मुझे प्रत्येक कार्य में सफलता प्रदान करायें। फिर यंत्र के समक्ष धी का दीपक जलाएं, उसके बाद निम्न मंत्र का 11 माला मंत्र जप नवग्रह माला से करें -

//ॐ सं सर्वारिष्ट निवारणाय नवग्रहेभ्यो नमः//

इस प्रकार जप नियमित 11 दिन तक करें। 11 दिन के बाद सभी सामग्री को किसी मंदिर में चढ़ा कर आ जाएं।

साधना सामग्री - 330-

अतिकूर महाकाय, कल्पान्त दहनोपम।  
भैरवाय नमस्तुभ्यमबुज्ञां वातु महसि॥

सभी प्रकार की पूजा-पाठ में भैरव का स्मरण पूजन आवश्यक है, भैरव का स्वरूप उग्र अवश्य है लेकिन इनकी साधना केवल वाममार्ग से हो, यह भ्रम-मात्र है, भैरव का रूप सात्त्विक, राजस और तामस तीनों ही है। परन्तु यह स्वरूप भैरव द्वारा अपने भक्त के कार्यों की सिद्धि के लिए ही दारण और वरण किया जाता है। इसी क्रम में भगवान् भैरव का अद्भुत स्वरूप है,

# घण्टाकर्णी भैरव जीवन का अनमोल वरदान



शैव तंत्र हो या जैन तंत्र हो या शक्ति तंत्र हो, तीनों ही तंत्र विद्यायों में घण्टाकर्ण देव को भैरव का स्वरूप माना गया है। जैन तंत्रों में प्रमुख रूप से घण्टाकर्ण साधना और पञ्चावती साधना को प्रमुख स्थान दिया गया है। शैव तंत्र में घण्टाकर्ण देव को भक्तों का रक्षक आपति उद्धारक देव माना गया है वहीं शाक मत के अनुसार कोई भी विशेष तांत्रोत्त साधना करने से पहले घण्टाकर्ण साधना अवश्य ही सम्पन्न कर लेनी चाहिए। शिव-शक्ति और कृपा के स्वरूप इस देव की महान् साधना का विवेचन—

शिव के द्वारपाल भैरव माने गये हैं और कोई भी साधना स्थान-स्थान पर जैन धर्म के भैरव मंदिर मूलतः घण्टाकर्ण देव प्रारम्भ करने से पहले दस दिशा बन्धन हेतु अन्य देवताओं के ही मंदिर हैं।

की पूजा से पहले भैरव साधना अवश्य ही सम्पन्न की जाती है, क्योंकि भैरव भगवान् शिव के अग्रणी दूत हैं, द्वारपाल हैं, जिन का नमन कर ही शिव मंदिर में प्रवेश किया जाता है। लोक प्रथा के अनुसार विवाह के पश्चात पति-पत्नी दोनों पहले भैरव मंदिर में जाकर पूजन एवं परिक्रमा करते हैं, क्योंकि भैरव पूजन से ही शिव और शक्ति दोनों का सान्निध्य जीवन में प्राप्त होता है।

जैन धर्म में भी कई भाग हो गये हैं, लेकिन मूर्ति पूजक संप्रदाय में भैरव साधना को प्रमुख स्थान दिया गया है, जिसकी पूजा करने जैन धर्म का अनुयायी अवश्य ही आता है।

बीसवीं शताब्दी के परम विशिष्ट साधक योगीराज अनहदानन्द ने घण्टाकर्ण के बारे में कहा है, 'यह यंत्र आश्चर्यचकित कर देने वाला है, असाध्य से असाध्य कार्यों को साधने वाला तथा त्वरित फल देने में अग्रणी है।' महाप्रभु विज्ञानान्द ने घटाकर्ण यंत्र पर बृहद् ग्रंथ लिखा है। भूमिका में उन्होंने सारांशतः लिखा है कि— जिस दिन दुनिया घटाकर्ण का रहस्य समझ लेगी, उस दिन वह भूखी— नंगी नहीं रहेगी।

त्रिकालदर्शी साधक व्यासाचार्य ने कहा, घटाकर्ण के भेदोपभेद असीम हैं, यह रक्षा कार्यों में गाण्डीव वत् और धन-सम्पदा कार्यों में कुबेरवत् है।

**श्री घंटाकर्ण महावीरः** पुराण संहिता के अनुसार घंटाकर्ण दशमी, पूर्णिमा तिथि और चन्द्र, बुध, गुरुवार का संयोग महावीर भगवान् सदाशिव के ही गण प्रमुख हैं। शिव महापुराण में वर्णित कीर्तिमुख गण की कथा सुप्रसिद्ध है। भगवान् शिव ने उनके पैदा होने पर क्षुधा से अतृप्त होने के कारण स्वयं का मांस खाने को कहा। उन्होंने गुरु के आदेश का पालन किया, विश्वास और समर्पण से भगवान् सदाशिव ने उन्हें कीर्ति-स्तम्भ में सबसे उंचा स्थान प्रदान किया, जिसके फलस्वरूप वे आज भी सर्वप्रथम पूजन के अधिकारी बने। कीर्तिमुख स्तम्भ को दक्षिण भारतीय देव मंदिरों में देखा जा सकता है, चाहे वह तिरुपति मंदिर हो या कन्या कुमारी का मंदिर।

ऐसे ही देवों में घंटाकर्ण भी हैं। इन्हें शिवभक्ति के रूप में बतलाया गया है। इनकी शिवभक्ति इतनी प्रसिद्ध है कि वे अपने इष्टदेव के नाम—गुण सुनने के अतिरिक्त किसी अन्य देव

की महिमा नहीं सुनना चाहते थे, यही नहीं भक्ति की पराकाष्ठा, शिव—शिव, हर—हर होने के लिए अन्य देव की महिमा नहीं सुनने तथा इससे बचने के लिए घंटाकर्ण ने अपने कानों में दो घंटे बांध लिए। जब इनके सामने कोई अन्य देवों की महिमा जिससे अपने इष्ट शिव के अतिरिक्त अन्य देव की महिमा के शब्द अपने कानों तक नहीं पहुंचने देते। भक्ति की अनन्य भक्ति

प्रथम श्लोक पर दृष्टि डालें—

**प्रणम्य गिरिजाकान्तं देदि सिद्धि—प्रदावकम् ।**

**घंटाकर्णस्य कल्पं यत् सर्वकष्ट—निवारणम् ॥**

**घंटाकर्ण यंत्र का स्वरूप**

तेरह सीधी और बारह रेखाएं तिरछी खींचकर बराबर 132 कोष्टक बनाए जाते हैं, और फिर चक्रवत् घंटाकर्ण मंत्र का प्रत्येक अक्षर एक—एक कोष्टक में अंकित किया जाता है।

इस प्रकार घंटाकर्ण मंत्र के 131 अक्षर उन कोष्टकों में लिख दिये जाते हैं, और मध्य के कोष्टक में घंटाकर्ण बीज कल्प घंटाकर्ण बीज कल्प युक्त घंटाकर्ण मंत्र अंकित कर देते हैं। ये 132 खण्ड 132 सिद्धियों के आगार कहे जाते हैं।

**घंटाकर्ण यंत्र पूजन समय**

घंटाकर्ण यंत्र सिद्ध करने के लिए कार्तिक, मार्गशीर्ष तथा ज्येष्ठ मास शुभ कहे गए हैं, साथ ही शुक्ल पक्ष पञ्चमी, ग्रन्थों में भी घंटाकर्ण से सम्बन्धित अनेक यंत्र आदि प्राप्त होते

लिया जा सके, तो श्रेष्ठ रहता है, परम योगी 'छिन्ना स्वामी' के मतानुसार रविवार को हस्तमूल या पुष्ट नक्षत्र हो और उस दिन इसे सिद्ध किया जाए, तो ज्यादा उचित रहता है। पश्चिम रात्रि को यह मंत्र सिद्ध करना पूर्ण सफलतादायक होता है।

महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि सद्गुरुदेव जैसा निर्देश दें, उसी मार्ग पथ का अनुसरण करना चाहिए, जैसा कि कल्प के प्रथम श्लोक से विदित होता है। जहां पर सदाशिव सद्गुरु हैं और पार्वती शिष्या। कारण, ऋषी का गुरु तो उसका पति है तथा जिज्ञासु, धैर्य, विवेकी, श्रद्धा का स्वरूप स्वयं गिरिजा हैं। यही कारण है कि योग्य का चयन होने पर गुरु उनसे (शिष्य) कुछ छिपाते नहीं हैं।

वास्तव में देखा जाए तो इसे यंत्र को भली प्रकार से समझा ही नहीं गया है, यह यंत्र असीम सिद्धियों से परिपूर्ण है। कहते हैं कि कुबेर ने अपने—आप को सर्व ऐश्वर्य सम्पन्न बनाने के लिए भगवान् पशुपतिनाथ से इस यंत्र का रहस्य समझा था कि कुबेर से ही जात हुए थे। यदि कोई साधक या योगी इस यंत्र के भेदोपभेद जानकर इसे सिद्ध कर ले, तो वह विश्व के वश में भगवान् सदाशिव ने 'घंटाकर्ण' को वरदान दिया कि वह यंत्र की श्रेष्ठता तथा जिससे अपने इष्ट शिव के अतिरिक्त अन्य देव की महिमा के रहस्य क्षेत्र से ही जात हुए थे। यदि कोई साधक या योगी शब्द अपने कानों तक नहीं पहुंचने देते। भक्ति की अनन्य भक्ति इस यंत्र के भेदोपभेद जानकर इसे सिद्ध कर ले, तो वह विश्व के दोनों के लिए सेवनीय तथा उपयोगी है।

इस यंत्र के कुल 132 भेद हैं, 132 यंत्र भेद हैं, 132 ही साधना—पद्धतियां हैं, और 132 ही सिद्धियां हैं। जो इस यंत्र के सभी भेद सिद्ध कर लेता है, वह विश्व का बिरला व्यक्ति हो जाता है। उच्छिष्ट, त्रैलोक्य, मोहन, शक्ति, सिद्धि, मृत्युंजय, दक्षिण, नवनिधि, घंटाकर्ण प्रयोग वीर साधना, शत्रुंजय आदि 60 प्रकार के भेद हैं।

**यंत्र निर्माण**

अलग-अलग कार्यों एवं कामना—सिद्धि के लिए अलग-अलग प्रकार से यंत्र का निर्माण होता है। भोजपत्र पर शाखोक्त अंकित यंत्र से पूजन किया जा सकता है, पर उसका स्थायी काल में ताम्रपत्र पर ही इसे उत्कीर्ण कर प्राण—प्रतिष्ठित किया जाना चाहिए।

इस सम्बन्ध में खोज करने पर काफी विवरण मिला है। जैन

है। कलकत्ता लाइब्रेरी में 'घटाकर्ण यंत्र', 'गुद्धति गुद्ध यंत्र' शीर्षक की हस्तलिखित प्रति है जिसमें इसका विस्तृत विवरण है। पटना नेशनल लाइब्रेरी में 'घटाकर्ण कल्प' शीर्षक की हस्तलिखित 32 पन्नों की पुस्तक है, जिसमें घटाकर्ण साधना विधि सही रूप में अनुभवगम्य लिखी हुई है। सेठ रघुनाथ दास जालान लाइब्रेरी में पहली प्रामाणिक हस्तलिखित पोथी है, जिसका नाम 'घटाकर्ण यंत्र-यंत्रसार क्रमांक 12831 हैं' इसमें विस्तार से घटाकर्ण यंत्र साधना, अनुष्ठान पद्धति और 132 घटाकर्ण यंत्र भेद चित्र हैं, जो कि प्रामाणिक हैं, जिसमें प्रत्यके साधना विधि, बाधाओं के निराकरण और उससे सम्बन्धित फल स्पष्ट किए हुए हैं। मूलजी पुस्तकालय बम्बई में घटाकर्ण के 132 भेद यंत्र ताम्रयंत्र पर उत्कीर्ण हैं। श्रीलंका की प्रसिद्ध काली गुफाओं तथा नेपाल के रामगोड़ा मंदिर में यह यंत्र व इसके 132 यंत्र भेद अंकित हैं।

सार्थकता तब है, जब ऐसे अज्ञात रहस्यों को जीवन में साधना के माध्यम से अनुभव किया जाए, और भारत की प्राचीन विद्याओं की थाती को अपने अन्दर जीवन्त-चैतन्य किया जाए। प्रसिद्ध रुद्राभिषेक के मंत्रों का विशेष अज्ञात गोपनीय अर्थ नित्य नवीनता को खोजना है, सृजनता ही शिव है और आनन्द की अनुभूति, लीला सहचरी आद्यशक्ति मां पार्वती।

साधना से पूर्व यंत्र को पूर्ण प्राण-प्रतिष्ठित करने हेतु पांच क्रियाएं विशेष आवश्यक हैं— 1. मंत्र बीज 2. मंत्र बहिन्यास एवं अन्तन्यास, 3. मंत्र उत्कीलन, 4. मंत्र चैतन्य, 5. मंत्र विनियोग।

इसके उपरान्त साधक सिद्ध मुहूर्त में यंत्र स्थापित कर केवल मंत्र-जप करे तो उसे साधना में सफलता मिलती ही है।

प्रत्येक साधक स्वयं न तो यंत्र का निर्माण कर सकता है, और न ही यंत्र की प्राण प्रतिष्ठा हेतु पांच विशेष क्रियाएं सम्पन्न कर सकता है क्योंकि किसी भी एक क्रिया में त्रुटि हो जाने पर यंत्र का प्रभाव ही समाप्त हो जाता है। अतः साधकों को मंत्र से प्राण प्रतिष्ठा युक्त यंत्र ही प्राप्त कर उसे स्थापित करना चाहिए।

मूल रूप से प्रत्येक साधक जीवन में साधना बाह्य बाधाओं और शत्रुओं से रक्षा के लिए तथा दूसरे पक्ष में जीवन में आर्थिक उन्नति के लिए करता है, क्योंकि भौतिक जीवन में वह हर समय भयग्रस्त रहता है। एक अज्ञात आशंका से



जीवन ग्रस्त रहता है कि कहीं कोई शत्रु उसे हानि न पहुंचा दे। यह आंतरिक भय उसे अंदर ही अंदर खाता रहता है।

दूसरी स्थिति में वह अपने जीवन में भौतिक सुख सुविधाओं की पूर्ति के लिए आर्थिक दृष्टि से पूर्ण अनुकूलता चाहता है, जिससे कि उसे अपने जीवन में अर्थ की कमी का अनुभव नहीं करना पड़ेगा और जीवन में कभी भी ऋण नहीं लेना पड़ेगा।

उस सम्बन्ध में दो साधनाएं प्रस्तुत की जा रही हैं। प्रथम साधना आर्थिक उन्नति के लिये है और दूसरी साधना भय बाधाओं से रक्षा प्राप्त करने की साधना है, जिससे कि वह अपना जीवन संसार जंगल में शेर की भाँति निडर हो कर जी सके।

#### १. आर्थिक उन्नति हेतु घटाकर्ण साधना

लेख के प्रारंभ में दिये गये दिनों के अनुसार किसी भी शुभ योग में यह साधना प्रारंभ की जा सकती है। साधना प्रारंभ करने से पहले अपने पूजा स्थान को साफ कर, अपने सामने एक लकड़ी के बाजोट पर सफेद वस्त्र बिछा कर उस पर 'मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठायुक्त घटाकर्ण यंत्र' स्थापित कर दें। यह यंत्र सफेद अक्षत की ढेरी बनाकर उस पर स्थापित करना चाहिए।

साधक को सफेद धोती पहननी चाहिए और सफेद धोती साधना-विधान ही अपने शरीर पर ओढ़नी चाहिए। आसन किसी भी प्रकार का हो सकता है.. उत्तर की तरफ मुंह करके साधना करनी चाहिए।

सर्व प्रथम गुरु पूजन एवं गणपति पूजन अवश्य ही सम्पन्न करना चाहिए, और यदि आपके घर में या पूजा स्थान में पारद शिवलिंग है तो उसका भी पूजन अवश्य ही करना चाहिए।

यह साधना मात्र 11 दिन की होती है और नित्य 40 माला जपनी चाहिए। कमल गड्ढे की माला ज्यादा उपयुक्त है, अन्यथा अन्य किसी प्रकार की माला का प्रयोग किया जा सकता है।

मन्त्र जपते समय शुद्ध धी का दीपक जलता रहना चाहिए। यह मन्त्र ऋण उतारने में अत्यधिक सहायक और प्रभावकारी सिद्ध होता है।

मन्त्र जपते समय सामने 'गोमती चक्र' रख देना चाहिए और इसके सामने ही मन्त्र जप करना चाहिए। जब 11 दिन पूरे हो जायें तो 'गोमती चक्र' को अपनी तिजोरी या आलमारी में रख देना चाहिए।

इससे जीवन में व्यापार वृद्धि और आर्थिक उन्नति अद्भुत ढंग से होती है।

### मन्त्र

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं क्रौं ॐ घण्टाकर्णं महावीरं लक्ष्मीं  
पूर्वय पूर्वय सुखं सौभाग्यं कुरु कुरु स्वाहा!

ज्यारह दिन के पश्चात् यंत्र को अपने पूजा स्थान में ही स्थापित रहने दें और कोई भी नया कार्य प्रारंभ करने से पहले अथवा कोई भी व्यापार या आर्थिक कार्य करने से पहले यंत्र का पूजन कर एक माला मंत्र जप अवश्य ही कर लेना चाहिए।

साधना सामग्री - 370/-

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

### 2. सर्वबाधा शान्ति-घण्टाकर्ण साधना

जीवन है तो बाधायें आती रहती हैं लेकिन यदि पूरा जीवन ही बाधाओं से भर जाय और पग पग पर बाधायें आने लगे तो व्यक्ति निराश हो जाता है, उसे अपना जीवन व्यर्थ लगने लगता है। बाहरी शत्रु तो हावी होने का प्रयास करते ही हैं इसके अलावा घर में भी शान्ति नहीं रहेती, कोई न कोई क्लेश होता ही रहता है। ऐसे उपद्रव की स्थिति में साधक को रक्षा विधान अवश्य ही सम्पन्न करना चाहिए। जिससे उसकी सारी बाधायें समाप्त हो जायें और वह अपना कार्य सरलता पूर्वक कर सके।

### साधना-विधान

भैरव रूपी धण्टाकर्ण देव के तीव्र स्वरूप की साधना रात्रि में ही सम्पन्न की जाती है, और यह साधना कृष्ण पक्ष में अष्टमी, त्रयोदशी और अमावास्या की रात्रि को प्रथम प्रहर बीत जाने के पश्चात् अर्थात् रात्रि को दस बजे के बाद ही प्रारंभ करनी चाहिए।

यह साधना आठ दिन की साधना है। साधना काल के समय साधक लाल वस्त्र धारण करे, अपने सामने एक बाजोट पर लाल रंग से रंगे हुए चावलों को बिछाकर उस पर मध्य में मंत्रसिद्ध प्राणप्रतिष्ठा युक्त घण्टाकर्ण यंत्र स्थापित करे। साधना प्रारंभ करते समय सर्वप्रथम गुरुपूजन अवश्य ही सम्पन्न कर लें और संभव हो तो अपने सामने गुरु चित्र भी स्थापित अवश्य करें।

साधक का मुंह पूर्व दिशा में होना चाहिए तथा 'घण्टाकर्ण यंत्र' का पूजन गंध, अक्षत, धूप-दीप तथा कपूर से सम्पन्न करें। पूजा स्थान में ही एक ओर तेल का दीपक तथा धूप अवश्य ही जलता रहना चाहिए।

अब साधक अपने इष्ट का ध्यान कर मंत्र जप प्रारंभ करे। यह मंत्र 'लाल मूँगा माला' से ही सम्पन्न करना चाहिए। शास्त्र विधान के अनुसार प्रतिदिन 3500 मंत्र का जप करना चाहिए अर्थात् 35 माला मंत्र जप आवश्यक है। मंत्र जप समाप्त होने पर साधक अपने स्थान पर बैठे बैठे ही गुरु आरती और शिव आरती सम्पन्न करें।

बाधा निवारण घण्टाकर्ण मंत्र  
उ॒ँ घण्टाकर्ण॑महावीरो दे॒वदत्त  
सर्वे॑पद्रवनाशनं कुरुकुरु स्वाहा।

यहाँ पर जहां मंत्र में देवदत्त शब्द आया है वहां पर साधक अपने नाम का उच्चारण करें। तीन दिन तक यह मंत्र जप साधना करें और तीन दिन पश्चात् एक बर्तन में अथवा छोटे से यज्ञ कुण्ड में इसी मंत्र की ज्यारह माला आहुति गुगुल की, तिल और जौ तथा हवन सामग्री के साथ मिलाकर यज्ञ सम्पन्न करना चाहिए।

यह साधना इतनी अधिक प्रभावशाली है कि इसका प्रभाव तुरन्त प्राप्त होता है। किसी भी प्रकार का राज्यभय हो, राजकीय बाधा हो, शत्रुबाधा हो, उपद्रव हो वे अपने आप शांत होने लगते हैं। यह साधना एक श्रेष्ठ साधना है जिसे प्रत्येक साधक को अवश्य ही सम्पन्न करनी चाहिए।

साधना सामग्री - 300/-

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆



गणपति विनायक सर्वपूज्य अग्रदेव हैं

जिनकी साधना से शुभारंभ होता है



जीवन में शुभ और लाभ के लिए आवश्यक है लक्ष्मी

अर्थ लक्ष्मी पूर्ण करती है जीवन के मनोरथ

# लक्ष्मी गणेश सायुज्य लक्ष्मी विनायक साधना

जिसे प्राचीन काल से ऋषि-मुनि गुरुजन भी सम्पद्ध करते आ रहे हैं

जिससे जीवन में विघ्नों का नाश हो और अर्थ संपत्ति का आगमन निरन्तर बना रहे  
इसीलिए राजा, सम्राट् भी ऋषियों को नमन करते थे,

ऐसी अद्भुत साधना गृहस्थ साधकों हेतु -

लक्ष्मी और विनायक की पूजा अर्चना प्रत्येक शुभ अवसर के आरम्भ में की जाती रही है, और इसी से शब्द बना है - गणेश मठ के अधिरक्षक के रूप में गणेश की पूजा का उल्लेख गया कि श्री गणेश का तात्पर्य उस 'श्री' अर्थात् लक्ष्मी और गणेश साधना से है, जिसे 'श्री गणेश साधना' या 'लक्ष्मी विनायक' साधना कहा जाता है। कालान्तर में साधना तो विलुप्त हो गई परन्तु परम्परागत रूप में लक्ष्मी गणेश की पूजा अभी भी प्रत्येक हिन्दू परिवार में प्रचलित है ही।

एवं विनायकं पूज्य ग्रहांश्चैव विधान्तः ।  
कर्मणा फलमाप्नोति श्रिय माप्नोत्यनुत्तमम् ॥

(याज्ञवल्क्य स्मृति आचाराध्याय २९२)

अर्थात् गणपति की पूजा करके नव ग्रह पूजन करना चाहिए, जिससे समस्त कार्यों का फल प्राप्त हो और लक्ष्मी की भी प्राप्ति होती रहे।

गणेश पूजन भारत में ही नहीं अपितु कई देशों में अलग-अलग नामों से प्रचलित है। नेपाल में बौद्धर्थावलम्बी 'हेरम्ब'

नाम से गणपति की ही साधना करते हैं। चीन में गणेश 'विनायक' एवं 'कांगनेन' नामों से विख्यात हैं। तिब्बत में स्वरूपों की साधना से अलग लक्ष्यों की प्राप्ति होती है परन्तु

सफलता संभव नहीं है। प्रत्येक कार्य को सम्पादित करने के लिए आज के युग में ही नहीं ऋषि काल से ही अर्थ एक प्रधान आवश्यकता रहा है। ऋषि कुलों में शिष्य ही विद्यार्थी हुआ

करते थे और उन सभी के भोजनादि की व्यवस्था का भार ऋषि या गुरुओं पर ही होता था, तो ऋषियों ने आवश्यक साधनों की पूर्ति के लिए लक्ष्मी को साधना के माध्यम से ही अनुकूल बनाया। यह कोई आवश्यक नहीं है कि लक्ष्मी का

उपयोग केवल भोग विलास इत्यादि के लिए ही होता है। जीवन में देव तीर्थ यात्रा, देवालय या विद्यालय निर्माण, सुकृत कार्यों के लिए भी लक्ष्मी की पूर्ण अहेतु कृपा आवश्यक है। श्रेष्ठ कार्यों के लिए यदि बार-बार विघ्न आ रहे हैं, तो ऐसे अवसर पर लक्ष्मी के साथ ही साथ भगवान विघ्नविनायक गणेश की कृपा भी अनिवार्य है।

लक्ष्मी विनायक साधना के लाभ

1. लक्ष्मी के यों तो अनेकों रूप हैं, और अलग-अलग

यहां लक्ष्मी के जिस स्वरूप की साधना की बात हो रही है, भाँति प्रबुद्ध हो जाता है।

वह 'अर्थ लक्ष्मी' है और अर्थ ही आज के युग में एक प्रधान शक्ति है। यदि अर्थ है, तो अन्य समस्त साधन इस धन बल के आधार पर प्राप्त किए जा सकते हैं। इस साधना द्वारा अर्थभाव जैसी समस्या या अर्थ संकट से निवृत्ति मिल जाती है।

2. इस साधना के पश्चात् साधक जिस कार्य में हाथ डालता है, उसे लाभ ही लाभ प्राप्त होता है। व्यापारियों के लिए इस साधना का विशेष महत्व है, टेण्डर भरते समय जिस भी पक्ष में वह निर्णय लेता है, उसे लाभ ही लाभ मिलता है, हानि के आसार नहीं होते हैं।

3. इस साधना द्वारा साधक विवेकवान बन जाता है। भगवान गणेश का विशाल मस्तक उनके विपुल ज्ञान का परिचायक है, उनके बड़े कान इस बात का प्रतीक है कि व्यक्ति को बोलना कम पर सुनना अधिक चाहिए। कानों पर यदि नियंत्रण हो जाए, तो व्यक्ति बहुत परिष्कृत हो जाता है। इन्हीं कानों द्वारा व्यक्ति अच्छी एवं बुरी बात दोनों ही सुनता है। यदि उसका अपने कानों पर नियंत्रण हो तो अच्छी बातों का सार तो वह ग्रहण कर आत्मसात कर लेता है, परन्तु परनिन्दा, अपशब्द और छल, प्रपञ्च, व्यभिचार आदि मन को दूषित करने वाली बातों का उसके कान पर असर नहीं होता है, अर्थात् उसके मन पर कोई प्रभाव नहीं होता है। बड़े कान इसी बात का प्रतीक हैं, कि साधक का अपने कानों पर नियंत्रण होना चाहिए अन्यथा वह कुशब्द, अपमान आदि सुन कर क्रोध कर सकता है, विचलित हो सकता है और अपने स्तर से गिर सकता है। इस साधना से साधक का मन और कर्ण-शक्ति सबल होते हैं।

4. भगवान गणेश की जो सूंड है, वह लम्बी नाक है। लम्बी नाक अर्थात् सम्मान का प्रतीक है। यह सर्व विदित है कि नाक कट जाने का अर्थ है, घोर अपमान होना। इस साधना द्वारा व्यक्ति को समाज और परिवार में एक सम्मानजनक स्थान प्राप्त होता है, लोग उसके गुणों की प्रशंसा करते हैं। बिना सम्मानित हुए जीवन के सभी ऐश्वर्य भी व्यर्थ हैं।

5. इस साधना द्वारा साधक के अन्दर धीरता, गम्भीरता और उदात्त व्यक्तित्व के गुण जाग्रत होते हैं। गणेश जी को लम्बोदर कहा गया है। लम्बा उदर गंभीरता का परिचायक है। छोटा पेट मतलब जिसके पेट में बात पचती न हो, ऐसी मूर्खता पूर्ण वाचाल प्रवृत्ति के कारण कई लोग उपहास के पात्र बन जाते हैं और समाज में सम्मान नहीं प्राप्त कर पाते। ज्ञानी पुरुष धीर, गंभीर, मितभाषी होते हैं, हर बात को मुख से अनायास ही नहीं उगल देते। इस साधना द्वारा व्यक्ति लम्बोदर की ही

6. कैसा भी कार्य हो, चाहे वह ईश्वर प्राप्ति हो या दैनिक जीवन से सम्बन्धित कोई कार्य, उसके सफलताभूत होने में यदि संदेह आ गया तो सफलता की संभावना यों ही क्षीण हो जाती है - 'संश्यात्मा विनश्यति'। इस संदेह, तर्क, कुर्तक से साधक की शक्ति क्षीण हो जाती है। गणपति का मूषक (चूहा) इसी तर्क का प्रतीक है, मूषक की आदत है अच्छी वस्तुओं को कुतर कुतर कर काट डालना, परन्तु गणपति उसे अपने ज्ञान भार से दबाए हुए उस पर नियंत्रण बनाए रखते हैं, इस पर हावी रहते हैं। इस साधना द्वारा साधक के सभी सन्देह, कुर्तक समाप्त होते हैं। उसके आंतरिक ज्ञान द्वारा उसके सभी संदेह समाप्त होते हैं और उसे सद्गुरु की कृपा प्राप्त होती है क्योंकि संशय के समाप्त होने के बाद ही साधनाओं में सफलता की स्थिति बनती है।

7. यदि आप बेरोजगार हैं, आपके बार-बार आवेदन करने पर भी आपको रोजगार के, या आय के उचित स्रोत नहीं मिल पा रहे हैं, तो यह साधना की जा सकती है। इस साधना को प्रारम्भ करते समय अपनी मनोकामना गुरु चित्र के समक्ष बोलनी चाहिए। यदि आपकी सफलता में कोई विघ्न है तो वह स्वतः समाप्त हो जाता है।

8. प्रमुख रूप से यह लक्ष्मी विनायक साधना किसी विशेष कार्य में सफलता प्राप्त करने के लिए की जाती है। यदि आप अपने किसी मनोवांछित लक्ष्य की ओर शीघ्रता से गतिशील होना चाहते हैं, तो यह साधना श्रेष्ठ है, मूलतः यह सर्व कार्य सिद्धि साधना ही है।

#### लक्ष्मी विनायक साधना विधि

यह 7 दिन की साधना है, जिसे बुधवार अथवा किसी भी चतुर्थी से प्रारम्भ किया जा सकता है। प्रातः काल स्नानादि से निवृत होकर शुद्ध पीली धोती धारण करें, ऊपर से गुरु पीताम्बर ओढ़ लें। इसके बाद सामने गुरु चित्र को स्थापित कर उसे पानी का ढींटा देकर पौँछ लें। धूप, कुंकुम, अक्षत, पुष्पादि से गुरु चित्र का संक्षिप्त पूजन करें, फिर दोनों हाथ जोड़कर गुरुदेव का ध्यान करें -

#### गुरु ध्यान

गुरुरुरुपमेवं गुरुर्बह्य रूपं, विष्णुश्च रुद्रं देवं वदाम्यं।  
गुरुर्वेऽगुरुर्वेऽपरम पूज्यरूपं, गुरुर्वेऽसदाऽहं प्रणम्यं नमामि॥  
त्वं नाथ पूर्णं त्वं देव पूर्णं, अत्मा च पूर्णं ज्ञानं च पूर्णं,  
अहं त्वां प्रपञ्चं सदाऽहं, शरण्यं शरण्यं गुरुर्वेऽशरण्यं॥

चित्र के सामने एक थाली में हल्दी, कुंकुम और अक्षत से

एक बड़ा स्वस्तिक बनाएं। उस पर 'लक्ष्मी विनायक यंत्र' का यंत्र पूजन स्थापन करें। यंत्र के मध्य में 'सिद्धेश्वरी लक्ष्मी फल' स्थापित करें। धूप, दीप आदि जला दें। फिर दाहिने हाथ में जल लेकर निम्न विनियोग पढ़कर जल को भूमि पर छोड़ दें।

### विनियोग

अस्य श्री लक्ष्मी विनायक मंत्रस्य अन्तर्यामी  
ऋषिः गायत्री छन्दे: लक्ष्मी विनायको देवता श्री  
बीजं स्वाहा शक्तिः अत्मनोभीष्ट सिद्धयर्थं जपे  
विनियोगः।

### ऋष्यादिन्यास

दाएं हाथ से शरीर के निर्दिष्ट अंगों का स्पर्श करें।

ॐ अन्तर्यामित्रश्वर्ये नमः (सिर)

गायत्री छन्दसे नमः (मुख)

लक्ष्मी विनायक देवतायै नमः (हृदय)

श्रीं बीजाय नमः (गुह्य स्थान)

स्वाहा शक्त्यै नमः (दोनों पैर)

### षडङ्गन्यास

निम्न मंत्र बोलते हुए विभिन्न अंगों को स्पर्श करें जिससे उसमें साधना हेतु आवश्यक ऊर्जा स्थापित हो सके।

ॐ श्रीं गां हृदयाय नमः (हृदय का स्पर्श करें)

ॐ श्रीं गौं शिरसे स्वाहा (सिर)

ॐ श्रीं गूं शिखायै वृष्ट (शिखा)

ॐ श्रीं गौं कवचाय हुं (दाएं हाथ से बाएं कन्धे एवं बाएं हाथ से दाएं कन्धे को स्पर्श करें)

ॐ श्रीं गौं नेत्रत्रयाय वौषट् (दोनों नेत्र)

ॐ श्रीं गः अस्त्राय फट् (दाहिने हाथ को सिर पर तीन बार धुमा कर तीन बार ताली बजाएं)

### लक्ष्मी विनायक ध्यान

लक्ष्मी विनायक के स्वरूप का ध्यान करते हुए उच्चारण निम्न श्लोक का करें तथा यंत्र पर एक पुष्प चढ़ाएं-

दन्तभये चक्रदरौ दधानं,  
कराणगस्वर्णघटं त्रिनेत्रम्।  
थृताब्जया लिङ्गितमधिषुव्या  
लक्ष्मी गणेशं कनकाभ्मीडे॥

**भावार्थ** - दाहिने हाथ में दन्त एवं शंख तथा बाएं हाथ में अभय एवं चक्र धारण किए हुए भगवान गणेश तथा एक हाथ में कमल तथा दूसरे हाथ में सुवर्ण निर्मित घट लिए हुए महालक्ष्मी की मैं वन्दना करता हूं।

गणपति के निम्न मंत्र बोलते हुए यंत्र पर आठ दिशाओं में हल्दी के क्रमशः आठ बिन्दियां लगाएं।

ॐ वक्तुण्डाय नमः।

ॐ एकदंष्ट्राय नमः।

ॐ महोदराय नमः।

ॐ जजास्वाय नमः।

ॐ लम्बोदराय नमः।

ॐ विकटाय नमः।

ॐ विघ्नराजाय नमः।

ॐ विनायकाय नमः।

इसके बाद कुंकुम से उसी प्रकार आठ दिशाओं में यंत्र पर आठ बिन्दियां लगाते हुए लक्ष्मी की पूजा करें -

ॐ लोहिताक्ष्यै नमः।

ॐ करात्ल्यै नमः।

ॐ पुष्ट्यै नमः।

ॐ दिव्यायै नमः।

ॐ नीतल्लोहितायै नमः।

ॐ वारुण्यै नमः।

ॐ अमोघायै नमः।

ॐ महालक्ष्म्यै नमः।

इसके बाद 'वैनायकी दिव्योत्तमा माला' से निम्न मंत्र की 4 माला जप करें -

### लक्ष्मी विनायक मंत्र

॥ॐ श्रीं गं सौम्याय गणपत्ये वर वरदे  
सर्वजनं मे दशमान्त्य स्वाहा॥

7 दिन की इस साधना के बाद यंत्र व माला को जल में विसर्जित करें। इस साधना को बुधवार से प्रारम्भ कर अगले मंगलवार तक सात दिन सम्पन्न करना है। नित्य प्रति गुरु ध्यान, पूजन आवश्यक है। यंत्र को नित्य जल से धोकर पूजन करें और उस पर कुंकुम, अक्षत चढ़ायें। लक्ष्मी विनायक मंत्र की चार माला मंत्र जप आवश्यक है।

**आतः विठिष्ट साधना सामग्री तो उपहार स्वरूप ही है साथ ही इसके माध्यम से गुरु कार्य के रूप में आप अपने दो मित्रों को पत्रिका सदस्य बनाएं तथा कार्ड क्रं 6 पर अपने दोनों मित्रों का पता लिखकर भेजो। कार्ड मिलने पर 490/- की ती.पी.पी. द्वारा आपको इस साधना की मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठायुक्त सामग्री भेज देंगे तथा दोनों मित्रों को एक वर्ष तक नियमित रूप से पत्रिका भेजी जाएगी।**

# क्री

## बीज मंत्र

अंकाव आ वह तेजस्वी मंत्र जो  
महाशक्तियों आ आधाव है,  
जिक्षणो जपने मात्र क्षे कोम कोम  
चैतन्य हो जाता है,  
आत्मविश्वास जाग्रत हो जाता है  
साधक अवश्य 'क्री' साधना अकें  
और  
धारण अकें 'क्री' माला

वट वृक्ष की विशालता अपने आप में अद्वितीय होती है। उस बीजाक्षर का बार-बार उच्चारण करें, तो उससे जो बोधत्व उसकी तुलना में उसके बीज बहुत ही छोटे होते हैं लेकिन उस की स्पष्टता होती है वही उसकी मूल शक्ति होती है। उदाहरणार्थ वृक्ष से कम महत्व उसके बीज का नहीं होता है, अर्थात् बीज क्रीं बीज मंत्र के घटक अक्षरों का निम्न प्रकार से अपना अलग अपने आप में पूर्ण क्षमता रखता है, आवश्यकता है उसे अलग महत्व है -

नियमित रूप से खाद-पानी देने की, देखभाल करने की। ठीक इसी प्रकार साधनाओं के क्षेत्र में भी बीज मंत्रों की साधना अपने आप में पूर्ण सफल व शक्तिशाली होती है।

क्रीं बीज अपने आप में पूर्ण बीज मंत्र है जिससे पूर्णता तक प्राप्त किया जा सकता है। क्रीं बीज अपने आप में संयुक्त बीज है, जिसका हम 'यदि सन्धि विच्छेद करें, तो उसके मंत्रों की शक्ति अपने घटक मूल बीज अक्षरों की संयुक्त शक्ति से भी कई गुना अधिक तीव्र एवं तीक्ष्ण होती है। क्रीं बीज संयुक्त होकर पूर्ण बना है और पूर्ण बना है तो उसकी साधना और उसको हृदय में स्थापित करने से ही पूर्णता तक को प्राप्त किया जा सकता है, अन्य साधना की आवश्यकता ही न्यून हो जाती है।

क्रीं (=क+अ+र+ई+अं) का यदि ध्वन्यात्मक आधार पर उच्चारण के अनुरूप पूर्ण विच्छेद करें तो निम्न प्रकार से किया जा सकता है -

क्रीं = क+अ+र+अ+ई+अ+न+ज+ह, या

क्रीं = क+अ+र+अ+ई+अ+न+ग+ह

यदि हम किसी बीजाक्षर का निष्प्रह सम्वेदन पूर्ण भाव से बार उच्चारण करें, तो कुछ समय बार हमें 'र' अक्षर में स्वयं

क - यदि क... क... क... का उच्चारण करें, तो कुछ समय बाद में हमें 'क' के उच्चारण में किसी मूल भावभूमि की 'अस्पष्टता' का बोध होने लगता है। साधना में इसकी प्रभावशीलता यह है कि जो कुछ साधक के अन्दर पाप, दोष आदि के व्यर्थ संग्रह हैं वे समाप्त होने लगते हैं। 'अ' की संगत पाकर पूर्ण रूप से अस्पष्टता विलीन हो जाती है और जब विलीन होने की क्रिया होती है, तो वह क्रिया इस ब्रह्माण्ड में ही होती है, जिससे हमारी अन्तश्चेतना का उदय होने लगता है। बाहरी चेतना स्थिर होने लगती है।

अ - यदि 'अ' शब्द को अ... अ... अ... अ... का उच्चारण करें, तो कुछ समय बाद किसी को मूल भावभूमि की विस्तारिता का बोध होने लगता है। अर्थात् साधना में इसका प्रभाव अपने स्वयं के विस्तारित होने से है। इसके प्रभाव से हमारी चेतना पूर्ण विस्तार के स्वरूप को प्राप्त कर पाती है। यही कारण है कि प्रत्येक व्यंजन में स्वर का प्रयोग अंशतः किया ही जाता है। मानवीय चेतना भी मूलतः एक व्यंजन है, जिसे स्वर के माध्यम से ही विस्तारित करना होता है।

र - यदि इस अक्षर का र... र... र... र... करते हुए बार

के स्थापित होने का भेद होने लगता है, इससे मूल भावभूमि अपने पूर्ण स्थापित होने की क्रिया सम्पन्न होती है। चूंकि यदि स्थापित नहीं होगी, तो समयानुसार पुनः परिवर्तित हो जाएगी। 'र' अक्षर का बोध 'अ' अक्षर के सहयोग से स्थायित्व के विस्तार को प्राप्त कर लेता है। साधना में इसका प्रभाव यह है, कि अन्तश्चेतना का मूल भावभूमि ब्रह्माण्ड चेतना में स्थापित होकर स्थायित्व को विस्तारित करने में सफल हो जाती है। इससे व्यक्तित्व सदैव चेतना से आपूरित बना रहता है।

ई - यदि ई... ई... ई... ई... का उच्चारण करें तो कुछ समय बाद हमें इ में मूल भावभूमि के सम्बन्ध का बोध प्राप्त होने लगता है अर्थात् चेतना की मूल भावभूमि अपने विराटता के सम्बन्धों का प्राप्त करने में सफल होने लगती है। सम्बन्धों को स्पष्टता तो स्वर से ही होती है।

न - यदि न... न... न... न... का उच्चारण करें, तो कुछ समय बाद विच्छेद की स्थिति के भावभूमि का बोध होने लगता है, अर्थात् जो कुछ अस्पष्ट व अज्ञात था वह अब स्पष्ट होकर ज्ञात हो श्रृंखलाबद्ध होने लगता है जिससे विराटता में निहित अंशों का भी बोध होने लगता है। साधना में इसका प्रभाव अन्तश्चेतना में समायी विराटता के अंश का ज्ञान होने लगता है अर्थात् ब्रह्माण्ड में अपने अस्तित्व का बोध होने लगता है।

ग - यदि ग... ग... ग... का उच्चारण करें तो कुछ समय उपरात भावभूमि के लयबद्धता का बोध होने लगता है। अर्थात् जो कुछ विराटता, अंश और बाह्य की चेतना में चैतन्यता थी, उसमें लयबद्धता एकलयता अर्थात् समायोजन की क्रिया सम्पन्न होने लगती है। साधना में इसका प्रभाव यह है, कि हम अन्तः रस और बाह्य चैतन्यता को समायोजित करने में सफलता प्राप्त कर लेते हैं, और उससे हमारे सौन्दर्य और सफलता में पूर्ण वृद्धि होती है।

ह- यदि ह... ह... ह... अक्षर का उच्चारण करें तो कुछ समय बाद भावभूमि में उद्विग्नता का बोध होने लगता है, अर्थात् चेतना, जो अपना पूर्ण समायोजन अन्तस और बाह्य में स्थापित कर चुकी है, उसमें क्रियाशीलता के क्रियात्मक पक्ष बनें, बनते रहें। इससे भावी अर्थात् भविष्य के क्रियात्मक कार्यों को नियोजित और सम्पादित किया जा सके, जिससे चेतना ब्रह्माण्ड से तारतम्य बनाते हुए भूत, भविष्य वर्तमान के वर्तुल में चलता रहें। साधना में इसका प्रभाव यह है, कि शिथिलता नहीं आती, और नित्य नई योजनाएं कार्य रूप लेती रहती हैं, जिससे चेतना के शून्य होने का अवसर नहीं रहता है।



उक्त व्याख्यान से पूर्णतः स्पष्ट होता है कि 'क्रीं' बीज अपने आप में पूर्ण चेतनायुक्त बीज है, जिसे प्राप्त कर जीवन को उस स्तर का बनाया जा सकता है, जो सामान्यतः सम्भव नहीं है। बीजाक्षर जो सामान्य दिखाई दे रहा है, उसमें अद्भुत क्षमता समाहित है। गाढ़ी कितनी ही बड़ी हो, लेकिन चाबी बहुत छोटी सी ही होती है। दुनिया कितनी ही बड़ी हो, लेकिन उसका दर्शन इन्हीं छोटी-छोटी दो आंखों से किया जाता है।

वैसे तो 'क्रीं' बीज महाकाली का बीज मंत्र माना जाता है लेकिन काली के अवतरण से पहले ही जब सृष्टि की उत्पत्ति हो रही थी, तब ही हो गया था अर्थात् स्पष्ट रूप में क्रीं बीज से ही महाकाली की उत्पत्ति हुई है। यह बात स्पष्ट है कि क्रीं बीज की साधना से बीजाक्षर में समाहित महाकाली के समान क्षमता और तेजस्विता को गुरु के माध्यम से प्राप्त किया जा सकता है। क्रीं बीज पूर्णतः तत्वेष्टित बीज है, जिसके माध्यम से साधक तत्वदर्शी बनकर उस परम तत्व को भी प्राप्त कर सकता है और तत्व का ही दूसरा रूप शक्ति है, इसीलिए इसे शक्ति बीज भी कहते हैं।

गुरु गोरखनाथ बचपन से ही शक्ति साधक रहे हैं। उन्होंने अपने जीवन में क्रीं की साधना को सम्पन्न किया और जीवन को क्रान्तिकारी बना सके, उस परम तत्व को प्राप्त कर सके

और जीवन में पूर्ण शिष्यत्व को धारण करते हुए भी युगपुरुष बन सके।

आज भी साधनाओं को उसी प्रकार सम्पन्न कर कोई भी उस उच्चता को प्राप्त कर सकता है। ब्रह्माण्ड की समस्त शक्ति ही इस मंत्र में, बीजाक्षर में समाहित है, जिसे धारण कर उन शक्तियों को प्राप्त किया जा सकता है।

जीवन का यह सौभाग्य होता है कि व्यक्ति को कोई क्षमतावान सशक्त गुरु मिलता है जो कृपा स्वरूप क्रीं बीज की दीक्षा प्रदान कर पूर्णता के साथ क्रीं बीज को हृदय में स्थापित कर दे। नियमित साधना रूपी खाद, पानी से वह बीज अवश्य एक दिन विराट वृक्ष बनेगा ही। जीवन में ऐसी क्रिया सम्पन्न हो यह जीवन का बहुत ही बड़ा सौभाग्य है, जीवन की सार्थकता इसी में है परन्तु इसके लिए आपको स्वयं प्रयास करना होगा।

किसी का सौभाग्य किसी की चौखट पर दस्तक नहीं देता, उसे सप्रयास बलपूर्वक प्राप्त करना ही पड़ता है।

बाधाएं और समस्याएं तो जीवन में हैं ही, और रहेंगी भी, यह तो सदा का खेल है। यदि हम इन्हीं में उलझ कर रह गए, तो जीवन का सृजन करेंगे?

जीवन की सार्थकता को कब प्राप्त कर पाएंगे?

#### साधना विधि

इस साधना को सम्पन्न करने के लिए न ही कोई समय अवधि या दिशा निर्धारित है और न ही कोई विशेष दिवस या मुहूर्त ही। साधक अपनी सुविधा एवं स्वेच्छानुसार कभी भी इस साधना को प्रारम्भ कर सकता है। साधक श्रद्धा, विश्वास तथा पूर्ण सम्वेदनशीलता के साथ जप सम्पन्न करे। इस साधना में असफलता तो है ही नहीं, सफलता का मानदण्ड उसके अन्दर निहित चैतन्यता स्वयं ही बता देगी।

रात्रिकाल में एकान्त में स्वच्छ वस्त्र धारण कर शान्तिपूर्ण वातावरण में किसी सुन्दर पात्र में सामने 'क्रीं यंत्र' को स्थापित करें। उसके ऊपर 'क्रीं माला' को रख दें। यंत्र के सामने धी का दीपक जलाएं। यंत्र और माला के प्रभाव से जलता हुआ दीपक स्वयं क्रीं दीपक हो जाता है। इस क्रीं दीपक से क्रीं बीज की आभा और प्रकाश स्वयं स्पष्ट होने लगता है। मंत्र जप

#### देखण में छोटण लगे, काज करें गंभीर

छोटा और बड़ा तो क्थूल रूप है, आकाव है और अद्यात्म में क्थूल ओ छहुत अधिक महत्व नहीं दिया जाता, महत्व तो उक्ते अूक्म पक्ष ओ ही दिया जाता है, उक्तमें निहित तत्व ओ ही दिया जाता है। मंत्र ओ छोटा या बड़ा होने के उक्तें शक्ति अम या अधिक आंकी नहीं जा जाती है। उक्तके जीवन में यद्य पवित्रता आता है, उक्तमें यद्य यद्य अंभावनाएं निहित हैं, वही उक्तें शक्ति है। एक छोटे के हीकठ खण्ड ओ मूल्य भी एक विशाल पर्वत खण्ड के अधिक हो जाता है। छीज मंत्रों ओ आपने आप में इकीलिए छतना महत्व है। इन्हीं छीज मंत्रों ओ जोड़कर जहां दीर्घ मंत्रों ओ विधान है, वहीं ये लघु छीज मंत्र जाधार के लिए 'माक्टक छी' ओ आम अकते हैं, ये मंत्र जपने में अत्यंत ही ज्ञान होते हैं, जिन्हें कोई भी व्यक्ति छड़े ही आकाम के बिना फिरी उच्चावण दोष के अपने अक असफलता प्राप्त अक जाता है।

प्रारम्भ करने से पूर्व यंत्र और माला पर कुंकुम, अक्षत अर्पित करें, फिर क्रीं माला से मंत्र जप प्रारम्भ करें।

मंत्र

//क्रीं//

इस प्रकार नित्य या जब भी अवसर मिले मंत्र का जप जितना हो सके, करते रहना चाहिए, इसमें किसी प्रकार का कोई विशेष नियम आदि नहीं है।

शक्ति के उपासकों को 'क्रीं' बीज मंत्र की साधना अवश्य ही सम्पन्न करनी चाहिये। जिससे साधना सिद्धि की आधार भावभूमि बन सकें।

किसी विशेष कार्य पर जाने से पहले 'क्रीं' माला से एक माला मंत्र जप करने से कार्य में सफलता के मार्ग में आने वाली बाधाएं समाप्त हो जाती हैं।

'क्रीं' साधना से शारीरिक दोष समाप्त होकर चेहरे पर विशेष आभा और तेज आ जाता है।

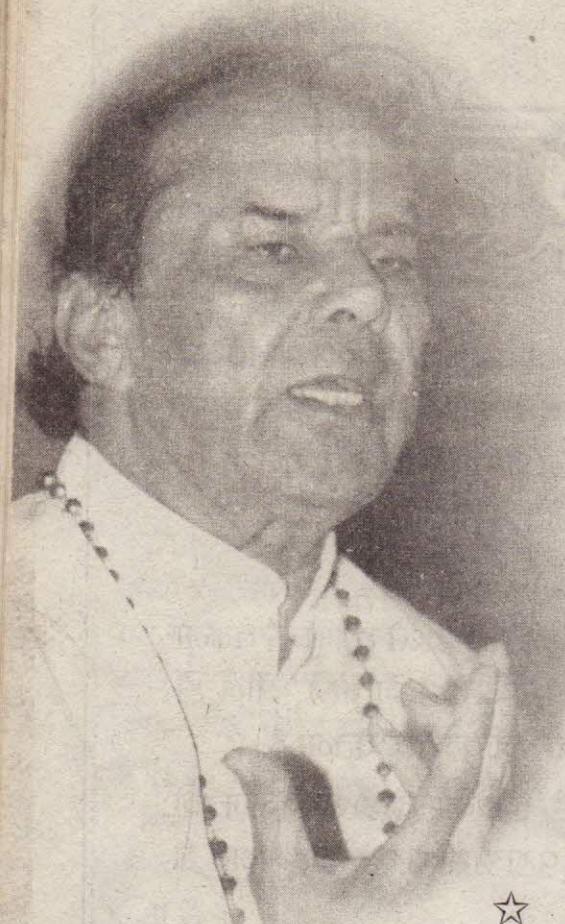
भयमुक्त, विजयभाव युक्त जीवन में आवश्यक है, कि साधक 'क्रीं' साधना नियमित रूप से करें।

साधना सामग्री - 330/-

# शिष्य धर्म

- ❖ तुम्हें अपने जीवन में रकना ही नहीं है, तुम्हें अपने जीवन में एक क्षण भी विचार नहीं करना है, क्योंकि तुम्हारा जीवन बहुत थोड़ा सा बच गया है और पगड़ंडी बहुत लम्बी है। हिमालय से पूरी समुद्र तक की यात्रा, जीवन में धीरे-धीरे चलने से समुद्र नहीं मिल सकेगा क्योंकि नदी धीरे-धीरे चलेगी तो बीच में ही सूख जाएगी।
- ❖ यह रस्ता तुम्हारा नहीं है, तुम मेरी तरफ आओ।
- ❖ बाधाएं आज भी तुम्हारे सामने हैं, मगर इन बाधाओं को पार करते हुए तुम्हें बढ़ना है... और जिस समय तुम मुझमें... अपने-आप में विसर्जित हो जाओगे, लीन हो जाओगे, वही जीवन का लक्ष्य, जीवन का आनन्द और जीवन की चेतना है।
- ❖ इस बार तुम्हें जीवन में अपने-आप को पहचानना है, इस बार तुम्हें ऐंगिस्तान की ओर भटकना नहीं है, इस बार पहाड़ से टकराना है, पहाड़ से भी नहीं, हिमालय से टकराना है।
- ❖ ये चारों तरफ की बाधाएं, चारों तरफ की अड़चनें, चारों तरफ की कठिनाइयां तुम्हें जीवन में आनन्द प्रदान करने की ओर अग्रसर नहीं कर रही है, क्योंकि तुम्हारा मूलभूत विन्तन, तुम्हारा मूलभूत विचार, तुम्हारी मूलभूत धारणा वासनामय है... यह अपने-आप को मौत की ओर अग्रसर करने की क्रिया है। तुम्हें यह क्रिया नहीं करनी है।
- ❖ दीन-हीन बनना शिष्य बनने की क्रिया नहीं है, दीन-हीन बनकर पिता और पुत्र बनने की क्रिया भी नहीं है, दीन-हीन बनकर जीवनयापन और जीवन में विन्तन करने की जरूरत भी नहीं है। इस समय तुम्हें अपने पूरे प्राणों का विस्फोट करना है और ऐसा विस्फोट करना है कि वह जीवन का एक अद्वितीय क्षण बन सके।
- ❖ जब उछल जाने की क्रिया तुम्हारे जीवन में बनेगी, जब तुम्हारे प्राणों में विस्फोट होगा, जब तुम्हारे प्राणों में चेतना बनेगी, जब तुम्हारे प्राणों में ऊर्ध्वमुखी बनने की क्रिया बनेगी, तब तुम सही अर्थों में शिष्य बन सकोगे।
- ❖ इस बार तुम जन्म लेने की क्रिया नहीं करो, इस बार तुम वापस मल-मूल में विसर्जित नहीं होओ, इस बार तुम वापस क्षुद्रता नहीं प्राप्त करो, इस बार तुम्हें एक गति प्राप्त करनी है... और यह जीवन, तुम्हारा अनितम जीवन बने, अपने-आप में एक विमुक्त जीवन बने।

# गुरु व्यापरी



★ साधना के पथ पर न तो पुरुष होता है और न कोई स्त्री, वह तो सम्पूर्ण साधक होता है।

★ जब शिष्य गुरु के पास आता है, तो बिलकुल एक मिट्टी के लौंडि की तरह होता है। वे उसको शीतलता युक्त घड़े में परिवर्तित कर देते हैं। इस क्रिया को करने के लिए गुरु को बाह्य सूप से आघात करना पड़ता है, लेकिन आंतरिक सूप से वे अपनी कृपा ही प्रदान करते हैं।

★ एक जलती मशाल को तेजी से गोल घेरे में धुमाया जाए, तो उससे बना रोशनी का वृत्त न वास्तविक होता है न अवास्तविक दीप। उसी प्रकार से यह जीवन श्रुंखला भी अकथनीय है। जीवन की सत्यता भी यही है, लेकिन सांसारिक चिंतन से छुटकारा ही भी तो कैसे? मिथ्या देहाभिमान छूटे भी तो कैसे? व्यर्थ के प्रपञ्च विनष्ट हों भी तो कैसे? इन सबका बोध बिना गुरु संभव नहीं है।

★ साधक की यात्रा शून्य से प्रारम्भ होकर ब्रह्म तक पहुंचती है और गुरु के माध्यम

से ही ब्रह्म तक की यात्रा संभव होती है। जिसने ब्रह्म को जान लिया उसने गुरु को जान लिया। जो गुरु से एकाकार हो गया, वह ब्रह्म से एकाकार हो गया।

- ☆ मैंने जिन्दगी भर से मेहनत कर ऊसर रेगिस्टान में गुलाब के पुष्प रिवाए हैं, और सूरज से रोशनी झटक कर तुम्हारी आत्मा को प्रकाशित किया है।
- ☆ शिष्य हो तो परिचय होता है इस जगत में अपने गुरु का... और इस गुण से सम्पद्ध वह तभी हो सकता है जब अपने आपको गुरु की शरण में अर्पित कर दे।
- ☆ प्रेम जीवन का अद्वितीय वरदान है और मैंने तुम्हारे होठों को गुनगुनाहट देकर तुम्हारे जीवन में वसन्त का प्रस्फुटन किया है।
- ☆ क्योंकि तुम्हारे पास एक दिव्य पथ है जाग्रत चैतन्य गुरु एवं दिशा दृष्टि स्पष्ट है।
- ☆ परंतु गुरु के प्रेम का रास्ता इतना आसान नहीं है, यह तो तलवार की एक धार है जिस पर चलने से पैर लहूलुहान हो जाते हैं। यह ऐसी पगड़पड़ी नहीं है जिसके नीचे पुष्प बिछे हों, प्रेम करना तो बहुत कठिन है, तकलीफदायक है। पूर्ण हृदय से प्रेम करने की क्रिया बिरले को ही आ पाती है।
- ☆ प्रेम का तात्पर्य है ईश्वर, और जब तक प्रेम के रस में भीगेंगे नहीं, ईश्वर, की प्राप्ति नहीं हो सकती, गुरुदेव से साक्षात्कार नहीं हो सकता... और यह अंदर उतर कर प्रभु से साक्षात् करने की क्रिया ही तो प्रेम है।
- ☆ यदि कोई शिष्य चाहे कि मैं गुरु को हृदय में समेट लूं, गुरु को अपने जीवन में पा लूं, गुरु को अपने में आत्मसात् कर लूं, और यदि उसके हृदय में प्रेम की सरिता नहीं है, यदि उसके हृदय में प्रेम रस नहीं है, तो वह अपने जीवन में, अपने हृदय में गुरु को उतार भी नहीं सकता।

दोष मुक्ति, श्राप मुक्ति जीवन गुल कृपा से ही प्राप्त है



पूर्वजन्म-कुर्त  
दोष-निवारण

# शापोद्धार

कीक्षा

साधनाओं में सफलता या जीवन के किसी भी क्षेत्र में सफलता तब तक नहीं मिल सकती जब तक कि इन शापों का शमन न किया जा सके। और यह शमन हो सकता है सद्गुरु कृपा से दीक्षा के रूप में, और दीक्षा के इसी रूप को शारत्रों में शापोद्धार दीक्षा के नाम से जाना जाता है।

गुरु पूर्णिमा से कौश्चार्यशाली दिवस औन का हो अफता है, इसी दिन तो अद्गुरु आशीर्वाद की अमृत वर्षा अवते है, शिष्य ऋमर्पण भाव से, शब्दा युक्त होकर पूर्ण कृपा की आकांक्षा अवता है। जिसके उक्तके जीवन के ऋमक्त दोष दूर हो जाएं, विनष्ट हो जाएं और नये उत्काह के काथ जीवन यात्रा प्राकम्भ अवें-

आपका यह जीवन पुनर्जन्म से जुड़ा है। पूर्व जन्म में आप जीवन से दूसरे जीवन में प्रवेश करता है। हमारे जीवन के क्या थे? कहां थे? आपने कौन से कर्म किए? इसको जानने की सम्बन्ध पूर्व जन्मों से ही जुड़े होते हैं। यह अलग बात है कि इच्छा तो अवश्य होती है, इन प्रश्नों पर विश्व के समाज मृत्यु को प्राप्त हो कर हम दूसरा शरीर धारण कर लें, परन्तु शास्त्रियों, शोध कर्ताओं ने अनुसंधान किए हैं, और कर रहे इसमें आत्मा नहीं बदल जाती, आत्मा के सम्बन्ध तो ज्यों के हैं, इन का परिणाम बड़ा ही गोचक और विस्मयकारक रहा है। त्यों ही रहते हैं।

यह भारतीय सिद्धान्त एक ठोस नियम के रूप में प्रमाणित हो चुका है कि 'आत्मा ही अजर अमर है।', मनस्य एक बहुत ज्यादा चाहने लगते हैं, केवल दो या तीन दिन के परिचय

से ही ऐसा लगने लगता है कि जैसे हम कई वर्षों से परिचित हों, उससे बातचीत करने में आनन्द की अनुभूति होने लगती है।

समय तो अजस्र प्रवाह है, जिसका न हमें ओर का पता है और न छोर का, इस बीच हम कई बार जन्म लेते हैं और कई बार मृत्यु को प्राप्त होते हैं।

यह हमारी अज्ञानता है कि हमने जीवन का मतलब उस दिन से मान लिया, जिस दिन से हमने जन्म लिया है और उस जीवन को उतना ही मान लिया है जिस दिन हमारी मृत्यु होती है। सामाजिक दृष्टि से तो निश्चय ही यह जीवन है पर शास्त्रीय दृष्टि से यह मात्र जीवन का एक भाग है। इससे पहले भी हम कई बार जन्म ले चुके हैं और मृत्यु को प्राप्त हो चुके हैं तथा भविष्य में भी कई बार जन्म लेंगे और हमारी मृत्यु होगी। यह तो प्रकृति का विधान है।

प्रभु ने कुछ ऐसी व्यवस्था कर दी है, कि हमें अपने पिछले जीवन का स्मरण नहीं रहता और यह ऐसा इसलिए किया गया है जिससे जीवन का मोह, हिंसा, बैर आदि हमें स्मरण नहीं रहे और जीवन ज्यादा अशांत न हो। आप कल्पना करें, कि यदि हमें पिछला जीवन याद हो और यह भी स्मरण हो कि अमुक ग्राम या शहर में अमुक व्यक्ति ने उसकी हत्या कर दी थी तो वह क्रोध और बदले की भावना में जलता रहेगा और तब तक वह शांति से नहीं बैठ सकेगा जब तक वह अपनी मौत का बदला न ले ले।

भारतीय शास्त्रों के पुनर्जन्म तंत्र के माध्यम से व्यक्ति अपने पिछले जीवन में झाँक सकता है और देख सकता है कि उसका पिछला जीवन वर्तमान जीवन से अच्छा था अथवा बुरा। पिछले जीवन में कौन सी गलतियां की थीं, जिसका परिणाम इसे जीवन में भुगतान पड़ रहा है, या पिछले जीवन के कौन से ऐसे भले कार्य थे, जिसका लाभ इस जीवन में हमें मिल रहा है।

**स्नाधक और शिष्य** अपने गुरु के पास इसी उद्देश्य से आता है कि वह अपने—आप को पूर्ण स्नामर्पित कर गुरु के द्वितीय ज्ञान एवं प्रभाव से अपने भीतर के विकारों का, अपने इस जन्म और पूर्वजन्म के दोषों का नाश कर दे। शिष्य अपना मार्ग छव्यं नहीं पहचान सकता, वह केवल गुरु द्वारा बताये भार्ग पर चलना जानता है, और जब वह जहाँ भार्ग पर चलता है तो उसे द्विद्वित व सफलता अवश्य प्राप्त होती है।

कई बार व्यक्ति को ईश्वर पर क्रोध आता है और उसके न्याय पर संदेह होने लगता है, कि कोई व्यक्ति जीवन भर दान, पुण्य, गुरु की सेवा, इष्ट की पूजा करता हुआ सात्त्विक जीवन व्यतीत करता है, फिर भी वह गरीब और पैसे-पैसे के लिए मोहताज रहता है जबकि दूसरी ओर बदमाश, ठग हत्यारे, लूट खसोट करने वाले, झूठे और मक्कार व्यक्ति समाज में सम्मानीय कहे जाते हैं, उनके जीवन में कोई अभाव नहीं होता। तब हमें विद्याता के न्याय पर संदेह होने लगता है।

परन्तु इन सारे प्रश्नों के उत्तर पूर्वजन्मों में विद्यमान हैं। उस जन्म को और उस जन्म के क्रिया कलाप देखने के बाद इन प्रश्नों के उत्तर मिल जाते हैं, कि क्यों पति-पत्नी में परस्पर मतभेद बना रहता है, क्यों बाप के कंधे पर बेटे की लाश शमशान तक पहुंचती है, क्यों व्यक्ति परिश्रम करने के बावजूद भी गरीब बना रहता है? नहीं समझ में आने वाली बीमारी का रहस्य क्या है? क्यों इतना दुःख भुगतान पड़ता है? जब तक हम पिछला जीवन नहीं देख लेते तब तक इन प्रश्नों के उत्तर प्राप्त नहीं हो सकते।

जन्मों की ये श्रृंखला और कर्मफल का रहस्य अत्यन्त पेचीदा है। इन्हीं के संयोग से व्यक्ति का अगला जीवन निर्धारित होता है। जगत में शिशु जब मां के गर्भ से उत्पन्न होता है, तो वह अकेले ही नहीं उत्पन्न होता है, उसके साथ होता है, हजारों मन का बोझा, जो कि उसके पूर्व जन्मों के कर्म का पुंजीभूत स्वरूप है। जैसे-जैसे बालक बड़ा होता जाता है, वैसे-वैसे उसके संचित कर्म उसके जीवन पर प्रभाव दिखाते हैं।

मात्र परिश्रम और पुरुषार्थ से ही सब कुछ संभव हो जाता, फिर तो दिन भर परिश्रम करने वाला मजदूर जो दिवस भर कड़ी मेहनत करता है, लेकिन फिर भी बड़ी-मुश्किल से गुजर-बसर कर पाता है, क्यों ऐसा हो जाता है कि आपके मित्र के कार्य बड़ी आसानी से पूर्ण हो जाते हैं और आप अपने हर कार्य के प्रति सजग और सचेष्ट रहने के बाद भी अपने सोचे हुए कार्य को पूरा नहीं कर पाते? क्यों आपके जीवन में बाधाएं आती हैं, जबकि अन्य लोगों के कार्य बैठे-बिठाए हो जाते हैं और व्यक्ति अपने भाग्य को दोषी ठहराने लगता है, और ईश्वर के प्रति अविश्वास करने लगता है।

परन्तु सत्य तो यही है कि यदि दुःख है, तो दुःख का कारण भी है और दुःख का यह कारण इसे जीवन एवं पूर्व जन्मों के कृत्यों में छिपा होता है। इस जन्म में तो गुरुदेव से दीक्षा प्राप्त होने के बाद मन का मार्जन होने लगता है, उचित

अनुचित में भेद समझ आने लगता है और जीवन का मार्ग तथा लक्ष्य स्पष्ट होने लगता है। तब ऐसी चेतना आने पर व्यक्ति सत्कर्मों की ओर प्रवृत्त होता है एवं दुष्कर्मों से सप्रयास निवृत्ति लेने को ही प्रयत्नशील रहता है।

सत्य तो यह है कि कर्मफल की एक बहुत बड़ी राशि पूर्व जन्मों से सम्बद्ध होती है। इस जन्म में आने वाली असफलताओं, परेशानियों, बाधाओं, रोग-शोक, निर्धनता एवं अपमान का कारण पूर्व जन्म में हुए पाप ही होते हैं अथवा किसी आत्मा का शाप होता है, जिसका प्रायश्चित इस जीवन में हमें करना पड़ता है।

जाने-अनजाने में पूर्व जन्मों में हमसे किसी जीव को अथवा किसी मनुष्य को कष्ट पहुंचता है अथवा उसके साथ दुर्व्यवहार होता है तो उसकी आत्मा का वह शाप निरन्तर हमारा पीछा करता ही है और समय आने पर वह पाप राशि, वह अभिशाप हमारे मार्ग में एक दैत्य की तरह आ खड़ा होता है और हमें विवश हो जाना पड़ता है, विधि के विधान के आगे।

हमारे ही कर्म, हमारे ही दोष हमारे मार्ग में रुकावट बन कर खड़े हो जाते हैं, और पूर्व जन्म स्मरण न होने के कारण हम अपने उस कर्म से अनभिज्ञ रहते हुए इन रुकावटों को ईश्वर के ऊपर थोपते रहते हैं, जिसके जिम्मेदार स्पष्टतः हम स्वयं ही हुआ करते हैं।

कर्म का फल मनुष्य तो क्या अवतारी पुरुषों को भी भुगतना पड़ा है। पुराणों में प्रसंग आता है कि एक बार सीता जी राज वाटिका में अपनी सखियों के साथ विचरण कर रही थीं, कि तोते की सुन्दर युगल जोड़ी ने उनका ध्यान आकर्षित किया।

वृक्ष की डाल पर फुदकते हुए तोते व तोती के प्रति सीताजी अति मुग्ध हुईं और उन्होंने अपनी सहेलियों को तोते को पकड़ने का आदेश दे दिया। तोते को पकड़कर सीताजी ने मन बहलाने के लिए पिंजड़े में डाल दिया। उधर तोती गर्भिणी अवस्था में थी, उससे वियोग में रहा नहीं जा रहा था, अतः उसने तड़प-तड़प कर विरह में प्राण त्याग दिए और सीताजी को शाप दिया कि जिस तरह तूने मुझे इस गर्भविस्था में पति से अलग किया है, उसी तरह तुझे भी अपने पति से विलग होना पड़ेगा।

काल चक्र धूमा और शास्त्र इस बात का प्रमाण है कि सीताजी को धोबी के आक्षेप के कारण स्वयं अपने पति राम द्वारा गर्भविस्था में अयोध्या से निष्कासित किया गया था और बाद में राजमहलों की सीताजी को वाल्मीकि आश्रम में पति के वियोग में ही मृत्यु तुल्य जीवन जीने को विवश होना चाह करके भी जिनके उत्तर हमें प्राप्त नहीं होते, हम प्रयत्न

पूर्व जन्म को नकारा नहीं जा सकता है और न ही नकारा जा सकता है पूर्व जन्म में किए गए कर्मों की श्रृंखला को, जो कि इस जीवन में भी प्रभावी रहती है। पूर्व जन्मों में जाने-अनजाने में दुष्क्रिया किसी पाप-शाप का भोग तो मनुष्य को भोगना ही पड़ता है। बिना इन शापों का शमन दुष्क्रिया किसी भी क्षेत्र में सफल नहीं हो सकता, चाहे वह अध्यात्म से सम्बन्धित हो अथवा भौतिक जीवन से सम्बद्ध हो। शापोद्धार हीक्षा से उन कर्मों का क्षय होना प्राप्तम् हो जाता है और व्यक्ति शब्दः-शब्दः यह सब कुछ प्राप्त करने लगता है, जो भागीरथ प्रयत्न करने के बाद भी प्राप्त नहीं कर पा रहा था।

पड़ा था। कर्मों के फल को तो भुगतना ही पड़ता है। पूर्व जन्म के इन पापों का शमन करना अति आवश्यक है क्योंकि इन पाप-शाप के रहते व्यक्ति का सफल होना दुष्कर ही होता है। अध्यात्म एवं साधना पथ पर बढ़े साधक को तो विशेष प्रयास कर अपने गुरु से इन शापों और पाप-दोषों का निवारण कर उद्धार करने की प्रार्थना करनी चाहिए।

हमारा वर्तमान जीवन पर पिछले जीवन का प्रभाव

और अब यह स्पष्ट हो गया है कि वर्तमान जीवन पर पिछले जीवन का पूरा-पूरा प्रभाव होता है क्योंकि यह एक ही सिक्के के दो पहलू है। यदि इस सिक्के का दूसरा पहलू पिछला जीवन है तो इन दोनों को जोड़ कर देखने पर ही वर्तमान जीवन को भली प्रकार से समझा जा सकता है।

ऐसा हो सकता है कि हम अपनी पत्नी या पुत्र की बीमारी पर खर्च करते जा रहे हैं और बीमारी का पता ही नहीं चल पा रहा है। कहीं ऐसा तो नहीं है कि पिछले जीवन में ये हमारे पुत्र या पत्नी न हों और इनसे कर्ज लिया हो जिसे हम वापिस चुकता कर रहे हों?

आप व्यापार में प्रयत्न और परिश्रम कर रहे हैं मगर इसके बावजूद भी आपको काई सम्मान नहीं मिल पा रहा है और बराबर आर्थिक हानि उठानी पड़ रही हो, कहीं ऐसा तो नहीं है कि जो आपके पार्टनर हैं, जो आपके सलाहकार हैं, वे सब आपके पिछले जीवन के विरोधी तत्व रहे हों और इस जीवन में बदला निकाल रहे हों।

ये और ऐसे कई प्रश्न, जो हमारे मन में घुमड़ते रहते हैं, चाह करके भी जिनके उत्तर हमें प्राप्त नहीं होते, हम प्रयत्न

करके भी इन रहस्यों को सुलझा नहीं पाते, और ये सारे प्रश्न हमारे सामने पहेलियां बन कर रह जाते हैं।

और यह बात सही है कि इन सारे प्रश्नों के उत्तर आपके पिछले जीवन से जुड़े हुए हैं, जब आप पिछला जीवन देखेंगे, जब आप पिछले जीवन को अनुभव करेंगे और पिछले जीवन से सम्पर्कित लोगों से वर्तमान जीवन में मिलान करेंगे, तभी तुम्हें पता चल सकेगा कि इन लोगों के साथ आपके किस प्रकार के सम्बन्ध थे और इस जीवन में वे कर्जा चुका रहे हैं या कर्जा बढ़ा रहे हैं या वे बदला ले रहे हैं, या अन्य कौन से कारण हैं जिनकी वजह से यह गड़बड़ी, जीवन के उलझाव और जीवन के तनाव है।

‘रुद्रयामल तन्त्र’ के अनुसार जो साधक अपने गुरु के पास जाकर पूर्ण सिद्धि प्राप्त करना चाहता है उसे किसी भी रूप में भूत शुद्धि करा कर पाप मोचनी दीक्षा अवश्य ग्रहण करनी चाहिए, इस दीक्षा का स्वरूप अत्यन्त ही उपयोगी और प्रभावकारी है, यह तो आगे बढ़ने की दिशा में पहला प्रयास है।

रुद्रयामल तन्त्र में शापोद्धार, पापमोचन एवं पूर्वजन्म कृत दोष निवारण के लिये विशेष विधान आया है। इस विधान में तीन चरण हैं और साधक को अत्यन्त सावधानी से यह अनुष्ठान करना पड़ता है, क्योंकि यह शमन-अनुष्ठान है।

**सामान्यतया साधक के लिए यह महती क्रिया संभव नहीं होती लेकिन इसे पढ़ने से यह स्पष्ट होता है कि दोष का प्रभाव और उसकी मुक्ति का मांत्रिक अनुष्ठान क्या है? यदि शिष्य में श्रद्धा भावना है और गुरु कृपा हो जाती है तो गुरु स्वयं विशेष क्रिया द्वारा यह मांत्रिक अनुष्ठान अवश्य सम्पन्न करवाते हैं।**

इसके अनुसार स्नान आदि कर श्रेष्ठ मुहूर्त में साधक गुरु के समक्ष बैठे। शिष्य हाथ में जल लेकर संकल्प करे और अपने हाथ में एक नारियल ले। गुरु, शिष्य के ललाट पर तिलक करे तथा निम्न प्रकार से विनियोग करें।

#### विनियोग

उँ शरीरस्यान्तर्यामी ऋषिः सत्यं देवता प्रकृति  
युरुष्टु नदः पापपुरुषशोषणे विनियोगः।

इसके बाद साधक अपने बाएं हाथ में जल लेकर शरीर पर छीटि मारे। इस जन्म के दोषों का प्रभाव पूरे शरीर पर पड़ता है, यह शरीर शुद्धि, आत्मशुद्धि की पापमोचनी दीक्षा का स्वरूप है, तदुपरान्त ध्यान करें।

जब सद्गुरु देखे लेते हैं कि उड़का शिष्य बहुत प्रयासों के बाद भी साधनाओं में सफल

बहीं हो पा रहा है और वही भौतिक क्षेत्र में ही उद्घाटि पा रहा है, और एक तरह से धिस्ट-धिस्ट कर जीदे वाली जिद्दगी को जीदे को विवश हो जाता है, तब वे शापोद्धार दीक्षा का उपक्रम करते हैं... क्योंकि इसी दीक्षा के द्वारा उसके अतीत के व पूर्व जन्मों के उड़ पापों, दुष्कर्मों तथा शापों को धोया

जा सकता है जिद्दकी वजह से इस जीवद में

रुकावट उत्पन्न हो रही है।

#### ध्यान

हृदयमें स्थित कमल जिसका मूल धर्म और नाल ध्यान है, आठ प्रकार के ऐश्वर्य उसके दल हैं। प्रणव द्वारा उद्भाषित है कि उस कर्णिका पर दीप शिखा के समान ज्योति स्वरूप जीवात्मा स्थित है। वह जीवात्मा में विष्णु स्वरूप, शिव स्वरूप, ब्रह्मा स्वरूप स्थित है और कुण्डलिनी तथा जीवात्मा का मिलन है। उसी की जागृति जीवन की सम्पूर्णता है। ऐसी शुद्ध जीवात्मा को मैं पूर्ण भक्ति-भाव से प्रणाम करता हूँ।

ऐसा ध्यान सम्पन्न करने के पश्चात् गुरु शिष्य के शरीर में ब्रह्मा, विष्णु, तथा शिव की स्थापना करें।

इसके पश्चात् साधक ‘रुद्राक्ष माला’ से निम्न शुद्धि मन्त्र की पांच मालाएं उसी स्थान पर सम्पन्न करें।

#### बीज मन्त्र

ॐ परमशिव सुषुन्मापथेन मूलशृंगाटक  
उल्लस्र उल्लस्र ज्वल ज्वल, प्रज्वल प्रज्वल  
सरोहं हंसः स्वाहा।

इस प्रकार के पूजन के पश्चात् साधक के शरीर में हलचल सी प्रारम्भ होती है और भीतर ही भीतर विशेष मंथन प्रारम्भ होता है, यह पाप दोष मोचन (शमन) की पहली प्रक्रिया है।

शमन दीक्षा का दूसरा क्रम

पापमोचन - शमनदीक्षा के तीन क्रमों में पहला क्रम समाप्त होते ही शिष्य के लिए दूसरा क्रम प्रारम्भ किया जाता है।

साधक अपने सामने एक ताप्र पात्र में शिवलिंग स्थापित करे तथा गुरु उसे ‘जीवात्मा शुद्धि रूप’ में अभिषेक करे, इस शुद्धि अभिषेक के जल को शिष्य के उपर छिड़क कर शुद्धि

कार्य सम्पन्न करे, उसके पश्चात निम्न बीज मंत्र से 21 बार कुश को जल में डुबो कर उस पर छिड़कते हुए शुद्धता की ओर अग्रसर हो।

### बीज मंत्र

ॐ वं लिंगशरीरं शोषय शोषय स्वाहा।

इस प्रकार दूसरे क्रम की समाप्ति होते-होते साधक को इस प्रकार का आभास होता है कि उसके शरीर में से कुछ निकल कर बाहर जा रहा है, और भीतर ही भीतर एक खालीपन अनुभव होता है, रोम खड़े हो जाते हैं, लेकिन चिन्ता की कोई, बात नहीं है, जब भी आन्तरिक स्वरूप से दोष अणु स्वरूप में बाहर निकलते हैं तो शरीर रोकता है, शुद्धि प्रक्रिया में कष्ट अवश्य होता है लेकिन कुछ समय बाद ही शान्ति, स्थिरता का अनुभव होता है।

### शमनदीक्षा का तीसरा क्रम

तीसरे क्रम में साधक के वर्तमान जीवन के दोषों का शमन क्रम पूर्ण किया जाता है। जब तक शरीर के अतिरिक्त मन भी निरोगी नहीं हो जाता, तब तक किसी भी कार्य में अथवा साधना में सिद्धि नहीं हो पाती।

यह दीक्षा परम शिव पद प्राप्त करने की साधना है, इसमें गुरु अपने शिष्य को पूर्व की और मुंह कर बिठाए '108 कमल बीज' द्वारा उसके शरीर के 108 स्रोत बिन्दुओं को जाग्रत करते हुए उसमें 108 लक्ष्मी स्वरूपों की स्थापना करे।

फिर लक्ष्मी के स्वरूप यंत्र को अग्निकोण में स्थापित कर उसके आगे अग्नि का दीपक जलाए और निम्न बीज मंत्र से आहवान करें -

### बीज मंत्र

ॐ हीं वैष्णवै प्रतिष्ठा कमलात्मनै हुं नमः।

इस क्रम में पूर्णता के पश्चात् शिष्य गुरु का पूजन करे, गुरु को शिव स्वरूप मानते हुए आरती, पुष्प इत्यादि से पूजन सम्पन्न कर अपने-आप को पूर्णरूप से समर्पित कर दें।

इस विशेष दीक्षा में आवश्यक है कि शिष्य विशिष्ट मुहूर्त में पूर्ण श्रद्धा से गुरु पूजन कर संकल्पवान बनें। संकल्प और श्रद्धा का जब समर्पण से योग होता है तो गुरु कृपा प्राप्त होती है। इस बार ऐसी विशेष दीक्षा गुरु पूर्णिमा के अवसर पर आपको प्राप्त होगी, इस हेतु हार्दिक बधाई।

इस प्रकार तीन चरण में पाश-शमन क्रिया का यह महाअनुष्ठान सम्पन्न होता है। प्राचीन काल में गुरु अपने शिष्य को प्रारम्भिक दीक्षा के साथ शमन क्रिया सम्पन्न कराते

थे जिससे शिष्य का चित्त निर्मल हो जाएं। वह दोषों से मुक्त हो जाएं तथा गुरु ज्ञान को पूर्ण रूप से ग्रहण करने योग्य हो जाएं।

### पूर्वजन्म कृत द्वोष निवारण शापोद्धार दीक्षा

योग्य गुरु तो अपने शिष्य पर कृपा अवश्य करते हैं। यदि मांत्रिक अनुष्ठान संभव नहीं हो पाता तो सदगुरु अपनी शक्ति द्वारा शिष्य के दोषों का परिमार्जन करते हैं। गुरु अपनी आन्तरिक दिव्य शक्ति से शिष्य पर तीव्र शक्तिपात्र प्रवाह करते हैं। यह विस्फोटक क्रिया है।

सदगुरु ही निर्णय करते हैं कब शिष्य को यह विशेष दीक्षा प्रदान करनी है क्योंकि साधनाओं में सफलता या जीवन के किसी भी क्षेत्र में सफलता तब तक नहीं मिल सकती जब तक कि इन शापों का शमन न किया जा सके और यह शमन हो सकता है सदगुरु कृपा से दीक्षा के रूप में, और दीक्षा के इसी रूप को शास्त्रों में शापोद्धार दीक्षा के नाम से जाना जाता है।

यह दीक्षा तो एक तरह से सभी साधकों के लिए अनिवार्य ही है, क्योंकि बिना पूर्व जन्म के शापों का, पापों का उद्धार किए सिद्धि की कल्पना करना ही मूर्खता है। कूड़े के ढेर पर सुगन्ध का स्थापन नहीं हो सकता है, अतः जब कर्म दोषों का सदगुरु के शक्तिपात्र से, सदगुरु के शक्ति प्रवाह से भस्मीकरण होता है तभी उसके जीवन में सौभाग्य का उदय होता है। फिर वह जिस भी दिशा में प्रयास करता है, उसे दैवीय कृपा, पितृ कृपा, गुरु कृपा, कुटुम्ब कृपा सभी सहयोग रूप में प्राप्त होती है और वह अल्प प्रयास से ही वह सब कुछ प्राप्त कर लेता है, जिस हेतु वह कर्मशील होता है।

जब गुरुदेव देखते हैं, कि शिष्य का पूर्व जन्म बहुत ही दोष युक्त है, तो उन्हें यह दीक्षा कई चरणों में सम्पन्न करते हैं। अन्यथा सामान्तर्यः गुरुदेव यह दीक्षा एक ही चरण में इस दीक्षा को पूर्णता के साथ शिष्य को प्रदान कर देते हैं।

यह दीक्षा तो प्रायः हर साधक को अनिवार्यतः लेनी ही चाहिए क्योंकि जब तक शापों से उद्धार नहीं होगा तब तक हम कितनी ही साधनाएं क्यों न कर लें, साधनाओं में अनुकूलता संदिग्ध ही रहेगी। अनेक जन्मों की इस जमी धूल को झाड़ कर पोंछ लेने का उपाय ही यह शापोद्धार दीक्षा।

यह दीक्षा साधारण दीक्षा नहीं है, जब इस दीक्षा द्वारा इष्टदेव और गुरुदेव के ध्यान में चित्त तन्मय हो जाता है और दीक्षा द्वारा उनकी कृपा प्राप्त होती है तो चित्त पूर्णरूप से शुद्ध होकर एक विशेष आनन्द का अनुभव करता है, और पवित्रता शक्ति, शान्ति की शत-शत धाराएं उसके 'स्व' को आप्लावित व अत्यन्त दिव्य बना देती है।

गुरु पूर्णिमा के अवसर पर शिष्य का गुरु से मिलना और गुरु द्वारा प्रेम से सिक्त होकर आशीर्वाद प्रदान करना, वैसी ही घटना है जैसे नदी अपने पूरे आवेग के साथ समुद्र से मिलती है, गुरु पूर्णिमा पर गुरु अपने सम्पूर्ण तेजोमय स्वरूप को प्रकट कर शिष्य को पूर्ण रूप से अपनाकर एकाकार हो जाते हैं और जाग्रत होता है शिष्य के जीवन का नया अध्याय -



इस बार लिखी जाचेगी शिष्यों के भावच की नवीन रेखा

दुर्भावच का नाश और सौभावच का उद्ध्व

जीवन की दुर्लभ तेजस्वी

और

अद्वितीय

# पूर्वजन्म कृत दोष निवारण

## शापोद्धार दीक्षा

दिनांक : 29 जुलाई 2007, गुरु पूर्णिमा

आप घर बैठे हैं या यात्रा में हैं यह मत सोविये की गुरुदेव आपके साथ नहीं हैं। गुरु तो दिव्य तरंगों के माध्यम से सदैव अपने शिष्य के साथ रहते ही हैं। शिष्य अपनी तरंगें जाग्रत कर वह भाव ग्रहण कर सकें यह क्षमता, यह भावना, यह श्रद्धा, यह विश्वास उसमें उत्पन्न होना ही चाहिये।

पूर्वजन्म कृत दोष निवारण शापोद्धार दीक्षा प्राप्त करने का श्रेष्ठ मुहूर्त है, गुरु पूर्णिमा। इस दिन आप अपने जीवन में आलस्य, निद्रा को त्याग करने का संकल्प लेते हैं। गुरु पूर्णिमा एक महान् पर्व है। इस दिन गुरु तत्व की आत्मिक चेतना अत्यन्त ऊर्जास्वित रूप में रहा करती है। उसे संस्पर्श मात्र से शिष्य के जीवन की जटिलताएं स्वयमेव सुलझ जाती हैं और उसे उन्मनी स्थिति की सहज प्राप्ति सुलभ जाती है। इस दिन गुरु शिष्य के आन्तरिक पवित्र और वैतन्य सम्बन्धों का नवीनीकरण होता है। साधक को पुनः नवीन प्रेरणा, नयी स्फुर्ति, नयी प्राण शक्ति, नये निर्देश और नयी चेतना प्राप्त हो जाती है।

☆ इस दिन प्राप्त हुई दीक्षा पूरे रोम-रोम में व्याप्त हो जाती है ☆

## नियम

- ❖ आप इस प्रपत्र को भर कर आज ही भेज दीजिए, हम आपका प्रपत्र गुरुदेव के समक्ष प्रेषित कर देंगे।
- ❖ गुरुदेव की आशा से आपको “पूर्वजन्म कृत दोष निवारण शापोद्धार यंत्र”, चार सौ नब्बे रूपयों का वी.पी. से भेज रहे हैं, जिसे आप पोस्ट मैल को 490/- रुपये देकर वी.पी. छुड़वा लें, और “पूर्वजन्म कृत दोष निवारण शापोद्धार दीक्षा यंत्र” पहले से ही मंगवा कर अपने पास सुरक्षित रख लें।
- ❖ वी.पी. छूटने पर आपने अपने जिन दो मित्रों का पता दिया है, उन्हें एक वर्ष का पत्रिका सदस्य बना कर पूरे वर्ष भर पत्रिका नियमित रूप से भेजते रहेंगे।
- ❖ 29 जुलाई 2007, गुरु पूर्णिमा के दिन प्रातः (7.36 से पूर्व) खच्छ वस्त्र धारण कर दैनिक साधना विधि में दी गई विधि अनुसार गुरु पूजन सम्पन्न करें।
- ❖ पूज्य गुरुदेव 29 जुलाई 2007, गुरु पूर्णिमा को दीक्षा मुहूर्त (प्रातः 7.36 से 9.12) में विशेष ऊर्जा प्रवाहित करेंगे। प्रत्येक साधनारत साधक को विशेष गुरु चेतना अनुभव होगी और आपके पूरे शरीर में नारायण शक्ति स्थापित हो सकेगी। इस काल में निम्न मंत्र का उच्चारण करना है।

मंत्र : // उँ सोहं हंसः स्वाहा //

- ❖ मंत्र जप करते समय अपने दोनों हाथों में यंत्र को रखें तथा गुरु वित्र में ध्यान लगायें।
- ❖ मंत्र जप के पश्चात् शांत भाव से अपने आसन पर बैठे रहें, आपके शरीर में कम्पन होने लगे तो होने दें। मन को शान्त रखकर ऊर्जा प्रवाह, ब्रह्मण करते रहें। उसके पश्चात् ‘पूर्वजन्म कृत दोष निवारण शापोद्धार यंत्र’ को पुरुष दायें हाथ तथा स्त्रीयां बायें हाथ की भुजा पर धारण करें।

आपके जीवन का सौभाग्य

### पूर्वजन्म कृत दोष निवारण शापोद्धार दीक्षा

जो आपके सम्पूर्ण जीवन को सिद्धि प्रदान करने एवं जगमगाहट देने में समर्थ है।

आप “पूर्वजन्म कृत दोष निवारण शापोद्धार यंत्र” 490/- रु की वी.पी. से निम्न पते पर भेजें।  
वी.पी. आने पर मैं छुड़ा लूँगा।

मेरी पत्रिका सदस्या संख्या .....

मेरा पूरा नाम .....

मेरा पूरा पता .....

वी.पी. छूटने पर आप मेरे निम्न मित्रों को पत्रिका सदस्य बना दें और रसीद मुझे भेज दें।

नाम .....

नाम .....

पता .....

पता .....

# ‘द्विद्वारा’

साधक जीवन में दैनिक चर्चा आवश्यक है।

भ्री शुचिता आ महत्व होता है। शक्ति का शुचिता भ्री उठना ही आवश्यक है, जितना कि मन आ। इसीलिए साधकों के लिए विशेष दिनचर्चा आ पालन अवश्यक है एवं क्षमी हुई दिनचर्चा आ पालन अवश्यक है। प्रातः आल उठना, क्षमय के मल विकर्जन, इन्तिहासन, क्षणान आदि आ साधक छोड़ना में अद्या महत्व है, इसी को स्पष्ट अवश्यक है। यह विषेचनात्मक लेख...

**सूर्योदय के पूर्व शद्या त्याग क्यों आवश्यक?**

निद्रा त्याग हेतु साधकों के लिए ब्रह्ममुहूर्त ही श्रेष्ठ समय है

**रात्रे: परश्चिमयामस्य मुहूर्ते यस्तुतीवकः ।**

**स ब्राह्म इति विज्ञेयो विहितः स प्रबोधने ॥**

दिन भर के थके प्राणी, पशु-पक्षी थक कर रात्रि में विश्राम लेते हैं और प्रातः होने पर पुनः चैतन्य हो जाते हैं। प्रकृति से जुड़े सभी पशु-पक्षी प्रकृति के संकेत को समझ कर सूर्योदय से पूर्व ही निद्राविहीन हो जाते हैं, मनुष्य ही ऐसा प्राणी है जिसे अलार्म घड़ी की आवश्यकता पड़ती है। प्रातः काल होते ही कमल खिल उठते हैं, पक्षी अपने कलरव से उपवनों को गुजायमान कर देते हैं, शीतल मन्द समीर प्रवाहित होने लगता है, उस समय प्रकृति वास्तव में तरोताजा होती है।

-साधनात्मक दृष्टि से ब्रह्ममुहूर्त के समय वातावरण में विशेष चैतन्यता व्याप्त रहती है, उस समय वातावरण में प्राण तत्व का विशेष रूप से संचरण रहता है, और यहीं प्राण तत्व जीवन की मूलभूत ऊर्जा भी है। इस प्राण तत्व का मानव जीवन पर दीर्घकालिक प्रभाव पड़ता है। प्रातः बेला में उठने वाले व्यक्ति प्रायः चुस्त, चैतन्य और निरोगी रहते हैं, यह निर्विवाद तथ्य है।

-अध्यात्म जीवन में प्राण तत्व का विशेष महत्व है, इसीलिए ब्रह्ममुहूर्त का यह काल साधना, उपासना, जप, ध्यान आदि के लिए सर्वश्रेष्ठ माना गया है। इस समय मन से उठने वाली प्रत्येक तरंग का सम्बन्ध सीधा वातावरण में व्याप्त देव शक्तियों

से होता है और मंत्र जप उन देवताओं तक पहुंचता है।

सदगुरुदेव ने प्रायः अपने प्रवचनों में शिष्यों को प्रातः काल 5.00 बजे से 6.00 बजे के मध्य गुरु पूजन सम्पन्न करने का निर्देश दिया है। उन्होंने कहा है - ‘यदि तुम दीक्षा प्राप्त शिष्य हो और इस प्रातः बेला में किसी भी प्रकार से गुरु पूजन सम्पन्न करते हो, गुरु चित्र के सामने कुंकुम, अक्षत, धूप आदि लगाकर गुरु मंत्र का जप कर अपनी मनोकामना व्यक्त करते हो तो ऐसा संभव ही नहीं कि मुझे तुम्हारी आवाज सुनाई न दे, क्योंकि प्रातः 5 से 6 के मध्य सूक्ष्म रूप से मैं प्रत्येक शिष्य जो उस समय साधनारत होता है, उसके समक्ष उपस्थित होता हूँ और उसे मेरा आशीर्वाद प्राप्त होता है।’

प्रातः बेला में प्रकृति मुक्त हस्त से स्वास्थ्य, बुद्धि, मेधा, प्रसन्नता और सौन्दर्य की अपार राशि लुटाती है, इस समय बहने वाले पवन में संजीवनी शक्ति पूर्ण रूप से आप्लावित रहती है। रात्रि में चन्द्रमा की शीतल किरणों का पृथ्वी पर विकीर्णन होता है, जिसमें अमृत रश्मियां समाहित होती हैं। रात्रि में चन्द्रमा की इन्हीं अमृत रश्मियों से पवन अमृत तुल्य हो जाता है और प्रातः बेला में अपना अमृत या संजीवनी प्राण-तोषक प्रभाव विख्यात हो जाती है।

यों भी सामान्य विज्ञान की दृष्टि से देखा जाएं, तो भी प्रातः बेला की वायु का विशेष महत्व है। सामान्यतः वायुमण्डल

का 21 प्रतिशत भाग ऑक्सीजन अर्थात् शुद्ध प्राणप्रद वायु द्वारा निर्मित होता है, परन्तु प्रातः काल में ऑक्सीजन का यह प्रतिशत दिवस के अन्य किसी समय की अपेक्षाकृत अधिक हो जाता है।

जितने भी महान व्यक्ति हुए हैं, वे सभी सूर्योदय के पूर्व ही उठते रहे हैं, इसलिए साधक जीवन में सूर्योदय के पूर्व उठना तो और भी आवश्यक है।

### प्रातः उठने का प्रयोग

आलस्य के कारण व्यक्ति प्रातः बेला में उठता नहीं है, और अलसाया सा पड़ा रहता है। इसके लिए रात्रि में सोने से पूर्व यदि व्यक्ति यह संकल्प लेकर सोए कि कल प्रातः अमुक समय पर नींद खुल जाए, तो निश्चय ही उस समय पर नींद खुलती है-यह अनुभूत प्रयोग है, जिसका साधक के मन से सीधा सम्बन्ध होता है। और यदि पहले दिन नींद खुलने पर आलस्य का आश्रय नहीं लिया गया, तो फिर कुछ ही दिनों में सूर्योदय के पूर्व उठने की शुभ आदत पढ़ जाएगी।

### शारीरों में दिन में दो बार मल विसर्जन का निर्देश क्यों?

आयुर्वेद शास्त्रों के अनुसार प्रत्येक मनुष्य को दिन में दो बार शौच जाना स्वास्थ्य की दृष्टि से लाभकारी माना गया है - प्रातः काल शश्या से उठने के पश्चात और फिर दूसरी बार सायंकाल 4 या 5 बजे के लगभग।

दो बार शौच जाने से शरीर की आंतों में जो भी मल इकट्ठा होता है, वह निकलता जाता है - इस प्रकार शरीर निर्मल बना रहता है, जिससे मन में एक प्राणशक्ति सतत रूप से संचरित रहती है, कार्य करने में मन लगता है और एक आनन्दप्रद स्थिति बनी रहती है। जप, ध्यान आदि में भी मन तभी एकाग्र हो पाता है, जब शरीर निर्मल हो।

शहरों में अधिकांश व्यक्तियों को कोष्टबद्धता (कब्ज) की शिकायत रहती है। अनियमित शौच से अवशिष्ट मल काली-काली गांठें बनकर आंतों में चिपकता जाता है और फिर यह बीमारी का रूप ले लेता है, जिससे हर समय थकान, सिर दर्द और उदासी बनी रहती है। दो बार शौच से आंतों की अच्छी सफाई हो जाती है।

यों भी योगासन की अनेक विधियां हैं, जिनके द्वारा साधक शरीर शुद्धि करते हैं, कभी उन क्रियाओं के बारे में विस्तार से विवेचन किया जाएगा।

### जिजासा

साधनात्मक जीवन से यम्बनिधित व्यक्ति के मन में प्रश्नों का उठना रुक्षाभाविक है। ऐसे ही प्रश्नों का विवेचन करने के लिए यह बीचिक्षा विवेचनात्मक उत्तम आरम्भ किया गया है। पश्चिका पठिवाट आपके ज्ञानात्मक प्रश्नों का रुक्षागत कठवा है। ऐसा कोई प्रश्न यदि आपके मानस में हो, तो आप उसे एक पोर्टफॉर्ड में (पोर्टफॉर्ड में ऊपर 'गिजाया' अवश्य लिखें।) में दो-चार लाईन में लिखकर गोधपुट पढ़े पर भेजें।

यथासामय उस प्रश्न का विवेचन प्रवृत्तुत किया जाएगा।

### साधना के पूर्व स्नान क्यों आवश्यक?

प्रतिदिन प्रातः स्नान करके शुचि होकर साधना, पूजन आदि करने का नियम बताया गया है। स्नान किया से तात्पर्य शारीरिक शुद्धि का है। त्वचा में अंसरव्य छोटे-छोटे छिद्र होते हैं, जिनके अन्दर से पसीना निकलता है। वायु के स्पर्श में आकर यह पसीना सूख जाता है और मैल बनकर त्वचा छिद्रों में रहकर सूख जाता है। इस मैल के रहते साधना कर्म में चैतन्यता संभव नहीं है।

पूज्य गुरुदेव जब चेतना मंत्र देते हैं - 'उँ हीं मम प्राण देह रोम प्रतिरोम चैतन्य जाग्रत्य हीं उँ नमः' तो आशय यह होता है, कि साधक में इतनी अधिक चेतना आ जाए, कि उसके एक-एक रोम से मंत्र का उच्चारण हो, एक-एक रोम से गुंजरण होने लगे। परन्तु यदि उसके रोम छिद्रों में पहले से ही मैल भरा हुआ है तो इस मंत्रात्मक ऊर्जा का, चैतन्यता के प्रत्येक रोम में स्थापन की बात तो बहुत दूर की बात है।

साधना से पूर्व स्नान कर लेने से जहां रोम छिद्रों का मैल निकल जाता है, वहीं शारीरिक ऊर्जा से त्वचा में जल तत्व की जो कमी उत्पन्न हो गई थी, वह भी पूरी हो जाती है।

दैनिक चर्या का साधक जीवन में उतना ही महत्व है, जितना कि विधि विधान या शुद्ध मंत्रोच्चार का, इसी क्रम में कुछ और सूत्र अगले अंक में प्रस्तुत किये जाएंगे।

जहां शक्ति अपने तीनों रूपों में विद्यमान है  
जो योग माया प्रकृति है

जिसे सिद्ध करने से प्राप्त होती है

**महाकाली, महालक्ष्मी, महासरस्वती**

ऐसी अद्भुत देवी है



# अृष्णाचली विंध्याचलालिङ्गी

जीवन तो अविरल यात्रा है उसमें उक दो नहीं हजारों तूफान आते हैं बाधाएँ, परेशानियां आती हैं। सुख की तलाश में व्यक्ति भटकता ही रहता है, उसकी कामनाएँ अधूरी रह जाती हैं, इन समस्याओं के समाधान हेतु साधना सर्वोपरि उपाय है। शक्ति साधना में विंध्यवासिनी साधना का उच्च स्थान है, गृहस्थ साधकों के लिए उक वरदान है जिसे सम्पन्न कर श्रोग, काम और सिद्धि प्राप्त होती है। शत्रुओं और बाधाओं का अन्त हो जाता है। ऐसी द्वितीय साधना है विंध्यवासिनी साधना -

वर्तमान में उत्तर प्रदेश में मिर्जापुर के पास विन्ध्याचल पुरोहित के रूप में ऋषि अगत्स्य को आमंत्रित किया। ऋषि ने पर्वत पर मां विंध्यवासिनी का शक्तिपीठ है और वहीं गुफा में यज्ञ को सम्पन्न कराया और कारण पूछा कि क्यों सभी लोग स्थित एक काली मंदिर है। दूसरी ओर अष्टभुजा स्वरूप में इतने दुःखी दिखाई दे रहे हैं? लोगों ने अपनी व्यथा बताई। सरस्वती मंदिर है। विंध्यवासिनी देवी को पर्वत निवासिनी शक्ति रूपा दुर्गा का स्वरूप माना गया है जो त्रिशूल और मुण्ड धारण किये हुए है। जिनका स्वरूप अत्यन्त विशाल है। जो शत्रुओं का संहार करती है तथा अपने भक्त को विशुद्ध बुद्धि प्रदान करती है।

विंध्याचल पर्वत के बारे में द्वापर युग से पहले से ही देवी भागवत में एक विशिष्ट कथा आती है। इस कथा के अनुसार गंगा के किनारे विंध्याचल पर्वत का आकार निरंतर बढ़ता ही जा रहा था। गंगा के किनारे रहने वाले लोगों को असुविधा होने लगी क्योंकि विंध्याचल पर्वत की ऊँचाई ने सूर्य की रोशनी को ही मंद कर दिया था। उस क्षेत्र के निवासियों ने सोचा कि यदि विंध्याचल पर्वत इसी प्रकार बढ़ता रहा तो अपने तीनों रूपों में महाकाली, महासरस्वती, महालक्ष्मी एक दिन सूर्य की रोशनी बिल्कुल ही नहीं दिखाई देगी। तब विराजमान होगी तथा विंध्याचल की परिक्रमा, हिमालय की सृष्टि में वनस्पति, जीव-जन्तु कैसे वृद्धि कर सकेंगे? कोई परिक्रमा के समान ही पूर्ण दायिनी होगी। तब से विंध्याचल उपाय ना मिलने पर एक महायज्ञ का आयोजन किया और यज्ञ पर्वत पर देवी का जाज्वल्य शक्ति पीठ स्थित है।

इसके अलावा श्रीमद्भागवत में देवी उत्पति के सम्बन्ध में विंध्यवासिनी शक्तिपीठ है।  
एक विशेष घटना का उल्लेख मिलता है -

श्रीमद्भागवत में कृष्ण के जन्म की कथा तो सभी साधक भली भांति जानते हैं कि किस प्रकार देवकी के गर्भ से भगवान श्रीकृष्ण का जन्म हुआ और ठीक उसी समय वृद्धावन में यशोदा और नंद के घर कन्या का जन्म हुआ। श्रीकृष्ण की लीला से कारागार के द्वार खुल गये और श्रीवासुदेव कृष्ण को लेकर नंद के यहां पहुंचे और वहां से नंद-पुत्री को लेकर पुनः मथुरा में कारागार में पहुंचे। जब प्रातः कंस को मालूम हुआ कि देवकी के गर्भ से पुत्र नहीं, पुत्री हुई है तो उसे बड़ा आश्चर्य हुआ, क्योंकि नारद ऋषि ने कहा था कि देवकी के गर्भ से आठवीं संतान पुत्र होगा और वही तुम्हारा संहार करेगा लेकिन कंस ने सोचा कि शंका को क्यों रखा जाएं, अतः उसने उस कन्या को ही मार डालने का निश्चय किया। जैसे ही उसने उस कन्या को पकड़ा और पत्थर पर मारने के लिये फेंका उसी समय वह कन्या हाथ से छिटक कर आकाश मार्ग को चली गई। वह कन्या कोई साधारण कन्या नहीं थी। शक्तिरूपा योगमाया थी। योगमाया ने आकाश वाणी करते हुए कंस को कहा कि तुम्हारा वध तो निश्चित है और तुम्हें मारने वाला इस संसार में उत्पन्न हो गया है।

इसके आगे की कथा तो सभी जानते हैं। वास्तव में भगवान श्रीकृष्ण ने शक्ति के रूप में योगमाया को अपने साथ रूप बदलने को कहा क्योंकि वे संसार को शक्ति से परिवित कराना चाहते थे और उस युग में शक्तिपूजा को लोग भूल गये थे। आसुरी प्रवृत्तियां अधिक हावी होने लगी थीं। ऐसे समय में शक्ति को प्रकट करना आवश्यक था। इस योगमाया शक्ति को भगवान श्रीकृष्ण ने वरदान दिया कि - हे शक्ति, आपने इस जगत में जो महान् कार्य किया है उसके फलस्वरूप आपकी पूजा संसार में हर समय होंगी और पर्वतों के राजा विंध्याचल पर आप लक्ष्मी शक्ति रूप में विराजमान होंगी और आपके साथ ही, गृह्यकाली तथा अष्टभुजा सरस्वती विराजमान होंगी। आपका आसन पर्वत पर उस स्थान पर होगा जहां विराजकर आप गंगा को निरन्तर देख सकेंगी तथा काशी में स्थित विश्वनाथ आपके सम्मुख सदैव रहेंगे।

### विंध्यवासिनी पूजन स्थान

विंध्यवासिनी मंदिर का पूरा समूह पर्वत पर स्थित है और इसके स्वरूप की ओर ध्यान दिया जाये तो यह स्वरूप श्रीयंत्र के रूप में है। उसी रूप में द्वार बने हुए हैं, उसी रूप में श्रीयंत्र में जहां मध्य रूप में शक्ति स्थित है, उसी स्थान पर जीवन का ध्येय होता है) प्राप्त कर लेता है।

मैंने अपने जीवन में कई प्राचीन मंदिरों की यात्रा की है, लेकिन विंध्यवासिनी मंदिर क्षेत्र में प्रवेश करते ही रोम-रोम में चेतना जाग्रत हो जाती है। ऐसा लगता है कि शक्ति अपने साकार रूप में विराजमान है, कुछ वर्षों पहले तक बलि प्रथा विद्यमान थी लेकिन अब इसे प्रथा को बन्द कर दिया है। आज भी यह मान्यता है कि नव-विवाहित विवाह के पश्चात् आशीर्वाद प्राप्त करने जाते हैं तो उन्हें अक्षुण्ण सौभाग्य प्राप्त होता है।

एक ही देवी, जिसके तीनों रूप साक्षात् हैं, जो क्रिया, ज्ञान और इच्छा रूप में साधक का कल्याण कर सकती है वह देवी विंध्यवासिनी है।

आज के इस कलियुग में जीना कोई आसान बात नहीं होती, हर व्यक्ति एक-दूसरे पर हावी होने की कोशिश करता है और अपने को शक्तिमान घोषित करने का प्रयास करता रहता है। आये दिन की परेशानियां, आपदाएं, जो गृहस्थ जीवन से सम्बन्धित होती हैं, प्रत्येक मनुष्य को झेलनी पड़ती हैं और ऐसे में उसे आवश्यकता पड़ती है एक ऐसी शक्ति की जिससे वह अपने जीवन को भली-भांति विभिन्न विपदाओं और बाधाओं से सुरक्षित रख सके किन्तु मां के आशीर्वाद से बढ़कर उसके लिए कोई शक्ति नहीं होती और एक मां ही हर पल, हर क्षण अपने पुत्र की देखभाल कर सकती है, उसकी सुरक्षागमिनी हो सकती है। इसलिए उसे अपने इस भौतिक जीवन को सुरक्षित एवं श्रेष्ठ बनाने के लिए 'मां' की अर्थात् उस 'देवी शक्ति' की पूजा-आराधना करनी ही चाहिए।

अपने भौतिक जीवन को श्रेष्ठतापूर्ण बनाने के साथ-साथ उसे अपने अध्यात्मिक जीवन को भी श्रेष्ठ बनाना चाहिए क्योंकि मात्र भौतिक जीवन में पूर्णता प्राप्त करना ही सब कुछ नहीं होता। एक मनुष्य के लिए उसका श्रेष्ठ जीवन तो गृहस्थ के उन्नति पथ पर बढ़ते हुए आध्यात्मिक स्तर की ऊँचाई को प्राप्त कर लेना और उस ब्रह्म में लीन हो जाना है, जिसका वह अंश है।

गृहस्थ जीवन को पूर्णता के साथ जीते हुए अध्यात्म की ओर बढ़ना तो तलवार की धार पर चलने के समान ही होता है, जिस पर चलकर पैर लहूलुहान हो जाते हैं किन्तु 'विंध्यवासिनी', जो कि अपने दिव्य स्वरूप से सुशोभित पूर्ण शक्तिमान स्वरूप हैं, साधक या व्यक्ति को उस पथ की ओर गतिशील होने के लिए ऐसा वृहद् अस्त्र प्रदान करती हैं, जिससे वह जीवन की सर्वोच्चता को (जहां पहुंचना मानव-जीवन का ध्येय होता है) प्राप्त कर लेता है।

‘विंध्यवासिनी’ अत्यन्त गोपनीय साधनाओं में से एक है, यह अपने-आप में इतनी पूर्ण है कि महाविद्याओं की साधना से साधक को जो शक्ति प्राप्त होती है, वैसी ही शक्ति इस साधना को सिद्ध करके प्राप्त की जा सकती है।

विश्वामित्र ने अपने प्रसिद्ध ग्रंथ 'विश्वामित्र संहिता' में बताया है कि 'विंध्यवासिनी जीवन की श्रेष्ठ साधनाओं में से एक है।'

‘त्रिजटा अधोरी’ के शब्दों में, ‘यह सिद्धाश्रम से सीधा सम्बन्ध स्थापित करने की सर्वश्रेष्ठ साधना है।’

आद्यशंकराचार्य जैसे योगी और गोरखनाथ आदि उच्चकोटि के साधकों ने इस साधना को गोपनीय एवं अद्वितीय बताया है और इस साधना को सम्पन्न कर विशेष प्रकार की शक्ति को प्राप्त किया है।

‘विध्यवासिनी’ मां दुर्गा का ही रक्षा स्वरूप हैं, जो अपने साधक की हर क्षण रक्षा करती हैं, उसको जीवन की विभिन्न उलझनों से, परेशानियों से मुक्ति दिलाती हैं और यदि साधक इस सिद्धि को प्राप्त कर ले तो उस पर किसी प्रकार की बाधा का प्रकोप-प्रभाव नहीं पड़ सकता, यहां तक कि यदि कोई ‘कृत्यावार’ (एक प्रकार का तीव्र तांत्रिक प्रयोग) होता है, जिसका वार कभी खाली नहीं जाता, उस वार को निष्फल करना कोई आसान बात नहीं होती, उससे भी मुक्ति का मार्ग इस साधना से संभव हो जाता है।

यह एक तांत्रोक्त साधना है और प्रत्येक तांत्रिक उसकी महत्ता अवश्य ही समझता होगा क्योंकि यह तंत्र का बेजोड़ एवं अचूक सफलतादायक तीव्र प्रयोग है जिसे सम्पन्न करने पर वह साधक, जिसने इस विद्या को सिद्ध कर लिया हो, विशिष्ट शक्तिशाली बन जाता है क्योंकि 'विंध्यवासिनी यंत्र' के द्वारा पूजन सम्पन्न करने पर, उस साधक को एक विशेष प्रकार की तेजस्विता, ऊर्जा-शक्ति प्राप्त होने लगती है, जो एक कवच की भाँति ही उसके चारों ओर रक्षक के रूप में हर क्षण कार्य करती रहती है।

विंध्यवासिनी तीव्र से तीव्र प्रहरों को भी निष्फल करने की अचूक साधना है, जो बड़े-बड़े ऋषियों-मुनियों के लिए भी दुर्लभ है। इस विद्या को सिद्ध कर लेने के बाद अन्य साधनाओं में स्वतः ही शीघ्र सफलता मिलने लग जाती है। व्यक्ति या साधक इस विद्या में सिद्धहस्त हो जाने से अपनी सभी मनोच्छाओं को मन ही मन स्मरण कर के, विंध्यवासिनी देवी का ध्यान कर लेने मात्र से ही पूर्ण कर लेता है। इस प्रकार वह शत्रु-बाधा, राज्य-बाधा, व्यापार-बाधा आदि विभिन्न आपदाओं

से मक्कि पा लेता है।

यह साधना सूर्य सिद्धान्त की आधारभूत साधना है। इससे सूर्य की किरणों द्वारा पदार्थ परिवर्तन क्रिया स्वतः ही सिद्ध हो जाती है। इसके द्वारा साधक अपनी इच्छानुसार आयु प्राप्त कर सकता है, और सबसे महत्वपूर्ण बात तो यह है कि इसके द्वारा सिद्धाश्रम में भी प्रवेश पाया जा सकता है।

सामग्री : विंध्यवासिनी यंत्र, विजय माला, चार लघु  
नारियल।

20 जून 2007 को अरण्य घट्ठी एवं विंध्यवासिनी सिद्धि दिवस है। साथक इस दिन साधना को प्रारम्भ कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त किसी शुक्ल पक्ष की घट्ठी अथवा शुक्रवार को यह साधना प्रारम्भ की जा सकती है।

साधना वाले दिन साधक प्रातः स्नान कर लाल धोती पहिन कर गुरु चादर ओढ़ लें तथा लाल आसन पर दक्षिण दिशा की ओर मुंह करके बैठ जाएं। अपने सामने लकड़ी की चौकी पर लाल वस्त्र बिछायें तथा तांबे की प्लेट में कुंकुम से 'वली' मंत्र लिखें, 'विंध्यवासिनी यंत्र' का दूसरे पात्र में स्नान करवाकर, तांबे के प्लेट में लिखें 'वली' मंत्र के ऊपर स्थापित करें। 'लघु नारियलों' को यंत्र की चारों दिशाओं में धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष के प्राप्ति स्वरूप स्थापित कर दें।

इसके पश्चात् यंत्र व नारियलों पर कुंकुम से तिलक करें तथा अक्षत, पुष्प एवं धूप व दीप से पूजन कर 'विजय माला' से निम्न मंत्र का 11 माला जप करें -

四

॥ ओं ह्रीं क्लीं विन्ध्यवासिन्ये फट ॥

जप समाप्ति के पश्चात् सारी सामग्री माला सहित एक लाल कपड़े में बांध कर किसी नदी या तालाब में विसर्जित कर दें। साधना प्रारम्भ करने से पूर्व गुरु पूजन एवं गुरु मंत्र अवश्य ही जप लेना चाहिए और इसकी समाप्ति के पश्चात् गुरु आरती अवश्य करें।

यह एक दिन की साधना है, साधना के समय साधक को कई प्रकार के अनुभव होंगे, इससे विचलित, व घबराने की आवश्यकता नहीं है। प्रत्येक साधक को इसे अपने उपरोक्त दोषों तथा निश्चित मनोकामना सिद्धि हेतु अवश्य ही सम्पन्न करना चाहिए क्योंकि यह साधना समस्त रोग, शोक से हमारी रक्षा करती है।

साधना सामग्री - 410/-

# काश्यत्रों की वापी

## मेष -

कार्य का बोझ आप पर भारी रहेगा, परंतु आप सभी विपरीत परिस्थितियों से जूझते हुए अपने कार्य को पूर्णता दे पाएंगे, माह के अंत में कोई शुभ समाचार प्राप्त होगा जिससे आप प्रफुल्लित अनुभव करेंगे। नए लोगों से आपका सम्पर्क बनेगा तथा निकट भविष्य में वे आपके लिए सहायक सिद्ध होंगे। जर्मीन जायदाद को लेकर कोई मामला अगर अटका हुआ है तो इस माह उसके आपके पक्ष में सुलझ जाने की पूर्ण संभावना है। आप 'बगलामुखी साधना' (फरवरी 2007) करें। तिथियां - 2, 6, 7, 12, 17, 19, 24 हैं।

## वृष -

उत्तरि के कई मार्ग इस माह आपके लिए स्वतः ही खुलेंगे तथा आप असमंजस में पड़ जाएंगे कि अनेक में से किस अवसर का लाभ उठाएं। निर्णय लेते समय केवल आर्थिक पक्ष को ही ध्यान में न रखें। नौकरी पैशा वर्ग को उच्चपद, वेतन वृद्धि या पदोन्नति प्राप्त हो सकती है तथा व्यापारियों को आशातीत लाभ। किसी नवीन कार्य को प्रारंभ करने का अति उत्तम समय है। परिवार का कोई हर्ष प्रदान करने वाला समाचार प्राप्त होगा। जर्मीन जायदाद के क्रम विक्रम में थोड़ा सावधान रहने की आवश्यकता है। आप 'विष्णु साधना' (जनवरी 2007) करें। तिथियां - 4, 5, 8, 14, 17, 19, 22, 31 हैं।

## मिथुन -

इस माह आपको विशेष समारोहों और उत्सवों में भाग लेने का अवसर मिलेगा जिससे मन प्रसन्न होगा। आप दुग्ने उत्साह के साथ अपने कार्य क्षेत्र में अग्रसर होंगे तथा लोग आपके कार्य की सराहना भी करेंगे। व्यापारी वर्ग के लिए भी समय अनुकूल है तथा किसी बड़े लाभ की आशा की जा सकती है। घर पर जर्मीन अतिथि के आने से वातावरण प्रसन्नतापूर्ण होगा। जर्मीन जायदाद से संबंधित लंबे समय से चला आ रहा कोई विवाद इस माह सुलझ सकता है और बहुत संभव है कि निर्णय आपके ही पक्ष में हो। आप 'शनि साधना' (अप्रैल 2007) करें। तिथियां - 2, 4, 9, 11, 18, 22, 27 हैं।

## कक्ष -

इस माह मित्र और संबंधी आपसे सहयोग की अपेक्षा रखेंगे तथा आपकी सहायता से उनके महत्वपूर्ण कार्य संपन्न होंगे। बेरोजगार व्यक्तियों के नौकरी प्राप्ति के अच्छे अवसर भी सामने आएंगे। साधनात्मक दृष्टि से यह माह आपके लिए अनुकूल है तथा आप पूर्ण श्रद्धा के साथ साधना करते हैं तो अवश्य आपको सफलता प्राप्त होगी। आपका स्वास्थ्य ठीक रहेगा और आप जोश के साथ अग्रसर हो सकेंगे। वाहन के क्रय-विक्रय में लाभ होगा। आप 'हनुमान साधना' (मार्च 2007) करें। तिथियां - 8, 12, 15, 19, 25, 28 हैं।

## सिंह -

इस माह आवश्यक है कि आप अपने कार्य और परिवार के प्रति अपने कर्तव्यों के बीच एक सही संतुलन बना कर चलें। दोनों ही ओर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। हो सकता है कि इस प्रयास में आप अपने को बहुत व्यस्त तथा थका हुआ अनुभव करें परंतु माह के अंत तक आपको अवश्य राहत मिलेगी तथा आप कुछ समय मनोरंजन तथा आराम से बिता पाएंगे। इतनी व्यस्ता के बाद भी आपका स्वास्थ्य ठीक रहेगा तथा आप पूर्ण जोश के साथ अपने कर्तव्यों का निर्वाह कर सकेंगे। आप लाभ प्राप्ति हेतु 'नवार्ण मंत्र साधना' (फरवरी 07) अवश्य करें। तिथियां - 3, 8, 10, 17, 23, 25 हैं।

## कन्या -

किसी अनजान व्यक्ति व्यक्ति से आपकी भैंट होगी तथा वह आश्चर्यजनक रूप से आपके लिए सहायक सिद्ध होगा। परिवार जनों से एवं सम्बन्धियों से मधुर सम्बन्ध रहेंगे तथा वे विशेष रूप से आप से प्रसन्न रहेंगे। शारीरिक पीड़ा का सामना करना है तथा किसी बड़े लाभ की आशा की जा सकती है। घर पर पड़ सकता है परंतु चिंता की कोई बात नहीं है। माह के अन्त तक आप पूर्ण स्वस्थ अनुभव करेंगे। खान पान का विशेष ध्यान रखें तथा बाहर बनी वस्तुओं को नहीं खाएं तो अच्छा होगा। कार्य क्षेत्र या व्यवसाय में शिथिलता होने पर भी स्थिति संतोषजनक बनी रहेगी। आप 'नृसिंह साधना' (अप्रैल 2007) करें। तिथियां - 5, 7, 8, 13, 20, 26 हैं।

## तुला -

हो सकता है इस माह आपका चित्त अस्थिर रहे और आप निर्णय न ले पाएं कि जिस कार्य अथवा नौकरी में लगे हुए हैं वही करते रहें या किसी नए कार्य या नौकरी को कर लें। आप स्वयं निर्णय न ले पाएं तो किसी शुभ चिंतक की सलाह ले लें। किसी बात को लेकर जीवनसाथी या परिवार के अन्य सदस्य से मतभेद हो सकता है। क्रोध की अपेक्षा संयम से काम लें। आध्यात्मिक विषयों में रुचि होने से आप इस माह तीर्थ यात्रा पर जा सकते हैं। इससे आपको मन की अपूर्व शांति मिलेगी। आप अनुकूलता हेतु 'काल भैरव साधना' (मार्च 2007) करें। तिथियां - 7, 12, 19, 26, 27 हैं।

## वृश्चिंचक -

यह माह आपके लिए पूर्णतः अनुकूल सिद्ध होगा। आकस्मिक धन प्राप्त हो सकता है। आप उस प्राप्त धन से अपने घर में कुछ नवीनता लाने का प्रयास करेंगे। यात्रा के लिए भी समय उत्तम है तथा यात्राओं से आपको आशातीत लाभ होगा। मित्रों और संबंधियों से मेल मिलाप के कारण आपका मन प्रसन्न रहेगा। पुराने बिछड़े हुए मित्रों से भी भेट हो सकती है। कार्य क्षेत्र या व्यापार में वातावरण अनुकूल ही रहेगा तथा सामान्य से अधिक लाभ होगा। आप लाभ प्राप्ति हेतु 'कुल-देवी कुल देवता साधना' (जनवरी 2007) अवश्य सम्पन्न करें। तिथियां - 4, 7, 10, 14, 18, 26, 29 हैं।

## धनु -

राजनीति से जुड़े व्यक्तियों को इस माह थोड़ा सावधान रहने की आवश्यकता है। मानहानि का भय हो सकता है। नौकरी पेश व्यक्तियों को चाहिए कि अपने उच्च अधिकारियों से मतभेद न होने दें तथा उनसे मधुर संबंध बनाए रखें। व्यापारी वर्ग के लिए समय उत्तम रहेगा। परिवारिक उत्तरदायित्वों का पूर्ण निर्वाह करें तथा कार्य में व्यस्तता के कारण परिवार के सदस्यों की उपेक्षा न करें। विद्यार्थियों के लिए यह समय चुनौती पूर्ण सिद्ध होगा तथा अगर वे परिश्रम करेंगे तो उन्हें अवश्य सफलता प्राप्त होगी। आप 'बगलामुखी साधना' (फरवरी 07) करें। तिथियां - 5, 14, 16, 19, 22, 26 हैं।

## मकर -

इस माह आप अपने को अत्यधिक उत्साहित अनुभव करेंगे। उच्च मनोबल के साथ-साथ स्वास्थ्य भी आपका अनुकूल रहेगा। पुराने मित्रों एवं सम्बन्धियों से भी मेल मिलाप के कारण मन में प्रसन्नता बनी रहेगी। माह के मध्य में आपको

**सर्वार्थ, अमृत, त्रिपुष्कर, सिद्धि योग:** सिद्ध योग 1, 9, 15, 23, 29, 31 मई/9, 27 जून ☆ सर्वार्थ सिद्ध योग 6, 10, 15, 18, 27, 31 मई/3, 7, 19, 28 जून ☆ अमृत सिद्ध योग 15, 27 मई ☆

आकस्मिक धन लाभ हो सकता है तथा उस धन को आप किसी आध्यात्मिक अथवा धार्मिक आयोजन में व्यय करने के लिए प्रेरित होंगे। महिलाओं के लिए यह समय विशेष प्रगति का है। आप 'अक्षयपात्र साधना' (अप्रैल 2007) सम्पन्न करें। तिथियां - 3, 5, 12, 17, 19, 25 हैं।

## कुंभ -

आप संघर्ष से घबराते नहीं तथा कोई भी स्थिति क्यों न हो आप विचलित नहीं होते। इस माह में कई चुनौतियों का सामना आपको करना पड़ सकता है परन्तु आप संयम एवं मौलिक सूझबूझ द्वारा उन सब पर विजय प्राप्त कर पाएंगे। मित्र एवं स्वजन भी बहुत हृद तक सहायक सिद्ध होंगे। श्रमिक वर्ग के लिए समय अच्छा है तथा उनको वेतन वृद्धि प्राप्त हो सकती है। अगर नए मकान को खरीदने की सोच रहे हैं तो अभी ठहरें, उसके लिए समय अनुकूल नहीं। अभी सौदा किया तो बाद में पछताना पड़ सकता है। आप 'नवार्ण मंत्र साधना' (फरवरी 2007) करें। तिथियां - 5, 9, 14, 17, 21, 28 हैं।

## मीन -

इस माह आप हर क्षेत्र में नवीनता लाने का प्रयास करेंगे चाहे वह कार्य क्षेत्र हो, व्यापार या फिर घर परिवार। आपकी नवीन कार्यशैली की लोग प्रशंसा करेंगे तथा अधिकारी भी संतुष्ट होंगे। घर में आप नया सामान खरीदकर या घर की सजावट में परिवर्तन कर के नवीनता लाने का प्रयास करेंगे। विद्यार्थियों के लिए यह माह महत्वपूर्ण सिद्ध होगा, उन्हें आशातीत परिणाम प्राप्त हो सकते हैं। आध्यात्म, मंत्र तंत्र और साधनाओं में आपकी रुचि बढ़ेगी। आप 'अक्षयपात्र साधना' (अप्रैल 2007) करें। तिथियां - 1, 3, 9, 17, 18, 22, 28 हैं।

## इस मास के व्रत, पर्व एवं त्यौहार

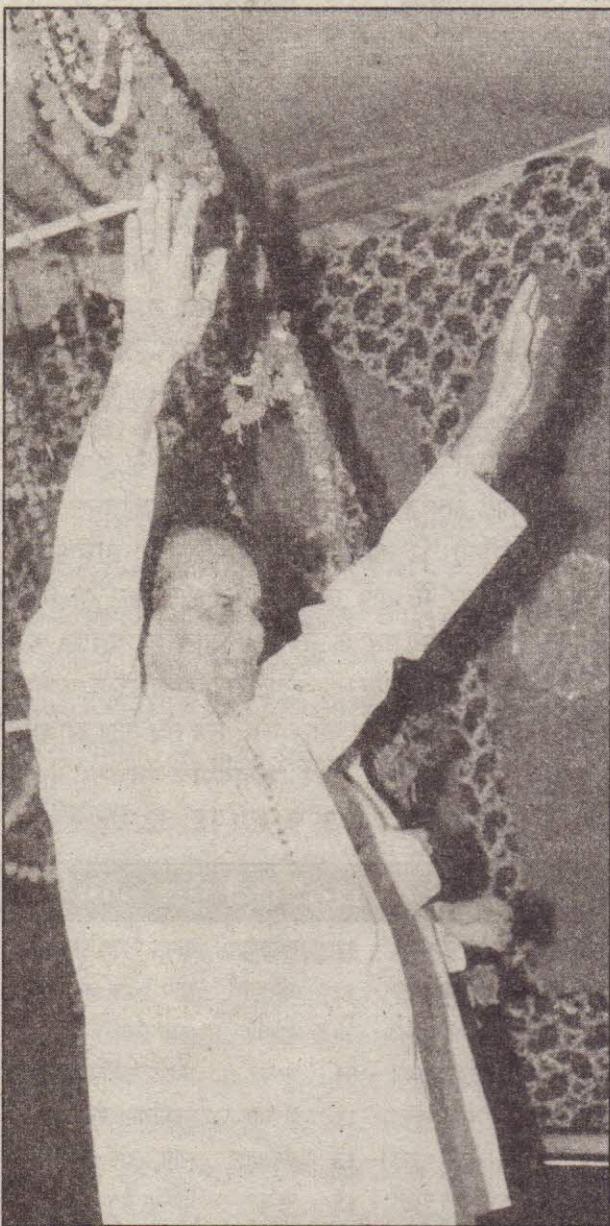
13 मई	ज्येष्ठ कृष्ण - 11	रविवार	अपरा एकादशी
14 मई	ज्येष्ठ कृष्ण - 12	सोमवार	सोम प्रदोष व्रत
16 मई	ज्येष्ठ कृष्ण - 30	बुधवार	अमावस्या
17 मई	ज्येष्ठ शुक्ल - 01	गुरुवार	ज्येष्ठ अधिक मास प्रा.
27 मई	ज्येष्ठ शुक्ल - 11	रविवार	पुरुषोत्तमा एकादशी
29 मई	ज्येष्ठ शुक्ल - 13	मंगलवार	सोम प्रदोष व्रत
31 मई	ज्येष्ठ शुक्ल - 15	गुरुवार	पूर्णिमा व्रत
11 जून	ज्येष्ठ कृष्ण - 11	सोमवार	कमला एकादशी व्रत

# रामाया हूँ

साधक, पाठक तथा सर्वजन सामान्य के लिए समय का वह रूप यहां प्रस्तुत है जो किसी भी व्यक्ति के जीवन में उन्नति का कारण होता है तथा जिसे जान कर आप स्वयं अपने लिए उन्नति का मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं।

नीचे दी गई सारिणी में समय को श्रेष्ठ रूप में प्रस्तुत किया गया है - जीवन के लिए आवश्यक किसी भी कार्य के लिये, वहे वह व्यापार से सम्बन्धित हो, नौकरी से सम्बन्धित हो, घर में शुभ उत्सव से सम्बन्धित हो अथवा अन्य किसी भी कार्य से सम्बन्धित हो, आप इस श्रेष्ठतम समय का उपयोग कर सकते हैं और सफलता का प्रतिशत 99.9% आपके भाव्य में अंकित हो जायेगा।

**ब्रह्म मुहूर्त का समय प्रातः 4.24 से 6.00 बजे तक ही रहता है।**



वार/दिनांक	श्रेष्ठ समय
रविवार (मई 6, 13, 20, 27) (जून 3, 10)	दिन 06:00 से 08:24 तक 11:36 से 02:48 तक 03:36 से 04:24 तक  रात 06:48 से 10:00 तक 12:24 से 02:48 तक 04:24 से 06:00 तक
सोमवार (मई 7, 14, 21, 28) (जून 4, 11)	दिन 06:00 से 07:30 तक 09:12 से 11:36 तक  रात 08:24 से 11:36 तक 02:48 से 03:36 तक
मंगलवार (मई 8, 15, 22, 29) (जून 5)	दिन 10:00 से 11:36 तक 04:30 से 06:00 तक  रात 06:48 से 10:00 तक 12:24 से 02:48 तक 05:12 से 06:00 तक
बुधवार (मई 9, 16, 23, 30) (जून 6)	दिन 06:48 से 10:00 तक 02:48 से 05:12 तक  रात 07:36 से 09:12 तक 12:00 से 02:48 तक
गुरुवार (मई 3, 10, 17, 24, 31) (जून 7)	दिन 06:00 से 07:36 तक 10:00 से 11:36 तक 04:24 से 06:00 तक  रात 09:12 से 11:36 तक 02:00 से 04:24 तक
शुक्रवार (मई 4, 11, 18, 25) (जून 1, 8)	दिन 06:00 से 06:48 तक 07:36 से 10:00 तक 12:24 से 03:36 तक  रात 07:36 से 09:12 तक 10:48 से 11:36 तक 01:12 से 02:48 तक
शनिवार (मई 5, 12, 19, 26) (जून 2, 9)	दिन 06:00 से 06:48 तक 10:30 से 12:24 तक  रात 08:24 से 10:48 तक 02:48 से 03:36 तक 05:12 से 06:00 तक

# यह हमने नहीं करा हमि हिरु ने कहा है

किसी भी कार्य को प्रारम्भ करने से पूर्व प्रत्येक व्यक्ति के मन में संशय-असंशय की भावना रहती है कि यह कार्य सफल होगा या नहीं, सफलता प्राप्त होगी या नहीं, बाधाएं तो उपरिथत नहीं हो जायेगी, पता नहीं दिन का प्रारम्भ किस प्रकार से होगा, दिन की समाप्ति पर वह स्वयं को तबावरहित कर पायेगा या नहीं। प्रत्येक व्यक्ति कुछ ऐसे उपाय अपने जीवन में अपनाना चाहता है जिनसे उसका प्रत्येक दिन उसके अनुकूल एवं आनन्द युक्त बन जाय। कुछ ऐसे ही उपाय आपके समक्ष प्रस्तुत हैं जो तराहमिहर के विविध प्रकाशित-अप्रकाशित ग्रन्थों से संकलित हैं, जिन्हें यहां प्रत्येक दिवस के अनुसार प्रस्तुत किया गया है तथा जिन्हें सम्पन्न करने पर आपका पूरा दिन पूर्ण सफलतादायक बन सकेगा।

## जून

1. प्रत्येक कर्य से पूर्व 'हीं' बीज का सात बार जप करें।
2. प्रातः काल तुलसी के पौधे में जल अर्पित कर, कुकुम, अक्षत, दीपक से पौधे का पूजन करें।
3. प्रातः काल 'सीपी' (न्यौछावर 60/-) का जलाभिषेक कर एवं संक्षिप्त पूजन कर किसी चौराहे पर रख दें।
4. 'शिव महिमा स्तोत्र' (न्यौछावर 30/-) कैसेट का श्रवण करें।
5. आप अपने वस्त्रों में सफेद रंग की प्रधानता रखें, आपका दिन शुभ रहेगा।
6. प्रातः 'मधुरपेण रुद्राक्ष' (न्यौछावर 100/-) का पूजन कर किसी गणेश मंदिर में मनोकामना पूर्ति हेतु चढ़ा दें, सफलता प्राप्त होगी।
7. प्रातः काल 'निखिलेश्वर शतकम्' के 10 श्लोकों का पाठ अवश्य करें।
8. प्रसन्नता प्राप्ति के लिए प्रातः काल भगवती दुर्गा का पूजन कर पांच बार निम्न मंत्र का उच्चारण करें।  
*प्रणतान्नां प्रसीद त्वं देवि विश्वार्तिहारिणी।  
त्रैलोक्य वासिनामीद्ये लोकानां वरदा भव॥*
9. काले तिल परिवार के सभी सदस्यों के सिर पर तीन बार घुमा कर दक्षिण दिशा में फेंक दें, अनिष्ट टलेगा।
10. अष्टविंशति एवं अक्षत मिश्रित जल से सूर्य देव को अर्थ्य दें।
11. भगवान शिव एवं मां पार्वती को 'श्रीफल' (न्यौछावर 60/-) दक्षिणा सहित अर्पित करें, धन लाभ होगा।
12. तेल का दीपक लगाकर कर 5 बार हुनमान बाण का पाठ करें।
13. गणपति को दूर्वा अर्पित करते हुए 'भास्करण गणेशो हि पूजितच्छविसिद्धये, सदैव पार्वती पुत्रः ऋणं नरशं करते हुए मे' मंत्र का 7 बार उच्चारण करें।
14. आज गुरु पादुका पूजन अवश्य सम्पन्न करें।
15. 'तांत्रोक्त नारियल' (न्यौछावर 60/-) पर सरसों के तेल एवं कुकुम से लेपन कर उसका पूजन करें, फिर किसी निर्जन स्थान पर ढाल दें, बाधाएं समाप्त होंगी।
16. 'शनि मुद्रिका' (न्यौछावर 90/-) का पूजन कर दिन भर अपनी जेब में रखें, रात्रि में किसी पेड़ की जड़ में ढाल दें, ऋण मुक्ति होगी।
17. घर की दक्षिण दिशा में तीन सरसों के तेल के दीपक जलाएं, परिवार में मंगल होगा।
18. घर से बाहर जाने से पहले द्वार के दोनों तरफ जल चढ़ाएं, दिन सौभाग्यदायक होगा।
19. हुनमान जी को चूरमे का भोग लगाएं।
20. 'मनोवांछा' (न्यौछावर 60/-) का पूजन कर किसी गणेश मंदिर में अर्पित कर दें, राज्य बाधा समाप्त होगी।
21. गुरु जन्म दिवस पर 'निखिल स्तवन' का पाठ करें। दिन भर गुरु स्मरण करें तथा गुरु सेवा का संकल्प लें।
22. देवी भगवती को लाल पुष्प अर्पित करें।
23. गुरु मंत्र की पांच माला अवश्य जप करें।
24. प्रातः काल भगवान राम का स्मरण कर 21 बार हुनमान की वल्लभाय स्वाहा जप अवश्य करें।
25. काले तिल पीपल की जड़ में अर्पित करें, फिर बिना पीछे मुड़े घर आ जाएं, अनिष्ट समाप्त होंगे।
26. किसी निर्धन को पीले वस्त्र एवं गेहूं दान करें।
27. प्रातः 5 मिनट 'ऐं' मंत्र का जप करें, बुद्धि कुशाय होगी।
28. आज प्रातः गुरु गीता का पाठ अवश्य करें।
29. 'धूमावती गुटिका' (न्यौछावर 90/-) का पूजन कर दक्षिणा सहित देवी मंदिर में अर्पित करें, शुभकारी होगा।
30. संतान के कल्याण हेतु सफेद वस्तुओं का दान करें।



# जीवन साधिता



यों तो किसी भी समस्या के समाधान हेतु अनेकों उपाय हैं परंतु मंत्रों के माध्यम से समस्या के निवारण के पीछे धारणा यह है कि मंत्र शक्ति एवं दैवी शक्ति द्वारा साधक को वह बल प्राप्त होता है जिससे कि किसी भी समस्या का समाधान सहज हो जाता है। उदाहरण के लिए माना जाता है कि सभी दोगों का उद्भव मनुष्य के मन से ही होता है। जिस प्रकार मन पर पड़े दुष्प्रभावों को यदि मंत्र द्वारा नियंत्रित कर लिया जाए तो दोग स्थायी रूप से शान्त हो जाते हैं उसी प्रकार मन को सुषुद करके किसी भी समस्या पर आप विजय प्राप्त कर सकते हैं।

## 1. अब पश्चिम में किसी प्रकार का कोई अभाव रह ही नहीं सकता

इसके लिए 60 देशों के वैज्ञानिकों ने निरीक्षण किये हैं और उनके आधार पर ही वे इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि यदि प्रातः काल घर में 'अग्निहोत्र' अथवा हवन हो तो घर में किसी प्रकार का कोई अभाव या तकलीफ रह ही नहीं सकती और घर की समस्याएं भी अपने आप सुलझती रहती हैं, इसीलिए उन्होंने अग्निहोत्र को आवश्यक माना है। अग्निहोत्र के लिए आवश्यक है कि इसे ठीक सूर्योदय के समय करें, न उससे पहले और न ही उसके बाद।

आप स्नान आदि से निवृत्त होकर, एक तांबे के हवन कुण्ड में छोटी-छोटी लकड़ियां जला लें। किसी थाली में आधी मुँही चावल, दो चम्मच धी और पांच तांत्रोक्त नारियल लेकर मिला लें। बाद में निम्न मंत्र पढ़कर क्रमशः 5 आहुति दें-

### मंत्र

ॐ अश्वर्ये नमः स्वाहा ।  
ॐ इन्द्राद्य नमः स्वाहा ।  
ॐ प्रजापतये नमः स्वाहा ।  
ॐ विष्णवे नमः स्वाहा ।  
ॐ सर्वकार्य सिद्धयर्थं नमः स्वाहा ।

प्रत्येक आहुति के साथ एक तांत्रोक्त नारियल का होना अनिवार्य है।

यदि यह कार्य ठीक सूर्योदय के समय हो और नियमपूर्वक हो, तो निश्चय ही आपकी समस्याओं का समाधान होगा ही।

साधना सामग्री पैकेट - 105/-

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

## 2. आप स्वस्थ हो सकते हैं इस प्रकार से-

बीमारी, रोग, जरा, व्याधि इसने आज के वातावरण में फैलकर सभी को जकड़ रखा है अपने शिकंजे में। कोई भी व्यक्ति हो, शिशु हो, वृद्ध हो, स्त्री हो या किशोर हो सभी इसकी चपेट में हैं और इससे निकलने के लिए कभी तो विटामिन्स खाते हैं, कभी आयरन तो कभी कोई अन्य दवा।

जरा सोचिए! आज के नवयुवकों का यह हाल है तो आने वाली पीढ़ी तो रोगग्रस्त बनी रहेगी ही। वह तो रोगमुक्त हो ही नहीं सकेगी।

आखिर इसका निदान कुछ न कुछ तो करना ही होगा और यह निदान प्राप्त होगा अध्यात्म से, मंत्रों के माध्यम से, क्योंकि पूर्वकाल में जब प्रत्येक घर में हवन पूजन होते रहते थे, तब वे स्वस्थ जीवन व्यतीत करते थे। जैसे-जैसे व्यक्ति सुख और ऐश्वर्य के लिए धनलोलुप होता गया वैसे ही वह बीमार होता गया। आज स्वस्थ व्यक्ति का ढूँढना वैसा ही है जैसा भीड़ में तिनका खोजना।

क्या आप स्वस्थ व्यक्ति नहीं बनना चाहेंगे? यदि चाहते हैं, तो यह प्रयोग सम्पन्न करें।

किसी पात्र में 'नागार्जुन' स्थापित कर उसका संक्षिप्त पूजन करें, पूजन के पश्चात उस पर अपनी दृष्टि एकाग्र करते हुए निम्न मंत्र का जप 31 बार करें-

मंत्र

// ॐ नमो भगवते आरोग्यं देहि ॐ नमः //

यह प्रयोग सात दिन तक करें। सात दिन के बाद नागार्जुन को नदी में प्रवाहित कर दें और नित्य प्रातः उठकर स्वस्थ चिंतन करें।

साधना सामग्री - 60/-

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

### 3. क्या आपकी त्वचा पर झुर्झियां हो रही हैं?

प्रत्येक नारी की यह इच्छा होती है कि वह सबसे सुन्दर और खूबसूरत दिखे, लोग उसे देखते ही रहें। वह इस आशा में तरह-तरह के क्रीम और ब्युटीपार्लर के चक्कर में पड़कर अच्छी-भली त्वचा को भी खराब कर बैठती है। ज्यादातर महिलाएं क्रीम और फेशियल पैक के चक्कर में पड़कर अपनी फूल सी कोमल त्वचा को जलदी ही झुर्झियां कर देती हैं। बाद में जब उनकी त्वचा झुर्झियां हो जाती है, तो फिर अलग-अलग क्रीम से इन्फेक्शन हो जाता है। इससे कोमल त्वचा खराब और बेजान हो जाती है।

इस प्रयोग के माध्यम से आप भी सुन्दर और आकर्षक बन सकती हैं। किसी पात्र में 'सौन्दर्या' को स्थापित कर उसका संक्षिप्त पूजन कर निम्न मंत्र का 11 दिन तक नित्य जप 51 बार करें। प्रत्येक मंत्र के साथ यंत्र पर एक चम्मच जल चढ़ाएं-

मंत्र

// ॐ हूँ ठःठः हूँ ॐ //

प्रत्येक दिन जप के पश्चात सौन्दर्या पर चढ़ाए हुए जल को शरीर पर छिड़कें व पी लें। बारहवें दिन सौन्दर्या को नदी में प्रवाहित कर दें।

साधना सामग्री पैकेट - 80/-

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

### 4. क्या आप मेंटल टेनशन से पीड़ित हैं तो इसे अवश्य करें?

व्यक्ति के जीवन में अनेक उतार-चढ़ाव आते रहते हैं, जिनसे वह प्रभावित हुए बिना नहीं रह पाता। सीमा से अधिक प्रभावित होने पर ये घटनाएं उसके मन मस्तिष्क पर बुरा असर डालती हैं, जो उसे मेण्टल टेनशन जैसी व्याधि का शिकार बना देती हैं।

शायद ही कोई व्यक्ति ऐसा हो, जो इस बीमारी से

प्रभावित न हो, यही प्रायः समस्त मानसिक रोगों की जड़ है। इस रोग से पीड़ित व्यक्ति अत्यन्त ही उदास, निष्क्रिय, निराशावादी एवं मूक हो जाता है। उसे किसी भी कार्य को करने में रुचि नहीं रहती, हर काम उसे बोझ सा लगने लगता है, न किसी से बात करने की इच्छा होती है और न ही कुछ खाने-पीने की।

कई बार तनाव व्यर्थ के कारणों द्वारा भी हो जाते हैं, जिनका कोई आधार नहीं होता। जब व्यक्ति मानसिक तनाव से पीड़ित हो और किसी भी समस्या का 'हल नहीं सूझ पा रहा हो या कोई निर्णय लेने में असमर्थता की स्थिति उत्पन्न हो रही हो, तो ऐसे में उसे यह छोटा सा किन्तु अद्भुत फलदायक प्रयोग कर ही लेना चाहिए और जब व्यक्ति इस प्रयोग को करता है, तब वह एहसास करता है कि शारीरिक व मानसिक दोनों रूपों से वह पूर्ण स्वस्थ अनुभव रहा है।

इसके लिए व्यक्ति को चाहिए, कि वह गले में मंत्र सिद्ध मूँगे के आठ दाने किसी लाल धागे में पिरोकर धारण कर नित्य पांच बार 21 दिन तक इस मंत्र को बोलें -

मंत्र

// ॐ हुँ हुँ हनुमते हुँ हुँ फट //

ऐसा करने पर वह मानसिक तनाव का शिकार नहीं होता तथा उसके चेहरे पर सदा प्रसन्नता ही बनी रहती है।

साधना सामग्री - 60/-

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

### 5. सौन्दर्य... जिसे देखकर धड़कने थम जायें

सौन्दर्य प्रकृति का मानव को सबसे बड़ा वरदान है, जो समझदार व्यक्ति होता है, वह इस सौन्दर्य को लम्बे समय तक बनाये रखता है और कोई भी व्यक्ति, चाहे वह स्त्री हो या पुरुष, कुछ उपायों को अपनाकर अपने सौन्दर्य को अद्वितीय और सुगन्धमय भी बना सकता है। यह प्रयोग ऐसा प्रयोग है, जिसे सम्पन्न कर व्यक्ति इसका प्रभाव शीघ्र ही अनुभव कर सकता है और वह भी बिना सौन्दर्य प्रसाधनों के प्रयोग किये बिना मात्र अल्कालिक मंत्र जप से।

मंत्र

// ॐ ऐं सौन्दर्य सिद्धिं ऐं ॐ //

मंत्र जप समाप्त होने पर "अनंगरति गुटिका" को सफेद वस्त्र में बांधकर नदी में प्रवाहित कर दें। इसका प्रभाव कुछ ही दिनों में स्पष्ट होने लगता है।

साधना सामग्री - 100/-

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

- ◆ गुरु नीता
- ◆ संगीत सरिता
- ◆ गुरु गंगा
- ◆ प्रातः कालीन वेद ध्वनि
- ◆ संध्या आरती
- ◆ प्रीत पायल
- ◆ बाजे कण-कण में
- ◆ गुरुनाम रस पीजे
- ◆ जब याद तुम्हारी आई
- ◆ ध्यान धारणा और समाधि
- ◆ दैनिक साधना विधि
- ◆ गुरु गति पार लगावे
- ◆ गुरु बिन ज्ञान कहां से पाऊ
- ◆ गुरु बिन गतिनीस्ति
- ◆ गुरु हमारी आत्मा
- ◆ गुरु पादुका पूजन
- ◆ विशेष गुरु पूजन
- ◆ निखिलेश्वरानन्द सत्वन
- ◆ दुर्लभोपनिषद्
- ◆ मैं गमस्थ बालक को  
चेतना देता हूँ भाग 1-2
- ◆ शक्तिपात (पूर्वजन्म दर्शन)
- ◆ अमृत महोत्सव 1997 भाग 1-5
- ◆ गुरुपूर्णिमा हैदराबाद भाग 1-5
- ◆ गुरु हृदय स्थापन प्रयोग
- ◆ अक्षय पात्र साधना
- ◆ हनुमान साधना
- ◆ अमोघ साबर साधनाएं
- ◆ पुष्पदेहा आप्सरा साधना
- ◆ महाकाल प्रयोग
- ◆ महाकाली स्वरूप साधना
- ◆ कुम्भाण्डा प्रयोग

त्रुक्कुँ पौथिन बाकी, मैं कहुँ आखिरं देखी



ज्ञान रूपी गंगा, क्रिया रूपी यमुना,  
वाणी रूपी सरसवती का मेल है -  
सद्गुरुदेव के अमृत वचनों में,  
जो सिंचन कर देते हैं साधकों के  
हृदय और मन को।

जिल्ल वारी में है -  
बह्ना का ज्ञान, शिव का ओज और  
विष्णु का तेज समाहित है

ऐसे अमृत प्रवचन सुनिये बार-बार -



नौशाहर श्री शक्ति आश्रम - स्टीडी 40/-

डाक खर्च अतिरिक्त



मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोट,  
कॉलोनी, जोधपुर (राज.)

फोन : 0291-2432209, फैक्स : 0291-2432010

# एकांत तो वार्तालाप है, संगीत है...

क्या-क्या अनुभूतियां नहीं होती हैं एकांत में, क्योंकि एकांत तो मौन नहीं अपितु वार्ता ही है, और इसमें शिष्य की किससे बातें होनी प्रारम्भ हो जाती हैं, कि घण्टे बीत जाते हैं और पता ही नहीं चलता, दिवस कितना अन्तराल बीत गया। यही तो आनन्द के क्षण है जिन क्षणों में व्यक्ति अपने भीतर उतरता है -

एकांत कोई समाज से कट जाने का नाम नहीं है, एकांत में (या आत्मवार्ता) की स्थिति आ जाती है। लेकिन इसके उपरान्त आकर ही तो व्यक्ति और भी सही चिन्तन कर पाता है, अपने शिष्य स्वयं भी नहीं होता, उसे अपने होने का बोध ही नहीं विकास का, अपने कुटुम्ब के विकास का, अपने समाज के रहता, उस एक का भी अंत हो जाता है - यही एकांत का विकास का और आत्म स्वरूप का एकांत में व्यक्ति अपनी सर्वोच्च रूप है।  
ऊर्जा को केन्द्रित कर किसी विशेष उद्देश्य के लिए लगाने में समर्थ होता है।

एकांत कोई मौन धारण नहीं अपितु एकांत में वार्तालाप ही होता है। भक्त का अपने इष्ट से, जिसमें एक से दो हो जाते हैं, और दो से एक और फिर उस एक का भी अंत हो जाता है। इस वाक्य का भी गूढ़ अर्थ है - पहले तो शिष्य स्वयं होता ही है, फिर वह एक से दो अर्थात् अपने इष्ट से उसकी वार्ता होती है। अभी गुरु को वह बिम्ब रूप में देख रहा होता है। इसके बाद ही गुरु-शिष्य का विभेद भी खत्म होकर आत्मलीन

फिर उस एकांत में जो भासित होता है, जो घटित होता है, मन के जो तार जुड़ते हैं, उससे हृदय अभिभूत हो जाता है और नेत्र अश्रुधार प्रवाहित करने लग जाते हैं।

यदि एक बार विश्लेषण करके देखें, तो कोई भी व्यक्ति अपनी दिनचर्या में अनेकों लोगों के सम्पर्क में आता है - घर में पत्नी से बात होती है, उसकी सुननी पड़ती है, बच्चों को भी देखना पड़ता है, उनकी भी बात सुननी पड़ती है, घर में और भी परिवार के कई सदस्य होते हैं, उनकी भी कुशल-क्षेम के बारे में पूछना होता है। घर के बाहर दफ्तर अथवा जिस भी व्यवसाय से वह संलग्न होता है, उसके सम्बन्ध में अनेकों लोगों से वार्ता करता है। और इस तरह पूरा एक दिन व्यतीत हो जाता है, परन्तु इन चौबीस घण्टों में क्या एक भी क्षण वह अपने आप से बात कर पाया?

यह प्रश्न अजीब सा ही है, परन्तु यदि गम्भीरता से तथ्य को लिया जाय, तो मनुष्य अपना ध्यान तो देना भूल ही गया और दूसरों की ही कुशल-क्षेम में खो गया, अपने अस्तित्व

आनंद ऊ झोत तो अठव क ही  
छिपा होता है ठीक हृदय के मध्य  
में, परवन्तु मन है, फिर वह भ्रागने  
ओ अहता है आहव ओ ओक, एकांत  
के दूर कोलाहल में।

का तो उसे भान ही नहीं रहा और इस तरह उसके अन्दर के मनुष्य की उपेक्षा होती गई।

- स्वयं उस व्यक्ति की कुशल क्षेम कौन पूछे?
- कौन उसके मन की व्यथा सुने?
- कौन उसकी रुचि-अरुचि का ध्यान रखे?

इसके लिए उसे स्वयं ही तैयार होना पड़ेगा। इसके लिए उसे अपने 'स्व' से बात करने की कला में पारंगत होना पड़ेगा और इसके लिए कुछ करना नहीं होता, इसके लिए जीवन में इस व्यक्ति क्रम के मध्य ही एकांत के कुछ क्षणों को तलाशना होगा।

और फिर बाकी क्रिया तो स्वतः ही आरम्भ हो जाती है। फिर दस मिनट व्यक्ति एकांत में बैठता है, तो उसे अपने अन्दर की आवाज सुनाई देती है, उसे अपने होने का एहसास होता है, अभी तक तो उसे अपना ध्यान ही नहीं था। फिर उसे लगता है अन्दर तो बहुत कुछ है, शांति का एक अथाह सागर लहरा रहा है, फिर वह विश्लेषण करने लगता है कि कल उसने क्या-क्या किया, कहां उससे गलतियां हुई और फिर वह निश्चय करता है कि अब ऐसा नहीं करूंगा, अब ऐसा ही करूंगा, और यहीं से आरम्भ हो जाता है उसके आत्मविश्लेषण की क्रिया। वह स्वयं को अपने 'स्व' का एक साक्षी मानते हुए विश्लेषण करता है और नित्य सुधार करता हुआ निरन्तर आत्मोन्नति की ओर अग्रसर होता जाता है।

धीरे-धीरे उसे बोध होने लगता है कि इस एकांत में तो आनन्द का इतना अधिक भण्डार छिपा हुआ है, जिसको तलाश करने का उसे कभी अवकाश ही नहीं मिला। फिर उसे

...दूर जहां धरती और आकाश मिल रहे थे, ग्रातः  
वैला के ऐसे ही एकान्त वातावरण में सूर्य उगने जा  
रहा था, उसे देखकर मानो सद्गुरुदेव ने कहा हो -

'तुम्हें अपनी रविर्गम रशिमियों से अंधकार को मिटा  
देना है, और अभी तो तुम उदित ही हुए हो, परन्तु  
देखो तुम्हारे प्रयास से रात्रि का अंधकार समाप्त होने  
लगा है। मंद पवन तुम्हारा रवागत कर रहा है, और  
पक्षी कलरव कर रहे हैं। तुम्हें रुकना नहीं है और न  
ही बादल के अवारा दुकड़ों से घबराना ही है, तुम्हें तो  
अपने प्रकाश से पूरे संसार को आप्लावित कर देना  
है और यह संदेश शिष्य रूपी प्रत्येक सूर्य के लिए है।'

वीणा की ध्वनि सुनाई देने लगती है, अपने ही अन्दर मेघ का गर्जन भी सुनाई देने लगता है। अन्धकार के बीच प्रकाश भी दिखता है। अपने इस स्वरूप को देखकर वह विभोर हो जाता है और... उसे प्यार हो जाता है अपने आप से...

...क्या कभी आपने अपने आप से प्यार करके देखा है?

आपने अपने आपको दीन-हीन समझ लिया है, क्रोधी, कठोर, पाषाण हृदय समझ लिया है, परन्तु एक बार अपने को ध्यान से देखेंगे तो आपके अन्दर प्रेम का, श्रद्धा का अथाह सागर छिपा है। फर्क इतना ही है कि उसे आपने देखा नहीं है, क्योंकि आपको समय ही नहीं मिला एकांत में अपने आप से दो बात करने का... और जब वह अपने से ही प्रेम करना सीख जाता है, तो उसका यहीं प्रेम फिर सभी के ऊपर प्रेम के रूप में बरसने लगता है, उसके व्यक्तित्व में करुणा प्रेम और दया का अंकुरण हो जाता है और धीरे-धीरे लोग उसे भी प्यार करने लगते हैं।

जैसे-जैसे एकांत में खोजे गए इस स्वर्ग को वह देखने लगता है, अपने ही प्रकाश में निमग्न रहने की क्रिया में प्रवीण होने लगता है, उसे फिर एक आहट सी अनुभव होती है, और वह आहट होती है उसके इष्ट की, सद्गुरुदेव की। ऐसा लगता है, जैसे अभी अभी वे पास यहीं कहीं हैं, फिर दृष्टि घुमाकर देखता है, तो कोई नजर नहीं आता, पुनः आंखें बन्द हो जाती हैं कि एक सुगन्ध का झोंका आता है और फिर एक बार आंख खोलने को विवश होना पड़ता है। गुरुदेव से उसकी आंख-मिचौली का खेल प्रारम्भ हो गया होता है।

एकांत के ऐसे ही सघन क्षणों में जब भक्त अपने को भुला बैठता है, जब प्रेम में अपने को डुबा देता है, तब सद्गुरुदेव उसे अपनी आंखों के भीतर लीला करते हुए दिखाई देने लग जाते हैं, उसे अपने मन का भी भान नहीं रहता और तब अपने आप में एक उन्मनी अवस्था आ जाती है। गुरु की छवि अंकित रहती है, वह उनसे बातें करता है, उनको हंसाता है, उनकी मुस्कुराहट में निमग्न होता है, उनको रिझाता है, और उनको अपने हृदय स्पन्दनों का नैवेद्य अर्पित करता है, और जब वे उठकर जाने लगते हैं, तो आंखें खुल जाती हैं, एकांत भंग हो जाता है और आंखों से गर्म-गर्म अश्रुओं की दो बूँदें छलक पड़ती हैं अपने प्रिय की याद में और सामने न पाकर पुनः दो क्षणों के लिए बन्द हो जाते हैं, वे नेत्र युग्म...

हृदय की वीणा के तारों का संगीत जो बजना प्रारम्भ हो गया होता है, उसे एकांत में ही तो सुना जा सकता है, और

जब व्यक्ति को उस संगीत का नशा हो जाता है, तो फिर कैसे कोई अन्य संगीत उसे अच्छा लगे, जब उसे वीणा से प्यार हो गया तो फिर नगाड़ों में उसे आनन्द नहीं आता, फिर तो और गहरा डूब जाना चाहता है।

बैठे-बैठे वह गुनगुनाने लगता है। ऐसा लगता है, जैसे अपने प्रिय को, गुरुदेव को, इष्ट को गीत सुना कर प्रसन्न कर रहा हो, और खुद भी प्रसन्न हो रहा हो।

मिश्री (शक्कर) की एक डली (टुकड़ा) धूप में पड़ी थी, उसने किसी से सुन रखा था कि जल का स्पर्श बड़ा ही सुखद होता है। यह बात उसके मन में कुछ बैठ गई, उसने सोचा चलो, एक बार जल का स्पर्श कर देखा तो जाए। मिश्री की डली गई और एक पानी का गहरा घड़ा था। बड़ी शीतलता थी वहां, मिश्री को वहां शांति महसूस हुई, प्रचण्ड धूप में वह तप चुकी थी। उसको वहां बड़ा आनन्द आया और उसकी वहां से निकलने की इच्छा नहीं हुई... समय बीता और मिश्री उस जल की शीतलता में ऐसी अभिभूत हुई कि अपने वजूद को ही खो बैठी, घुल गई जल में, उसी में मिल गई उसका अविभाज्य अंग बनकर...

एकांत में मिश्री के स्वरूप का लोप ही तो होता है। ठीक यही स्थिति साधक की भी होती है, जब वह एकांत में और अधिक उत्तरने लगता है, तब वह अपने 'स्व' को भी भूलने लगता है, दो क्षण के लिए उसे भान ही नहीं रहता कि वह था भी, फिर तो विव्य आनन्द ही रह जाता है और यही समाधि की झलक होती है।

एकांत की तीन भाव भूमियां होती हैं - प्रथम में 'द्वैत एकांत' होता है - यह वार्तालाप की स्थिति होती है अपने इष्ट से, सद्गुरु से। वह यों ही बैठा हुआ बातें करता रहता है। लोग समझते हैं कि बड़बड़ा रहा है, परन्तु वह तो सद्गुरु को अपने सामने बैठा जानकर बात करने में खोया होता है।

दूसरी अवस्था होती है अद्वैत एकांत की - इसमें मुह से संभाषण नहीं होता, अन्दर ही अन्दर एक विचार धारा चलती रहती है। लगता है गुरुदेव ने कुछ कहा है, या फिर अन्दर की ही आवाज है, कुछ फर्क समझ नहीं आता, तब यह 'अद्वैत एकांत' होता है। इसमें साधक स्वयं को गुरुदेव के विराट शरीर का ही अंगीभूत अनुभव कर रहा होता है, उसके 'स्व' का विसर्जन हो जाता है, जैसे बूँद सागर का अंग बन गई होती है। बूँद को फिर सागर को कुछ कहने की आवश्यकता नहीं होती, क्योंकि वह स्वयं ही उसका एक हिस्सा बन जाती है, फिर मौखिक संभाषण गौण हो जाता है।

आज जब मनुष्य मस्तिष्क तंतुओं पर दौड़ भाग के इस मशीनी युग में दबाव बढ़ गया है, तो इन सबका उत्तर एकांत के सुरम्य क्षणों में एकांत लाभ कर प्राप्त किया जा सकता है।

आर्य ऋषियों के अरप्य वास या अरप्य में ही गुरुकूल आदि की परम्परा के पीछे यही धारणा थी, कि उच्चकौटि का ज्ञान, चिन्तन एकांत में ही धारण किया जा सकता है।

जहां द्वैत का अंत होता है, जहां दोनों के बीच का भेद समाप्त हो जाता है, जहां एकात्म भाव विकसित हो जाता है, वहां अद्वैत का जन्म होता है। परन्तु जहां एकाकार होने का बोध भी नहीं बचता, जहां उस एक का भी अंत हो जाता है, वह एकांत में ही संभव हो पाता है। एकांत की तीसरी यह भावभूमि ही 'विशुद्ध एकांत' होता है, जहां वह 'एक' भी नहीं रह पाता अर्थात् कुछ सुध ही नहीं होती, कि है भी अथवा नहीं है, क्या है और क्या नहीं है? समाधि का यह चरम लक्ष्य एकांत में ही संभव हो पाता है।

एकांत में तो खजूर का वह वृक्ष भी खड़ा होता है, जिसमें छाया देने की क्षमता भी नहीं होती, और न ही पक्षी उस पर बसेरा करते हैं, और उसके फल भी इतनी ऊँचाई पर लगते हैं कि लगभग अप्राप्य ही होते हैं - वह एकांत तो टूट की तरह हो जाता है, वैसा एकांत सार्थक नहीं है। एकांत की सार्थकता तो तभी है जब सद्गुरुदेव से प्राण जुड़े हों और यह सम्बन्ध तभी से हो जाते हैं, जब पहली बार व्यक्ति गुरु-दीक्षा ग्रहण करता है। परन्तु यदि प्राणों के तार गुरुदेव से जुड़े नहीं हों, तो फिर ऐसे व्यक्ति का एकांत बिल्कुल वैसा ही है जैसे खजूर के पेड़ का एकांत, जो मात्र ढूँठ की भाँति है।

एकांत कोई समाज से कटना नहीं होता, एकांत तो एक प्रयास होता है, बाहर के शोर से कुछ क्षणों के लिए हटकर अन्दर झांककर देखने का जो गुरुदेव ने प्रदान किया है। जिन बीजों को गुरुदेव ने हृदय में रोपा है, उन्हें सींचने के लिए व्यस्त जीवनक्रम में से कुछ क्षणों को तो निकालना ही होगा, अन्यथा वे बीज दबे के दबे ही रह जाएंगे।

एकांत तो उन बीजों पर मेघ वृष्टि का कार्य करता है, और फिर जब अन्दर की पौध खिल जाती है तो चेहरे पर नूर उत्तर आता है, लाली आ जाती है, उसके अन्दर के बाग की हरियाली बाहर तक अनुभव की जाने लगती है।

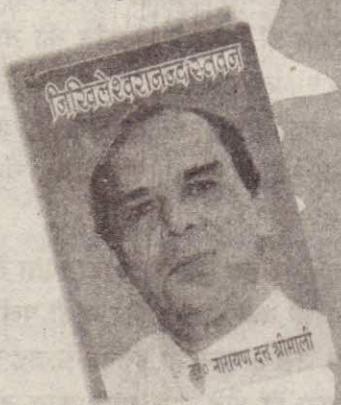
# ज्ञान और धैवता की अनमोल कृतियां

पूज्य गुरुदेव

‘डॉ. नारायण दंश  
‘श्रीमाली जी’

द्वारा

रचित ज्ञान की गरिमा  
से युक्त सम्पूर्ण जीवन  
को जगमगाने वाली  
अनमोल कृतियां



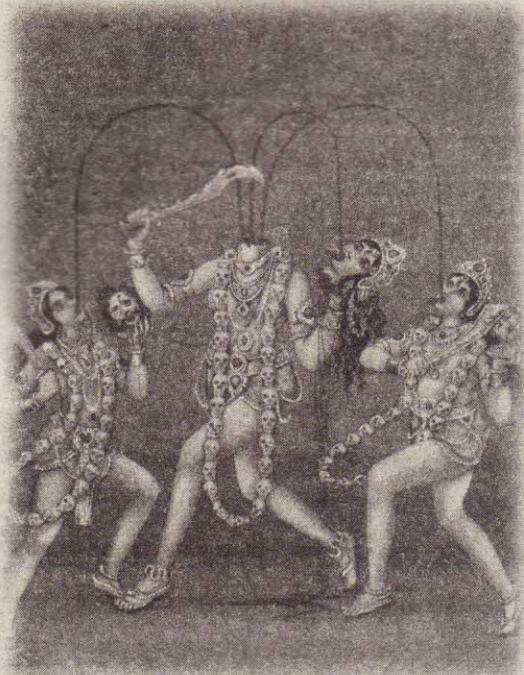
★ मूलाधार से सहस्रार तक	150/-	★ निर्विलेश्वरानन्द स्तवन	120/-
★ फिर दूर कहीं पायल रवनकी	150/-	★ कुण्डलनी नाद ब्रह्मा	120/-
★ गुरु गीता	150/-	★ विश्व की श्रेष्ठ ढीक्षाएं	96/-
★ ज्योतिष और काल निर्णय	150/-	★ द्यान धारणा और समाधि	96/-
★ हस्तरेखा विज्ञान और पंचागुली साधना	120/-	★ निर्विलेश्वरानन्द सहस्रनाम	96/-
		★ विश्व की आलौकिक साधनाएं	96/-

→ → → → → → → → सम्पर्क :- ← ← ← ← ← ← ← ←  
मंत्र-यंत्र-तंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राज.)

फोन : 0291-2432209, 2433623, फैक्स : 0291-2432010

# छिन्नमस्ता

## स्तोत्रम्



तीव्र साधनाओं में भगवती बगलामुखी, धूमावती, महाकाली एवं छिन्नमस्ता का नाम विशेष रूप से आता है। छिन्नमस्ता देवी का मूल स्वरूप भयावह एवं विक्राल है, यह शत्रु स्तम्भन की साधना है। शत्रु का तात्पर्य है बाधाएं परेशानियां, ज्ञात शत्रु, अज्ञात शत्रु और जब इन्हें स्तम्भित कर दिया जाता है तो ऐसे साधक के सामने शत्रु भी नतमस्तक होकर खड़े रहते हैं। ब्रह्म-कृत यह छिन्नमस्ता स्तोत्र जीवन में तीव्र शौर्य, संचारी भाव भरने वाला है। साधक की आंखों में ही ऐसा तेज आ जाता है कि शत्रु निस्तेज हो जाता है। छिन्नमस्ता साधना के साथ इस स्तोत्र का पाठ अवश्य करें।

साधक जब साधनाओं के क्षेत्र में थोड़ा अनुभवी हो जाता है, तब वह दस महाविद्याओं की साधना की ओर आकृष्ट हुए बिना नहीं रह पाता, क्योंकि संसार की समस्त गतिविधियों की आधारभूत ये दस महाविद्याएं ही तो हैं। दस महाविद्याओं में भगवती छिन्नमस्ता पांचवें क्रम में आती हैं, अतः इन्हें ‘पंचमी विद्या’ भी कहा जाता है। तांत्रिक ग्रंथों में इनको ‘प्रचण्ड-चण्ड-चण्डिका’ अथवा ‘प्रचण्ड-चण्डिका’ के नाम से सम्बोधित किया गया है। भगवती छिन्नमस्ता की साधना शत्रुओं का नाश करने वाली है। इनकी साधना तो स्वयं भगवान परशुराम ने भी सम्पन्न की थी और नाश पथ के प्रवर्तक गुरु गोरखनाथ भी छिन्नमस्ता के उपासक रहे हैं।

### भगवती छिन्नमस्ता रूपरूप वर्णन

ये अस्थिमाला धारणी हैं, जो अपने कटे हुए मस्तक को भी अपने ही हाथ में लिए हुए हैं। जो महामाया घोड़शी एवं भुवनेश्वरी बनकर संसार का पालन करती हैं, वहीं अंतकाल में छिन्नमस्ता बनकर नाश करती हैं। कर्त्ता (कैंची), खप्पर, रक्त, नाग,

भगवती छिन्नमस्ता की दीक्षा लेकर यदि यह साधना अन्यथा कठता है तो साधना में सफलता की अंशावता औट भी थढ़ जाती है। यानु कितने भी द्यातिश्याली दृश्यों नहीं हैं, छिन्नमस्ता के साधक का कोई धाल भी धांका नहीं कठ थकता है, उल्टे दृश्य ये ही ध्वन्त हो जाते हैं।

दिग्म्बर आदि उस संहार-शक्ति को ही निरुपित करता है।

छिन्नमस्ता का स्वरूप निम्न ध्यान मंत्र में पूर्णता से दिया गया है। साधकों को चाहिए इसी ध्यान मंत्र से वे देवी का ध्यान करें -

**भास्वन्मण्डल मध्यग्रां निजशिरः शिङ्गं विकीर्णालिकं, स्फारास्यं प्रपिबतुगत्वात्स्वरुद्धिरं वामे करे विश्वतीम्। याभासक्तरतिमरोपरिगतां सरुच्यादै निजे डाकिनी, वर्णिन्यौ परिदृश्योमद कलितां श्रीछिङ्गमस्तां भजे॥**

अर्थात् सूर्यमण्डल के मध्य में विराजमान बाएं हाथ में अपने ही कटे हुए मस्तक को धारण करने वाली, बिखरे हुए केशों वाली, अपने कण्ठ से निकलती हुई रक्तधारा का स्वयं ही पान करने वाली, विपरीत रति में आसक्त, रति तथा कामदेव के ऊपर स्थित, डाकिनी तथा वर्णिनी नामक अपनी सखियों के साथ प्रसन्न रहने वाली भगवती छिन्नमस्ता देवी का मैं ध्यान करता हूं।

### जब गुरुदेव ने मुझे साधना प्रदान की -

बचपन के आरंभ से ही मुझे अपनी संस्कृति के प्रति अत्यन्त गहरा अनुराग था। कल-कल करती हुई बहती नदियां, ये बर्फले सुन्दर पहाड़, हरी-भरी सुन्दर प्रकृति मुझे बरबस प्रकृति के गूढ़ रहस्यों की ओर आकर्षित करती रहती थीं। अचानक एक दिन मेरे मन में इन रहस्यों को जानने की ललक बढ़ गयी और मैं घर से निकल पड़ा।

काफी थपेड़े खाने के बाद मेरा सौभाग्य जागा और मुझे सम्पन्न करना पूज्य गुरुदेव जी के दर्शन हुए। पूज्य गुरुदेव उस समय हरिंल से लगभग 15-16 किमी दूर भैरव की घाटी, जो गंगोत्री से पहले स्थित है, में अन्य संन्यासी शिष्यों को साधना कुछ निकट गया, त्यों ही गुरुदेव जी ने मेरा नाम लेकर मुझे अपने पास बुलाया, तो मेरी प्रसन्नता का ठिकाना न रहा। मैं पूज्य गुरुदेव जी के चरणों में लिपट गया।

गुरुदेव जी मेरे आने के उद्देश्य को समझ गये और अगले दिन मुझे विधिवत् दीक्षा देकर साधना के गोपनीय सूत्र स्पष्ट करने के उपरांत मुझे उच्चस्तरीय विशेष साधनाएं सम्पन्न करने का निर्देश देकर चले गए। मैं हिमालय के विभिन्न स्थानों में गुरुदेव जी के निर्देशानुसार साधनाएं सम्पन्न करता हुआ सफलता प्राप्त करता रहा, पूज्य गुरुदेव टेलीपैथी के माध्यम से मुझे निर्देशित करते व मार्गदर्शन देते थे।

काफी समय बीत गया, कि एक दिन पूज्य गुरुदेव से मानसिक संदेश प्राप्त हुआ, वे कह रहे थे - 'तुम्हारा साधनात्मक स्तर निश्चय ही अच्छा है, किन्तु तुम्हें अब महाविद्या साधना सिद्ध करनी चाहिए, क्योंकि महाविद्या साधना महत्वपूर्ण एवं श्रेष्ठ साधना है और महाविद्या साधना सम्पन्न करने के उपरांत ही कोई साधक उच्च स्तर के साधक की श्रेणी में आ पाता है।'

मैं अत्यन्त प्रसन्नता पूर्वक उस क्षण की प्रतीक्षा करने लगा, कि कब गुरुदेव मुझे महाविद्या साधना देंगे, गुरुदेव ने मुझे शुभ मुहूर्त पर छिन्नमस्ता महाविद्या दीक्षा तीन चरणों में प्रदान की और साधना से सम्बन्धित आवश्यक निर्देश प्रदान किये।

निर्धारित मुहूर्त पर मैंने साधना प्रारंभ की। पूरी लगन व पवित्रता के भाव से 21 दिन में सवा लाख मंत्र जप सम्पन्न कर मुझे आशातीत सफलता प्राप्त हुई। साधना में सफलता के उपरांत गुरुदेव जी से आशीर्वाद प्राप्त किया। गुरुदेव ने मुझे

**प्रायः साधक देवी के कटे सिर को देखकर भयवशा** इस साधना से दूर ही रहते हैं, परंतु इस साधना से भय खाने की आवश्यकता नहीं... यह साधना तो अन्य साधनाओं की अपेक्षा तुलनात्मक रूप से शीघ्र सिद्ध होने वाली है... इसके प्रभाव द्वारा तीव्र से तीव्रतम्, तीक्ष्ण से तीक्ष्णतम् शत्रु भी निस्तेज हो जाते हैं क्योंकि शक्ति का यह प्रचण्डतम् स्वरूप है जिससे साधक पूर्ण निर्भीक हो जाता है।

साधना में सफलता के लिए आशीर्वाद प्रदान कर साधनाओं के क्षेत्र में उच्च स्थिति प्राप्त करने की आज्ञा दी मैं गुरु-आज्ञा शिरोधार्य मानकर अपने लक्ष्य की ओर गतिशील हूं।

### छिन्नमस्ता साधना की उपलब्धियाँ

छिन्नमस्ता महाविद्या साधना तो तीव्र शत्रुहन्ता साधना है, इसके प्रभाव से तीक्ष्ण से तीक्ष्ण शत्रु भी निस्तेज हो जाता है। इसके अलावा इस साधना को सम्पन्न करने के बाद जो नवीन अनुभव मुझे हुए हैं, उन्हें गुरु कृपा फलस्वरूप साधकों के लाभार्थ प्रकाशित किया जा रहा है -

1. यदि व्यक्ति शत्रु बाधा से ग्रसित हो, इस साधना के बाद तो शत्रु बाधा पूर्ण रूप से समाप्त हो जाती है और व्यक्ति का तथा उसके परिवार का जीवन पूर्ण सुरक्षित हो जाता है।
2. यदि कारोबार विपन्न अवस्था में चल रहा हो, तो इस साधना के बाद कारोबार सुदृढ़ता से चलने लगता है।
3. छिन्नमस्ता महाविद्या साधना सम्पन्न करने के उपरांत आर्थिक अभाव समाप्त हो जाते हैं और धन का आगमन बराबर बना रहता है।
4. छिन्नमस्ता महाविद्या सिद्ध होने पर व्यक्ति के शरीर का कायाकल्प हो जाता है और वह स्फूर्तिवान् तथा यौवनवान बन जाता है।
5. इस साधना के सम्पन्न होने के उपरांत शरीर उच्चकोटि की साधनाओं के अनुकूल बन जाता है और गर्भ-सर्दी का विशेष प्रभाव नहीं पड़ता है।

**छिन्नमस्ता महाविद्या दीक्षा - संस्कार सम्पन्न करने के दौरान** पूज्य गुरुदेव ने मुझे जो साधना विधान व सूक्ष्म बिन्दु स्पष्ट किए वे इस प्रकार हैं -

इस साधना में 16 बीजों का मंत्र प्रयोग किया जाता है जो इस प्रकार है -

॥श्रीं ह्रीं वलीं एं वज्र वैरोचनीये हूं हूं  
फट स्वाहा॥

**इस मंत्र की मुख्य विशेषता** इस प्रकार है -

इस विशिष्ट मंत्र में सर्वप्रथम 'श्रीं' बीज मंत्र है, जो कि लक्ष्मी का प्रतीक है।

'ह्रीं' बीज, यह लज्जा बीज है, जो कि जीवन में सभी दृष्टियों से उन्नति में सहायक है।

'एं' बीज, जीवन में वाय विशेष तथा विद्या प्रदान करने वाला है।

‘व’ बीज, जीवन में समस्त गुणों को देने वाला और संजीवनी प्रदान करने वाला है।

‘ज’ बीज, इन्द्र का प्रतीक है, जो कि एक स्थान पर दूरस्थ व्यक्ति अथवा घटना को जानने में सहायक है।

‘र’ यह अग्नि देव का प्रतीक है, और जीवन में पूर्णता प्रदान करता है।

‘व’ यह पृथ्वीपति बीज है, जिससे साधक ‘भू-सिद्धि’ करने में सहायक होता है।

‘ऐं’ यह त्रिपुर देवी का प्रतीक है।

‘र’ यह त्रिपुर सुन्दरी का बीजाक्षर है।

‘ओ’ यह बीज सदैव त्रैलोक्य विजय देवी का आत्मरूप प्रतीक है।

‘च’ यह चन्द्र का प्रतीक है, जो कि पूरे शरीर को नियंत्रित, सुन्दर व सुखी रखता है।

‘न’ यह गणेश का प्रतीक है, जो कि ऋषि-सिद्धि देने में समर्थ है।

‘ई’ यह साक्षात् कमला का बीजाक्षर है।

‘य’ यह सरस्वती का बीज है, जिससे साधक को वाक्सिद्धि प्राप्त होती है।

‘हूं’ यह माया युग्म बीज है, जो आत्मा और प्रकृति का संगम है। इससे साधक प्रकृति पर नियंत्रण स्थापित करता है।

‘फट’ यह वैखरी प्रतीक है, जिससे साधक किसी भी क्षण मनोवांछित कार्य सम्पन्न कर सकता है।

‘स्वा’ यह कामदेव बीज है, जिससे साधक का शरीर सुन्दर, आकर्षक बन जाता है।

‘हा’ यह रति बीज है, जो पूर्ण पौरुष प्रदान करने में समर्थ है।

यह मंत्र इतना अधिक श्रेष्ठ है, कि इसके निहित बीज मंत्र सम्बन्धी देवताओं की कृपा भी साधक को मात्र छिन्नमस्ता की साधना करने से स्वतः और साथ ही साथ प्राप्त हो जाती है।

### छिन्नमस्ता रत्नोत्र

छिन्नमस्ता मंत्र साधना की ही भाँति छिन्नमस्ता स्तोत्र के नित्य पाठ से साधक को जीवन में धन, शत्रु बाधा, रोग आदि की समस्याएं समाप्त हो जाती हैं।

नाभौ शुभ्रारविन्दं तदुपरि विलसन्मण्डलं चण्डरश्मेः। संसारस्यैकसारां त्रिभुवन-जननीं-धर्म-कामार्थ-दात्रीम्॥ तस्मिन्मध्ये त्रि-मार्जे सद्यश्छिन्नात्म-कण्ठ-प्रगलित-रुधिरैङ्गिकी नीं

छिन्नमस्ता महाविद्या लाधना को खिद्ध करने वे लाधक के नीवन में धन, शत्रुबाधा, रोग आदि की लम्फ्याएँ लमाप्त हो जाती हैं। डलका तथा डलके परिवारजनों का नीवन पूर्ण रूप वे लूटक्षित रहता है।

अगवती छिन्नमस्ता अपने लाधक को हट आगे वाले खतरे वे बचाती रहती है। इस लाधना को लम्फ्या करने के बाद लाधक पर लर्दी, गर्मी आदि का प्रश्नाव नहीं पड़ता है तथा डलका शर्टी डलकोटि की लाधनाओं के शुबकूल बन जाता है।

त्रितय-तनु-धरां छिन्नमस्तां प्रशस्ताम्। तां वन्दे छिन्नमस्तां शमन-भय-हरां योगिनीं योग-मुद्राम्॥१॥

नाभौ शुद्ध-सरोज-वक्त्र-विलसद-बन्धूक-पुष्पारुणं। भास्वद-भास्कर-मण्डलं तदुदरे तद-योनि-चक्रं महत्। तन्मध्ये विपरीत-मैथुन-रत-प्रद्युम्न-सत्कामिनी-पृष्ठस्थां तरुणार्क-कोटि-विलसत्तेजः-स्वरूपां भजे॥२॥

वामे छिन्न-शिरोधरां तदितरे पाणौ महत्कर्त्रकां। प्रत्यालीढ-पदां दिग्नंत-वसनामुन्मुक्तः-के श-व्रजाम्॥ छिन्नात्मीय-शिरस्समुच्छलदसृजथरां पिबन्तीं परां। बलादित्य-सम-प्रकाश-विलसहेत्र-त्रयोदभासिनीम्॥३॥

वामादन्यत्र नालं वहु-गहन-गलद-रक्त-धारा-भिरुच्चैः। जायन्तीमस्थि-भूषां कर-कमल-लसत्कर्त्रकामुग्र-रुपाम्॥ रक्तामरारक्त-के शीमपगत-वसनां वर्णिनी-मात्म-शर्त्तुं। प्रत्यालीढोरु-प्रत्यालीढोरु-पादामरुणित-नयनां योगिनीं योग-निद्राम्॥४॥

दिग्वस्त्रां मुक्त-के शरीं प्रलय-घन-घटा-घोर-रुपां प्रचण्डां। दंष्ट्रा दुष्ट्रेक्ष्य वक्त्रोदर-विवर-तसल्लोलजिह्वाश्र-भासाम्॥ विद्युत्लोलाक्षि-युज्मा-हृदय-तट-लसद-भोगिनीं भीम-मूर्तिम्।

वर्द्धयन्तरेम् ॥५॥

ब्रह्मेशान्नाच्युताद्यैः शिरसि विनिहता मन्द-पादार-  
विन्दैरामैर्योगीन्द्र-मुख्यैः प्रति-पदमनिशं चिन्तितां  
चिन्त्य-रूपाम् ॥ संसार सार-भूतां त्रिभूवन-  
जननीं छिन्नमस्तां प्रशस्तामिष्टां तामिष्ट-  
दात्रीकलिकलुष-हरां चेतसा चिन्तयामि ॥६॥

उत्पत्ति-स्थिति-संहतीर्घटयितुं धत्ते त्रि-रूपां  
तनुं । त्रैजुण्याज्जगत्ते यदीम विकृतिर्घ्राच्युतः शूल-  
भृत् ॥ तामाद्यां प्रकृतिं स्मरामि मनसा सर्वार्थ-  
संसिद्धये । यस्याः स्मेर-पदारविन्द-युग्मे लाभं  
भजन्ते नराः ॥७॥

अभिलषित-पर-स्त्री-योग-पूजा-परोऽहं । बहु-  
विध-जन्मभावारम्भ-सम्भावितोऽहम् ॥ पशु-जन-  
विरतोऽहं भैरवी -संस्थितोऽहं । गुरु-चरण-परोऽहं  
भैरवोऽहं शिवोऽहम् ॥८॥

इदं स्तोत्रं महा-पुण्यं ब्रह्मणा भाषितं पुरा/  
सर्वसिद्धि-प्रदं साक्षान्महा-पातक-नाशनम् ॥९॥

यः पठेत्प्रातरुत्थाय देव्याः सद्विहितोऽपि वा । तस्य  
सिद्धिर्भवेद्विवर्णितार्थ-प्रदायिनी ॥१०॥

धनं धन्यं सुतं जायां हव्यं हस्तिन्मेव च । वसुन्धरां  
महाविद्यामष्ट-सिद्धि लभेद धूवम् ॥११॥

अर्थ- नाभि भाग में स्वच्छ कमल के ऊपर विराजमान तीव्र  
रश्मि, समूह की सृदृश, संसार के एक मात्र आधार स्वरूपा,  
तीनों लोकों की जननी, धर्म अर्थ और काम को प्रदान करने  
वाली, उस कमल के मध्य भाग में तीन धाराओं के रूप में  
तीन शरीर में विभक्त समस्त भय को दूर करने वाली, योगियों  
के आराध्य योग मुद्रावस्था भगवती छिन्नमस्ता का मैं भावपूर्ण  
नमन करता हूं ॥१॥

नाभि स्थित स्वच्छ कमल के सदृश बंधुक पूष्प के समान  
रक्त वर्ण की शोभा से युक्त, चमकते हुए सूर्य मण्डल के ऊपर  
सुशोभित योनिचक्र वाली, विपरीत मैथुन युक्त रति और कामदेव  
के पृष्ठ भाग पर करोड़ों तरुण सूर्य के तेज से सुशोभित  
भगवती छिन्नमस्ता की मैं वन्दना करता हूं ॥२॥

भगवती छिन्नमस्ता के विभिन्नरूपों वाली, बायें हाथ में खड़ग  
धारण की हुई, दिशारूपी वस्त्रों वाली, खुले हुए केशों से युक्त,  
कटे हुए मस्तक से निकलती हुई रक्तधारा को पान करती हुई,  
उदित होते हुए सूर्य के समान प्रकाशपुंजमयी विनेन धारणी  
भगवती छिन्नमस्ता का मैं नमन करता हूं ॥३॥

दूसरी ओर गाढ़े और ऊंची धाराओं वाली रक्त को पान  
करती हुई, हिलती हुई अस्थि मालाओं से सुशोभित, हाथ में  
चमकती हुई खड़ग धारण करने वाली भय प्रदान करने वाली,  
रक्तवर्ण से युक्त, निर्वस्त्र, अपार शक्ति सम्पन्न जंघा और रक्त  
नेत्रों वाली, योगिनी, योग निद्रा से युक्त भगवती का मैं वन्दना  
करता हूं ॥४॥

दिशाओं रूपी वस्त्र से युक्त, खुले हुए बालों वाली प्रलय-  
कालीन धनघोर घटा के समान, भयावह रूपों वाली जिसके  
दातों को देखना कठिन है मुख पेट रूपी खोह से लपलपाते हुए  
लाल जिहा से युक्त बिजली के समान चमकती हुई दो आंखों  
वाली हृदय पटल पर सुशोभित हारों वाली भयावह देह वाली,  
शीघ्र कटे हुए मस्तक से निकलते हुए रुधिर धाराओं से युक्त  
डाकिनियों को शक्ति प्रदान करती हुई भगवती का मैं नमन  
करता हूं ॥५॥

ब्रह्मा, विष्णु और महेश के द्वारा वंदित, मंदार और कमल  
पूष्प के द्वारा, योगियों से पूजित चरण वाली निरंतर ध्यान  
योग्य संसार के सारभूत तीनों लोकों की जननी श्रेष्ठस्वरूपा  
मनोकामनाओं को देने वाली, कलियुग के पाप को हरण करने  
वाली भगवती छिन्नमस्ता का मैं ध्यान करता हूं ॥६॥

उत्पत्ति स्थिति और संहार करने के लिए तीन रूपों में  
विभक्त, सत्त्व, रज और तमो गुण से संसार का निर्माण करने  
वाली, ब्रह्मा, विष्णु, महेशस्वरूपा जिसके चरण कमल को  
लोग मनोकामना पूर्ति के लिए पूजते हैं ऐसी उस आदि प्रकृति  
भगवती छिन्नमस्ता को मन से सर्वार्थ सिद्धि के लिए स्मरण  
करता हूं ॥७॥

भगवती आदि शक्ति की पूजा में लगा हुआ, सभी जनों के  
द्वारा भावपूर्ण नमन करने में लगा हुआ, पंशुत्वभाव से रहित,  
भगवती के चरण कमल में मन लगाया हुआ, गुरुचरणों का  
ध्यान करने वाला भैरव रूप में शिव स्वरूप हो जाता है ॥८॥

इस पवित्र स्तोत्र को जो सर्वसिद्धि देने वाला है तथा सब  
पापों को नाश करने वाला है, पूर्व युग में ब्रह्मा ने उच्चरित  
किया ॥९॥

जो व्यक्ति प्रातः उठ कर भगवती छिन्नमस्ता के सामने इस  
स्तोत्र का पाठ करता है, मनोकामना पूर्ति करने वाली भगवती  
छिन्नमस्ता उसको सिद्धि प्रदान करती है ॥१०॥

इसका प्रति दिन पाठ करने से साधक को धन-धान्य,  
पुत्र, पत्नी, वाहन, भूमि तथा दस महाविद्याओं की सिद्धि  
प्राप्त होती है ॥११॥

# शास्त्राल्पु जीवन संभव है

कंकाक को पांचवे देव आयुर्वेद का नान धनवन्तरी ऋषि ने ही प्रदान किया था और यदि हम अपनी जीवन प्रक्रिया को नियमित बनाये तथा जीवन में तनाव इत्यादि के मुक्त कहे तो यह कंभव है कि प्रत्येक व्यक्ति को वर्ष का जीवन जी करता है। कैबो जिएं अपना जीवन? इसका एक विशेष विवेचन -

◆◆◆ ◆◆ ◆ ◆◆ ◆◆ ◆ ◆◆ ◆◆ ◆◆

श्रीमद्भागवतपुराण (२/७/२१) में बादरायण श्रीकृष्ण करेगा, उसकी ठीक गति क्या है? इत्यादि! विराट ब्रह्माण्ड में द्वैपायन वेदव्यासजी ने भगवान् धनवन्तरि की स्तुति में बड़ी आज भी पाश्चात्य विज्ञान के लिए चुनौती है। तंत्र-मंत्र का प्रत्यक्षीकरण तो प्रसिद्ध ही है। मंत्रों से सांप तथा बिछू के विष को शांत करना तो साधारण बात है।

धनवन्तरिश्च भगवान् स्वव्यमेव कीर्ति-  
र्नम्ना कृणां पुरुरुजां रुज आशु हन्ति।  
यज्ञे च भागममृतायुवावरुन्ध  
आयुश्च वेदमनुशास्त्यवतीर्य लोके ॥

अर्थात् इस लोक में अवतार लेकर आयुर्वेद शास्त्र का अनुशासन करने वाले स्वनामधन्य धनवन्तरि के नाम-स्मरण से ही बड़े-बड़े रोगियों के रोग नष्ट हो जाते हैं और यह कोई मात्र अर्थवाद नहीं है, 'विश्वासः फलदायकः ।' हमारे धर्मशास्त्र विश्वास की धुरी पर टिके हैं। वे कहते हैं -

मन्त्रे तीर्थे द्विजे दैवे दैवज्ञे भेषजे गुरौ।  
यादृशी भावना यस्य सिद्धिर्भवति तादृशी॥

अर्थात् मन्त्र में, तीर्थ में, ब्राह्मण में, देवता में, दैवज्ञ में, औषधि में तथा गुरु में जो जैसी भावना (निष्ठा) रखता है, उसे फल भी तदनुरूप ही मिलता है।

चिकित्सा-शास्त्र, ज्योतिष तथा तंत्र-मंत्र के ग्रन्थ प्रत्यक्ष शास्त्रों में आते हैं, क्योंकि चिकित्सा-शास्त्रों में उल्लिखित औषधि का रोगानुसार सेवन करते ही रोग का नष्ट होना उसकी सत्यता का प्रत्यक्षीकरण करा देता है। इसी प्रकार ज्योतिषशास्त्रानुसार वर्षों पूर्व यह घोषणा कर दी जाती है कि अमुक दिन अमुक समय पर सूर्य या चन्द्र ग्रहण होगा और ठीक उसी समय पर ग्रहण दिखाई भी देता है। यह हमारी प्राच्य भारतीय विद्या के लिए गौरव का विषय है अन्यथा विज्ञान के लिए तो आज भी यह चुनौती का विषय है कि किस वैद्य की आवश्यकता ही क्यों पड़े? इस प्रकार के सूत्रों के समय-कौन सा ग्रह कहां होगा? कौन किसको आच्छादित आधार पर ग्राम्य जीवन में बारहों मास के उपयोगी खाद्यों का

इसके अतिरिक्त अन्य चिकित्सा-पद्धतियों की तुलना में आयुर्वेदीय-चिकित्सा-शास्त्रों की विशेषता यह भी है कि 'स्मितं च सारं च वचो हि वाज्मिता' के सिद्धान्तानुसार बड़ी बात को संक्षिप्त-सूत्र रूप में ही कह देने की उसकी अपनी विशेषता है। जैसा कि देखें, कफ-वात-पित्त आदि की चिकित्सा के बारे में संक्षेप में ही कितनी सुन्दर बात कह दी गई है -

वर्मनं कफनाशाय वातनाशाय मर्दनम्।

श्यवनं पित्तनाशाय ज्वरनाशाय लंगनम्॥

अर्थात् कफनाश करने के लिए वर्मन (उलटी), वातरोग में मर्दन (मालिश), पित्तरोग में शयन तथा ज्वर में लंघन (उपवास) करना चाहिए। आयुर्वेद शास्त्र केवल रोगी की चिकित्सा करने में ही विश्वास नहीं करता, अपितु उसका तो सिद्धान्त है - 'रोगी होकर चिकित्सा करने से अच्छा है कि बीमार ही न पड़ा जाय।' इसके लिए आयुर्वेद शास्त्रों में स्थान-स्थान पर ऐसी बातें भरी पड़ी हैं, जिसके अनुपालन से वैद्य की आवश्यकता भी नहीं पड़ती। जैसे -

दिनान्ते च पिबद् दुग्धं निशान्ते च जलं पिबत्।

भोजनान्ते पिबेत् तत्र वैद्यस्य किं प्रयोजनम्॥

तात्पर्य यह है कि यदि रात्रि में शयन से पूर्व दुग्ध, प्रातःकाल उठकर जल और भोजन के बाद तक (मट्टा) पिये तो जीवन में वैद्य की आवश्यकता ही क्यों पड़े? इस प्रकार के सूत्रों के आधार पर ग्राम्य जीवन में बारहों मास के उपयोगी खाद्यों का



सुन्दर संकेत कर दिया गया है कि -  
वामशायी द्विभुजजान्ते षण्मूत्री द्विपुरीषकः /  
स्वल्पमैथुनकारी च शतं वर्षाणि जीवति॥

अर्थात् बार्यों करवट सोने वाला, दिन में दो बार भोजन करने वाला, कम से कम छः बार लघुशंका, दो बार शौच जाने वाला, स्वल्प-मैथुनकारी व्यक्ति सौ वर्ष तक जीता है।

आयुर्वेद शास्त्र ही नहीं अपितु अथवेदीय भगवती श्रृति भी ऐसी ही कामना करती है -

**कृष्णन्तु विश्वे देवा आयुष्टे शरदः  
शतम् ॥**

(२/१३/४)

अर्थात् सभी देवता तुम्हारी आयु सौ वर्ष की करें, परंतु आगे एक बात अवश्य कह दी है कि -

**प्रत्यक्षं स्वेवस्य भेषजं जरदण्ठि कृष्णोमि  
त्वा ।**

अर्थात् संयोग से बीमार पड़ जाने पर औषधि अवश्य ले लेनी चाहिए। इसमें प्रमाद करने की आवश्यकता नहीं, क्योंकि 'शरीरमाद्यं खलु धर्मस्ताधनम्' स्वस्थ शरीर ही धर्म साधन का

सुन्दर संकेत इस प्रकार दिया गया है, जिनका सेवन अवश्य माध्यम है। संत कहते हैं -

करना चाहिए -

सावन हरे चीत, कार क्वार मास गुड खाये मीत /  
कार्तिक मूली अग्नहन तेल, पूषे करे दूध से मेल //  
माघे धी व खीचड़ खाय, फागुन उठि के प्रात नहाय /  
चैत मास में नीम व्यसवनि, भर बैसाखे खाये अग्नहनि //  
जैठ मास दुपहरिया सोवै, ताकर दुख आषाढ़ में रोवै //

बारहों मास के इन विधि-खाद्यों के अतिरिक्त निषेध खाद्य भी हैं, जिन्हें भूलकर भी ग्रहण न करें, जैसे -

चैते गुड बैसाखे तेल, जे ठे पथ आषाढ़े बेल /  
सावन साग न भादो दही, क्वार करैता कार्तिक मही //  
अग्नहन जीरा न पूषे घना, माघे मिश्री फागुन चना /  
इन बारह से बचे जो भाई, ता घर कबहूँ वैद न जाई //

आयुर्वेद का सिद्धान्त है कि - 'भुक्त्वा शतपदं तरह चिकित्सा की आड़ में मात्र प्रयोग करता जाता है। जच्छेच्छायायां हि शर्नैः शर्नैः ।' भोजन करने के बाद छाया में सौ पग धीरे-धीरे चलना चाहिए। शयन से कम-से-कम 2-3 घंटे पहले ही भोजन कर लेना चाहिए, अन्यथा कब्ज रहेगी। इसके अतिरिक्त दीर्घायु के लिए भी एक जगह बड़ा

पहला सुख निरोगी काया। दूजा सुख घर में माया। तीजा सुख सुत दारा वश में। चौथा सुख जस खूब कमाया॥

विभिन्न व्याधियों के तारतम्य पर अनुसंधान करने से एक बात सामने आती है कि जिन लोगों का जन्म शीतकाल में होता है, उनको शीत की बीमारियां ही अधिक होती हैं। जिनका जन्म ग्रीष्म-ऋतु में होता है, उनको गर्भ की बीमारियां अधिक होंगी। इस प्रकार के अनुसंधानों में जहां मानव-जाति का बहुत बड़ा कल्याण होगा, वहीं आधुनिक युग में भी शास्त्रों की प्रामाणिकता पर रुचि बढ़ेगी।

चिकित्सा के विषय में वर्तमान स्थिति में यह अवश्य चिन्तनीय बात है कि आज का तथांकथित चिकित्सक अनुसंधान तथा स्वाध्याय-अनुगम के अभाव में रोगी पर खिलौने की

यस्य कस्य तरोमूलं येन केनापि पोष्टितम् ।  
यस्मै कस्मै प्रदातव्यं यद्वा तद्वा भविष्यति ॥

अर्थात् - जिस-किसी जड़ी को जिस-किसी भी प्रकार

पीसकर जिस-किसी भी तरह जिस-किसी भी रोगी को दे दो।

कुछ-न-कुछ तो प्रतिक्रिया होगी ही और होता वही है कि अन्त में प्रयोग करते-करते रोगी स्वर्ग ही सिधार जाता है। ऐसे चिकित्सकों के बारे में ठीक ही कहा गया है -

वैद्यराज नमस्तुभ्यं क्षपिताशेषमानवं  
त्वयि विन्द्यस्तभारोऽयं कृतान्तः सुखमेधते॥

(सुभाषितावली २३/११)

की कामना रखते हैं, वे चिकित्सा-सेवा कैसे कर पायेंगे?

इसमें कोई संदेह नहीं कि आयुर्वेद शास्त्र औषधि से भी अधिक महत्व पथ्य को देता है -

विनापि भेषजं व्याधिः पद्यादेव निवर्तते।  
न तु पद्यविहीनोऽयं भेषजाना शतैरपि।

पथ्यसेवन से व्याधि बिना औषधि के भी नष्ट हो जाती है,

इस प्रमाद में आज कल के कुछ चिकित्सकों की अर्थबुद्धि परन्तु जो पथ्यसेवन नहीं करता, युक्ताहार-विहार नहीं रखता, भी कम कारण नहीं है, क्योंकि 'अर्थ बुद्धिन धर्मवित्' वह चाहे सैकड़ों औषधि ले ले, पर उसका वह रोग दूर नहीं अर्थात् जिसकी बुद्धि अर्थ में लगी हो वह धर्माचरण नहीं कर होता। अतः आरोग्य-लाभार्थ संयमित जीवन जीने की सकता। जो लोग मरणासन्न व्यक्ति से भी कुछ-न-कुछ धनागम आवश्यकता है।

◆◆◆ ◆◆ ◆ ◆◆ ◆◆◆ ◆◆ ◆ ◆◆ ◆◆◆

### जीवन साफ्टल्य सिद्धि प्रयोग

## **रोग शोक शमनः महारौद्र श्वेतम्बक प्रयोग**

प्रस्तुत है एठ अचूक कोग शोकशमन प्रयोग जिक्षे ऋग्मन्त्र एवं जीवन में पूर्ण क्वाक्षय प्राप्त थिया जा सकता है। जो कोग अन्य माध्यमों के भी समाप्त नहीं हो पा कहे हों उन्हें अचूक प्रयोग छाका जड़ के मिटाया जा सकता है। इस क्षाकगम्भीर विशेष प्रयोग के पाठकों एवं लाभ अवश्य ठठाना चाहिए।

◆◆◆ ◆◆ ◆ ◆◆ ◆◆◆ ◆◆ ◆ ◆◆ ◆◆◆

जहां शिव हैं वहां सिद्धि है, जहां शिव हैं वहां न कोई रोग है, न शोक, न विपत्ति, न मृत्यु भय, न बीमारी, न ग्रह दोष, न राज्या बाधा। साधना के क्षेत्र में ऐसा कोई व्यक्ति नहीं होगा जो शिव की साधना न करता हो, चाहे वह संन्यासी हो अथवा गृहस्थ। भगवान त्यम्बक जो देवों के देव कहे जाते हैं, उनकी कृपा बिना सिद्धि असंभव है।

भगवान भोलेनाथ अपनी कृपा का अक्षय भण्डार अपने भक्तों पर लुटाते रहते हैं, शीघ्र प्रसन्न हो कर भक्त को वर देते हैं और यदि भक्त संकट के समय उन्हें स्मरण भी कर लेता है तो उसका संकट दूर हो जाता है।

आगे की पंक्तियों में शिव और शक्ति दोनों का सम्मिलित एक ऐसा शिव कवच दिया जा रहा है, जो कि सभी प्रकार की विपत्तियों के नाश और अकाल मृत्यु-भय से छुटकारा दिलाने में समर्थ है। कितना भी भयंकर रोग हो, यदि इस त्यम्बक कवच का पाठ कर जल रोगी को पिला दिया जाए तो उसे

विधान  
अपने सामने सुन्दर शिव-चित्र तथा भगवती दुर्गा का चित्र स्थापित कर एक ताम्र पात्र में शिव त्यम्बक महामृत्युंजय यंत्र जो शुद्ध धी का दीपक प्रज्वलित करें। इस साधना में गृहस्थ। भगवान त्यम्बक जो देवों के देव कहे जाते हैं, उनकी अपने पास जैसा भी शिवलिंग हो, उसे भी अवश्य स्थापित कर देना चाहिए तथा हाथ में जल लेकर चारों ओर घेरा बना

लेना चाहिए। अब रुद्राक्ष माला से शिव का ध्यान कर एक माला 'उँ नमः शिवाय' मंत्र का जप करें तत्पश्चात् हाथ में जल लेकर नीचे लिखा विनियोग मंत्र पढ़ें, फिर न्यास तथा

ध्यान करें और उसी स्थान पर बैठे-बैठे एक माला मूल मंत्र का जप अवश्य करें, इसमें समय अवश्य लगेगा लेकिन मंत्र जप पूर्ण रूप से अवश्य करना है। इस प्रयोग को किसी भी सोमवार से अथवा पुष्य नक्षत्र से प्रारम्भ किया जा सकता है। प्रतिदिन एक माला मंत्र अनुष्ठान सम्पन्न करते हुए 11 दिन निरंतर यह प्रयोग करना है तथा पूजा स्थान में यंत्र के आगे जो कलश जल से भर कर रखें वह

जल ग्रहण कर लें तथा दूध का नैवेद्य और फल पूजा समाप्त कर प्रसाद स्वरूप ग्रहण करें।

पूरे 11 दिन यह प्रयोग करते हुए एक समय भोजन करें।

### विनियोग

अस्य श्री शिवकवच स्तोत्रमंत्रस्य ब्रह्म ऋषिः  
अनुष्टुप् छन्दः। श्री सदाशिव रुद्रो देवता हीं शक्तिः  
रं कीलकं। श्रीं हीं क्लीं बीजम्। श्री सदाशिवप्रीत्यर्थे  
शिवकवच स्तोत्र जपे विनियोगः।

### न्यास

ॐ नमो भगवते ज्वलज्वालामालिने ॐ रां  
सर्वशक्ति धाम्ने ईशानात्मने अंगुष्ठाभ्यां नमः।

ॐ नमो भगवते ज्वलज्वालामालिने ॐ क्लीं  
सर्वशक्ति धाम्ने वायव्यात्मने तर्जनीभ्यां नमः।

ॐ नमो भगवते ज्वलज्वालामालिने ॐ मं रुं  
अन्नादिशक्तिधाम्ने अघोरात्मने मध्यमाभ्यां नमः।

ॐ नमो भगवते ज्वलज्वालामालिने ॐ शिरः  
स्वतंत्र शक्तिधाम्ने वामदेवात्मने अन्नामिकाभ्यां  
नमः।

ॐ नमो भगवते ज्वलज्वालामालिने ॐ वां रों  
अतुलशक्तिधाम्ने सद्याजातात्मने कनिष्ठिकाभ्यां  
नमः।

ॐ नमो भगवते ज्वलज्वालामालिने ॐ वं रं  
अन्नादि शक्तिधाम्ने सर्वात्मने करतल-कर पृष्ठाभ्यां  
नमः।

### ध्यान

वज्रांदष्ट्रं त्रिनयनं काल कण्ठमरिन्दमम्।

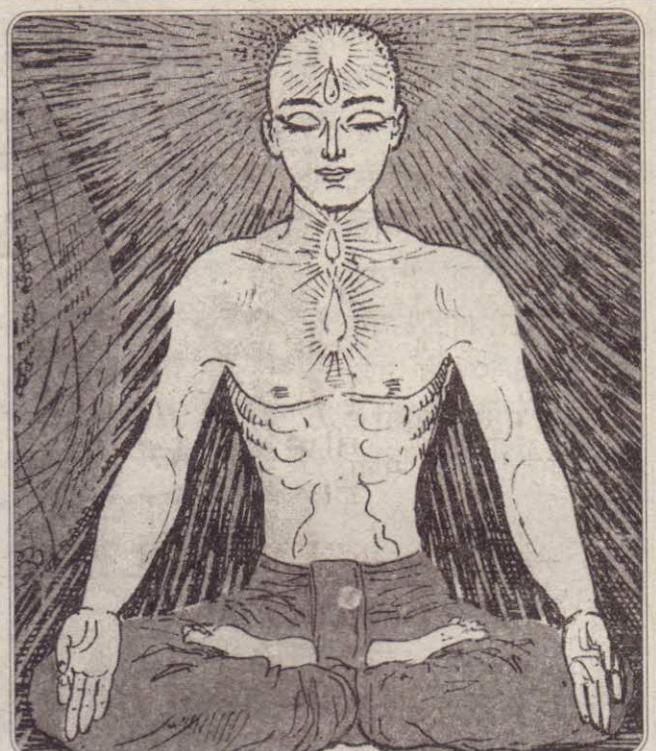
सहस्रकरमत्युग्रं वन्दे शम्भुमुमापतिम्॥

अथापरं सर्वपुराणगुह्यमशेषपापोद्धरं पवित्रम्।

जय प्रदं सर्वविष्टप्रमोचनं वक्ष्यामिशेवं कवचं  
हितायते॥

### मूल मंत्र

ॐ नमो भगवते सदाशिवाय सकल तत्वात्मकाय  
सर्व मंत्र रूपाय सर्वयन्त्राधितिताय सर्व तन्त्ररूपाय  
सर्वतन्त्र विद्वाय ब्रह्मरुद्रावतारिणे नीलकण्ठाय  
पार्वती मनोहर प्रियाय सरोम सूर्याङ्गिं लोचनाय  
भस्मोल्लस्त विश्रहाय महामणि मुकुट धरणाय  
माणिक्य भूषणाय सृष्टि स्थित प्रलय काल  
रौद्रावताराय दक्षाद्वरध्वंसकाय महाकाल भेदनाय  
मूलाधारेक नीलकाय, तत्वातीताय, गंगाधराय



सर्वदेवाधिदेवाय षडाश्रवाय वेदान्त साराय।

सर्वतो रक्ष रक्ष मामुज्वलोज्वल, महामृत्युभयं  
मृत्युभयं नाशय नाशय, अरिभयमृतसादयोत्सादय  
विष्वसर्वभयं शमय-शमय, चौरान् मारय मारय,  
मम शत्रूनुच्चाटयोच्चाटय, त्रिशूलेन विदारय  
विदारय, कुठारेण भिन्धि भिन्धि, खद्गेन छिन्दि  
छिन्दि, खट्वांगेनविपोथय विपोथय मूसलेन  
निष्पेषय निष्पेषय, वाणैः सन्ताडय सन्ताडय  
रक्षांसि भीषय भीषय, अशेष भूतानि विद्रावय  
विद्रावय, कूमाण्ड वेताल, मारीगण,  
ब्रहराक्षसणान् सन्त्रासय सन्त्रासय, ममांभयं कुरु  
कुरु बिघ्नस्तंमामाश्वासयाश्वासय,  
नरकमहाभ्यानमामुद्धरोद्धर संजीवय संजीवय,  
क्षुतृडभ्याम् मामानन्दवानन्दय, शिव-कवचेन  
मामाच्छादयच्छादय मृत्युंजयं त्र्यंम्बकं सदाशिव  
नमस्ते॥

शिव साधना का यह प्रयोग मंत्र यदि प्रतिदिन पांच बार जप किया जाए तो रोग तथा शोक साधक के पास फटक ही नहीं सकते। भगवान शिव की कृपा से साधक अपने मार्ग में आने वाली विपत्तियों को सरलता से दूर कर जीवन में पूर्ण शिवत्व की ओर अग्रसर होता है तथा पूरे परिवार को सुख, सौभाग्य एवं शांति प्राप्त होती है।

साधना सामग्री - 490/-

# पारद शंख

पारद अपने आप में दिव्य धातु है तथा शिव संहिता में इसे शिव का वीर्य कहा गया है। इसको ठोस रूप प्रदान करने की प्रक्रिया बड़ी विशिष्ट होती है तथा तदुपरांत जो परिष्कृत पारद प्राप्त होता है वह पूर्ण समृद्धि एवं मोक्ष लाने में सक्षम होता है।

जब श्रीकृष्ण ने द्वारका नगरी बसाई तो पहले उन्होंने वास्तुशास्त्र के आधार पर यह सुनिश्चित किया, कि नगरी का आकार शंख की भाँति हो और नगर में समृद्धि तथा सम्पद्धता हो, इसलिए उन्होंने स्वयं पारद शंख साधना सम्पद्ध की, तभी द्वारका नगरी अपने समय में सबसे धनी नगरों में सर्वोच्चता पर थी धन, धन्य, अञ्ज, आभूषणों, रत्नों, भव्य प्रासादों से पूर्ण यह नगरी इन्द्रलोक के आकर्षण को भी धूमिल कर देती थी। ऐसी ही समृद्धि प्रदान करता है, यह 'पारद शंख'। जिसकी किसी भी बुधवार अथवा पुष्य नक्षत्र पर सम्पद्ध किया जा सकता है।

## जीवन का सर्वश्रेष्ठदान - 'ज्ञानदान'

ज्ञान दान को जीवन का सर्वश्रेष्ठ दान बताया गया है। 20 पूर्व प्रकाशित पत्रिकाएं प्राप्त कर मंदिरों में, अस्पतालों में, समारोहों में, मंगल कार्यों में, अपने मित्रों को, धार्मिक परिवारों को दान कर सकते हैं और इस प्रकार उनके जीवन को भी इस श्रेष्ठ ज्ञान के प्रकाश से आलोकित कर सकते हैं, जो अभी तक इससे वंचित हैं। इस क्रिया के माध्यम से अनेक मनुष्यों को साधनात्मक ज्ञान की शीतलता प्राप्त होगी और उनका जीवन एक श्रेष्ठ पथ पर अग्रसर हो सकेगा।

### आप क्या करें?

आप केवल एक पत्र (संलग्न पोस्टकार्ड क्रमांक 3) भेज दें कि 'मैं यह अद्वितीय उपहार प्राप्त करना चाहता हूं एवं 20 पूर्व पत्रिकाएं मंगाना चाहता हूं। आप निःशुल्क मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठित 'पारद शंख' 390/- (20 पूर्व प्रकाशित पत्रिकाओं का शुल्क 300/- + डाक व्यय 90/-) की वी. पी. पी. से भिजवा दें, वी. पी. पी. आने पर मैं पोस्टमैन को धन राशि देकर छुड़ा लूंगा। वी. पी. पी. छूटने के बाद मुझे 20 पत्रिकाएं रजिस्टर्ड डाक द्वारा भेज दें, आपका पत्र आने पर हम 300/- + डाक व्यय 90/- = 390/- की वी. पी. पी. से मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठित 'पारद शंख' भिजवा देंगे, जिससे कि आपको यह दुर्लभ उपहार सुरक्षित रूप से प्राप्त हो सके।

सम्पर्क - अपना पत्र जोधपुर के पते पर भेजें।

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर - 342001, (राजस्थान)

फोन - 0291 - 2432209, 2433623 टेलीफैक्स - 0291 - 2432010

५५ 'मई' 2007 मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान '79' ५५

रात्रि में पीले आसन पर पश्चिम की ओर मुख करके बैठ जाएं। सामने चौकी पर पीला वस्त्र बिछा दें। एक पात्र में 'श्री' हल्दी से अंकित कर उस पर पारद शंख को स्थापित करें। गुरुचित्र भी सामने रखें। गुरु पूजन करें। तत्पश्चात् २१ माला मंत्र जप किसी भी माला से करें।

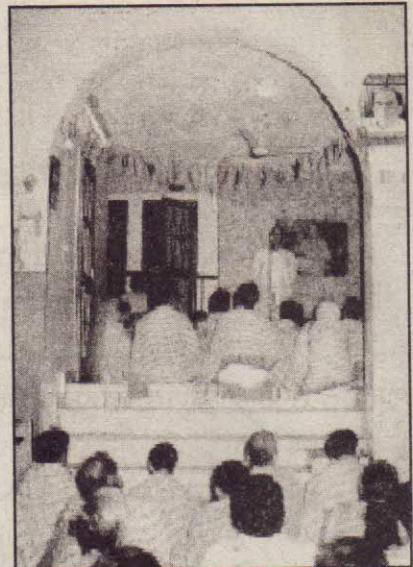
मंत्र

॥ॐ ऐं पारद शंख हुं नमः ॥

तदुपरांत पारद शंख को पूजा स्थान में स्थापित कर दें। इस प्रयोग द्वारा निश्चय ही धनागम में वृद्धि होती है तथा सम्पूर्ण जीवन में कभी धनाभाव नहीं होता। यही नहीं, हर प्रकार का भौतिक सुख साधक को प्राप्त होता है जिससे जीवन सदा उच्चता की ओर ही अग्रसर रहता है। वे सब साधना, पाथेय तब सहज ही प्राप्त होने लगते हैं, जिनके द्वारा जीवन में पूर्णता अवश्य ही हासिल होती है।

# गुरुधाम दिल्ली

जिस भूमि पर कैकड़ों प्रयोग और अकंकव्य दीक्षाएं  
कर्मपूर्व हो चुकी हैं, उसे किंद्र चैतव्य दिव्य भूमि  
पर ये दिव्य साधनात्मक प्रयोग



समस्त साधकों एवं शिष्यों  
के लिए यह योजना प्रारंभ हुई  
है, इसके अन्तर्गत विशेष  
दिवसों पर दिल्ली 'सिद्धाश्रम'  
में पूज्य गुरुदेव के निर्देशन में  
ये साधनाएं पूर्ण विधि-विधान  
के साथ सम्पन्न कराई जाती हैं,  
जो कि उस दिन शाम 6 से 8  
बजे के बीच सम्पन्न होती हैं यदि  
श्रद्धा व विश्वास हो, तो उसी  
दिन से साधनाओं में सिद्धि का  
अनुभव भी होने लगता है।

गुरुवार, 28-06-07

जिस परिवार में गणपति के साथ क्रद्धि-सिद्धि की पूजा होती है वह घर ही मंगलमय  
तथा आनन्दप्रद बन जाता है, लक्ष्मी की निरन्तर कृपा होती रहती है, कर्ज के बोझ से  
मुक्ति मिलती है, वहीं साधनाओं में भी सफलता प्राप्त होती है। गणपति स्वयं बुद्धि सागर  
और उच्चकोटि के ज्ञानी हैं। जब गणपति वयस्क हुए, तो विश्वकर्मा विश्वरूप की दो  
कन्याओं से गणपति का विवाह होना निश्चित हुआ, इन दोनों कन्याओं में से एक का नाम  
'क्रद्धि' और दूसरी का 'सिद्धि' था। इन दोनों कन्याओं से विवाह होने के उपरान्त, जहां  
पर भी ये दोनों वास करती हैं, वहीं गणपति का वास होता है। विश्वकर्मा तो स्वयं समस्त  
भोगों को प्रदान करने वाले और जीवन में पूर्णता देने वाले देव हैं, इसलिए इन दोनों की  
साधना से सुख प्राप्त होता है।

क्रद्धि-सिद्धि साधना करने से भूमि-लाभ, शीघ्र भवन निर्माण तथा परिवार में पूर्ण  
सुख-शांति प्राप्त होने की क्रिया उसी दिन से शुरू हो जाती है।

शुक्रवार, 29-06-07

आपको लगता है कि आपके कार्य नहीं हो रहे हैं? भाग्य  
बाधा बार-बार आ रही है? व्यवसाय में प्रगति नहीं हो रही है  
अथवा कोई शारीरिक व्याधि बार-बार हो रही है, तो जानिये  
यह सब किसी न किसी ग्रह दोष के कारण है।

यह जीवन ग्रहों के अधीन है और 'यथा पिण्डे यथा ब्रह्माण्डे'  
अर्थात् जो कुछ शरीर में है वह ब्रह्माण्ड में है और जो ब्रह्माण्ड  
में है वह इस शरीर में अवश्य है। ग्रहों की गति मनुष्य जीवन  
की गति से जुड़ी हुई है। जब मनुष्य के ग्रह अनुकूल होते हैं तो  
वह निरन्तर प्रगति के पथ पर अग्रसर होता है लेकिन ग्रह दोष  
के कारण उत्पन्न बाधा से जीवन हर प्रकार के कष्ट कारक हो  
जाता है। मंत्र के माध्यम से, तंत्र के माध्यम से ग्रहों को अपने  
अनुकूल बनाया जा सकता है। ऐसा ही एक श्रेष्ठ नवग्रह प्रयोग  
जिसे प्रत्येक साधक को अवश्य सम्पन्न करना चाहिए।

शनिवार, 30-06-07

तीव्र बटुक भैरव प्रयोग  
भैरव को भगवान शिव का ही एक रूप माना गया है।  
बावन भैरवों में बटुक की साधना सर्वाधिक फलदायी  
मानी गई है - १. मुकदमें में विजय प्राप्ति के लिए, २.  
पूर्ण पौरुष प्राप्ति के लिए, ३. किसी भी प्रकार की बाधा  
जैसे राज्य बाधा, प्रमोशन अथवा ट्रांसफर में आ रही  
बाधा की निवृत्ति हेतु, ४. किसी प्रकार के तांत्रिक प्रयोग  
या बाधा को समाप्त करने हेतु, ५. शत्रुओं को निष्प्रभावी  
करने हेतु।

इसके अलावा बटुक भैरव निरन्तर एक रक्षक की  
भाँति साधक के ऊपर आने वाले हर संकट से रक्षा भी  
करते रहते हैं, जिसका कि साधक को आभास तक  
नहीं होता और इस प्रकार यह 'अकाल मृत्यु निवारण  
प्रयोग' भी है।

इन तीनों दिवसों पर साधना में भाग लेने वाले साधकों के लिए निम्न नियम मान्य होंगे

1. आप अपने किन्हीं दो मित्रों अथवा स्वजनों को (जो पत्रिका के सदस्य नहीं हैं) मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान पत्रिका का वार्षिक सदस्य बनाकर दिल्ली गुरुधाम में सम्पन्न होने वाले किसी एक प्रयोग में भाग ले सकते हैं। पत्रिका की एक सदस्यता का वार्षिक शुल्क रुपये 240/- है, जबकि आपको दो सदस्यों का शुल्क मात्र रुपये 460/- ही जमा करवाना है। प्रयोग से सम्बन्धित विशेष मंत्र सिद्ध, प्राण प्रतिष्ठित सामग्री (यंत्र गुटिका, आदि) आपको निःशुल्क प्रदान की जाएगी।

2. यदि आप पत्रिका सदस्य नहीं हैं, तो आप स्वयं तथा अपने किसी एक मित्र के लिए पत्रिका की वार्षिक सदस्यता प्राप्त कर उपरोक्त किसी साधना में भाग ले सकते हैं।

3. पत्रिका सदस्य बनाकर आप किसी एक परिवार को कठिन परम्परा की इस पावन साधनात्मक ज्ञान धारा से जोड़कर एक पुनीत एवं पुण्यदायी कार्य करते हैं। यदि आपके प्रयास से एक परिवार में अथवा कुछ प्राणियों में ईश्वरीय चिन्तन, साधनात्मक चिंतन आ पाता है तो यह आपके जीवन की सफलता का ही प्रतीक है। उपरोक्त प्रयोग तो निःशुल्क हैं और गुरु कृपा द्वारा ही वरदान स्वरूप साधक को प्राप्त होते हैं। प्रयोगों की न्यौछावर राशि को अर्थ के तराजू में नहीं तोल सकते।

### गुरुधाम में दीक्षा व साधना का महत्व

शास्त्रों में वर्णन आता है कि मंदिर में मंत्र जप किया जाए तो अति उत्तम होता है, उससे भी अधिक पुण्यदायी होता है; यदि नदी के किनारे करें, उससे भी अधिक समुद्र तट, और उससे भी अधिक पर्वत में करें, तो और पर्वत में भी यदि हिमालय में किया जाए तो और भी कई गुना श्रेष्ठ होता है। इन सबसे भी श्रेष्ठ होता है यदि साधक गुरु चरणों में बैठकर साधना सम्पन्न करे और यदि गुरुदेव अपने आश्रम अर्थात् गुरुधाम में ही यह साधना प्रदान करें तो इससे बड़ा सौभाग्य और कुछ होता ही नहीं।

कुछ ऐसे स्थान होते हैं, जहां दिव्य शक्तियों का वास सदैव रहता ही है। जो सदगुरु होते हैं, वे सूक्ष्म रूप से अथवा सशरीर प्रतिपल अपने धार्म में अवस्थित रहते हुए प्रत्येक गतिविधि का सूक्ष्म रूप से संचालन करते ही रहते हैं। इसलिए यदि शिष्य गुरुधाम में पहुंच कर गुरु से साधना, मंत्र एवं दीक्षा प्राप्त करता है और गुरु चरणों का स्पर्श कर उनकी आज्ञा से साधना प्रारम्भ करता है तो उसके सौभाग्य से देवगण भी इर्ष्या करते हैं।

तीर्थ स्थल पुण्यप्रद हैं पर शिष्य अथवा साधक के लिए सभी तीर्थों से भी पावन तीर्थ गुरुधाम होता है। जिस धार्म में सदगुरुदेव का निवास स्थान रहा हो, ऐसे दिव्य स्थान पर गुरु चरणों में उपस्थित होकर गुरु मुख से मंत्र प्राप्त करने की इच्छा ही साधक में तब उत्पन्न होती है जब उसके सत्कर्म जाग्रत होते हैं। इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुए साधकों के लाभार्थ गुरुदेव की व्यस्तता के बावजूद भी दिल्ली गुरुधाम में तीन दिवसों में तीन साधनात्मक प्रयोगों की श्रृंखला निर्धारित की गई है।

योजना केवल इन 3 दिनों के लिये 28-29-30 जन

किन्हीं पांच व्यक्तियों को वार्षिक सदस्य बनाकर उनका सदस्यता शुल्क 240x5=Rs.1200/- जमाकरा के या उपरोक्त राशि का बैंक डाफ्ट मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान के नाम से बनाकर सदस्यों के डाक पते लिखवाकर उपहार स्वरूप ये दीक्षा आप निःशुल्क प्राप्त कर सकते हैं।

यदि दीक्षा फोटो द्वारा प्राप्त करना चाहें तो निर्धारित तिथियों के पूर्व ही अपना फोटो एवं पांच सदस्यों की सदस्यता शुल्क की राशि का ड्राफ्ट मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान के नाम से बनाकर दिल्ली कार्यालय के पते पर भेजें। आपका फोटो पांच सदस्यों के नाम पते एवं ड्राफ्ट हमें उपरोक्त तिथि से पूर्व ही प्राप्त हो जानी चाहिए। पत्र विलम्ब से मिलने पर दीक्षा संभव न हो सकेगी। यदि राशि मनीऑर्डर से भेजना चाहें तो फोटो एवं मनीऑर्डर जोधपुर कार्यालय भेजें।

\* दीक्षा आज के द्युमास में एक प्रामाणिक उपाय हैं सफलता की ऊंचाईयों को प्राप्त कर लेने का, जीवन के अभाव को, अधरेंपन को दूर कर देने का, जीवन में अतुलनीय बल, साहस, पौरुष एवं शीर्षीय प्राप्त कर लेने का, साधना में सिद्धि प्राप्त कर लेने का...।

\* गुरु प्रदत्त शक्तिपात्र द्वारा शिष्य जिस कार्य हेतु वह दीक्षा प्राप्त करता है, उसमें निपुणता प्राप्त कर लेता है, उसको वह सफलता और श्रेष्ठता प्राप्त करने का एक लघु उपाय है...।

\* दीक्षा में भाग लेने वाले साधकों को जल से अमृत अभिषेक करने के उपरान्त विशेष शक्तिपात्र प्रदान किया जाएगा। यह दीक्षा इन तीनों दिवसों में सायं ७ बजे प्रदान की जाएगी।

शक्तिपात्र युक्त दीक्षा

## कमला दीक्षा

धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष इन चार प्रकार के पुरुषार्थ को प्राप्त करना ही सांसारिक प्राप्ति का द्येय होता है और इसमें से भी लोग अर्थ

को अत्यधिक महत्व प्रदान करते हैं। इसका कारण यह है कि भगवती कमला अर्थ की अधिष्ठात्री देवी हैं। उनकी आकर्षण शक्ति में जो मातृ शक्ति का गुण विद्यमान है, उस स्थान द्वाभाविक प्रेम के पाथ से वे अपने पुत्रों को बांध ही लेती हैं। जो भौतिक सुख के इच्छुक होते हैं, उनके लिए कमला सर्वश्रेष्ठ साधना है।

यह दीक्षा सर्व शक्ति प्रदायक है, क्योंकि कीर्ति, मृति, द्युति, पुष्टि, बल, मेधा, श्रद्धा, आरोग्य, विजय आदि देवी शक्तियां भिन्न-भिन्न देवों के अंश से उत्पन्न हुई हैं।

Any full moon night

## Amazing conch shell

# Dakshinavarti Shankh Sadhana

In the kingdom of the famous ruler Bhoja, there lived a very talented and great poet named Bharavi. Although there was no other contemporary litterateur who could challenge him and defeat him, Bharavi always felt defeated in life. And the reason was poverty. His talents and skills had brought him fame but not enough money to even feed his family.

One day he became so desperate and disheartened that he decided to finally put an end to his life. Mounting debt had turned his life into a virtual nightmare and he thought it was better to die once than to die each day, for the insults hurled at him by the moneylenders were worse than death. Having made up his mind he reached the bank of river Shipra that was in spate. He was just about to dive in when Yogi Shatanand happened to pass that way. Through his Yogic powers the Sadhu instantly knew the disturbed state of mind of the poet and he accosted him.

"What are you about to do my son?" he asked.

"O great one!" said Bharavi, "Poverty is the worst curse. I can no longer bear the abuses hurled at me by the money lenders and to see the sad, hungry faces of my children. It is better to die than to live thus."

"My son!" said the Yogi. "It is because of bad Karmas of past lives that you suffer thus. Till these Karmas are worked off you won't have any solace even though you die."

"O kind one! Is there no way out?"

The pain reflected in the voice of the poet seemed to move the heart of the Yogi and he said, "Fine! Come with me."

The ascetic led Bharavi to an old deserted temple and there he made him perform a very special Sadhana which not just wiped off his past bad Karmas but also made Bharavi rich and prosperous. And without doubt in just four months Bharavi's luck changed and he became as rich as he was famous. In a year he was more

prosperous than the king of Avanti, so much so that once even king Bhoja had to seek a loan from him in his time of need.

This very amazing Sadhana is being presented here for the good of the Sadhaks. For this powerful ritual one needs a special conch-shell. If one holds a conch shell with the pointed end towards oneself then one sees a slit along its length on the left side. But there are rare shells that have slits on the right side. These are called **Dakshinavarti Shankhs** and if Sadhanas are performed on such shells that have also been energised with special Mantras then one could ward off poverty from one's life forever.

Start the Sadhana on **any full moon night**. After 10 pm have a bath. Wear white clothes. Sit facing the South on a white mat. Cover a wooden seat with white cloth. In a copper plate place the **Dakshinavarti Shankh** and bathe it with milk and then pure water. In a separate plate then place the Shankh over rose flowers. With paste of vermillion write **Shreem** on the Shankh. Then offer vermillion, rice grains and a sweet made from milk on the Shankh chanting thus.

**Om Hreem Shreem Kleem Shreedhar Karasthaay-payonidhi Jaataay Shree Dakshinaavart Shankhaay Hreem Shreem Kleem Shreekaraay Poojyaay Namah**

Light a Ghee lamp. Offer prayers to the Guru and chant one round of Guru Mantra. Then with **white Hakeek rosary** chant eleven rounds of this Mantra.

**Om Hreem Shreem Kleem Bloom Dakshin Mukhaay Shankhaanidhaye Saroodraprabhaavay Shankhaay Namah**

Do this daily for five days. After Sadhana drop the rosary in a river or pond. Tie the Shankh in a white cloth and place it in the place you keep your cash or valuables at home. This is a very rare Sadhana that if tried with full faith can do wonders for you.

Sadhana Articles – 480-

Any Friday

## Be live, be beautiful!

# Kaamdev Rati Sadhana

Beauty and love form the essence of life and everyone in the world wishes to experience these two treasures. These are two elements that make life worth it and keep a person feeling youthful and energetic even though one might have crossed one's prime of life.

Most people mistake beauty for physical looks and love for passion. One cannot do much about transforming the way Nature has presented an individual to the world. Even cosmetics do little to make one look much attractive. But there sure are Mantras that could instil a strange hypnotic magnetism in one's personality that everyone could be drawn towards one like a piece of iron pulled by a magnet. These are Mantras that make beauty spring from within and the transformation could be too subtle too be noticed by the naked eye but without doubt the effect is simply amazing.

I have known revered Sadgurudev to have gifted this ritual and Mantra to many desperate individuals, and each of them benefitted tremendously from it. One particular girl I remember was so disillusioned by her looks and by the way others ignored her that she even tried to commit suicide!

Luckily a disciple of Sadgurudev saved her and directed her to the holy feet of the Master who kindly gave her Kamdev Rati Diksha and initiated her into this divine Sadhana. The girl had passed through virtual hell and she put in all she had into the Sadhana. And when she returned three months after to meet Sadgurudev and thank him even I could not recognise her.

Fine, she had the same face and same complexion. But an out of the world divine radiance played on her features and her eyes seemed to pull one towards her and strike a conversation. And the way she smiled! Sadgurudev was very pleased by the devoted way in which she had performed the Sadhana. And then she broke the big news. Although she was not from a very rich family, recently a very wealthy businessman had

proposed to her on his own accord.

This very Sadhana is being revealed here with blessings of revered Sadgurudev. It works wonders for not just women but also men. And even those who feel old and listless due to the onslaught of worries and tensions can greatly benefit from it. This Sadhana infuses one with the divine energy of Kaamdev (the god of love and beauty) and Rati (his divine consort) and thus makes one feel youthful, beautiful, confident and energetic. And when there is beauty in one's thoughts, a sparkle in one's eyes, a song on one's lips and the spirit of youth in one's heart can love be far behind?

This Sadhana must be tried on a **Friday** – the day signifying planet Venus the star of love and beauty.

At night after 10 pm have a bath and wear yellow clothes. Sit on a yellow mat facing North or East. Wear some natural fragrance on your clothes. Cover a wooden seat with yellow cloth and on it draw a Swastik with vermillion. On it place a picture of Sadgurudev. Worship Sadgurudev by offering vermillion, flowers and rice grains. Light a ghee lamp and incense. In a copper plate over a mound of rice grains place **Ratikaam Yantra (amulet)**.

Take water in the right palm and speak thus – I (speak your name) am performing this Sadhana for a infusion of divinity and beauty in my life. Let the water flow to the floor. Make two marks with vermillion on the Yantra. Offer rice grains and vermillion on the Yantra. Then chant one round of Guru Mantra.

Thereafter chant fifty one rounds of this Mantra with **Anang rosary**.

### **Om Kaam Ratyei Phat**

After the Sadhana chant one round of Guru Mantra. Wear the Yantra-amulet around your neck for twenty one days. Daily chant the Mantra just eleven times in the morning after having a bath. After twenty one days drop the rosary and Yantra in a river or pond

Sadhana Articles – 330/-

दीक्षा गुरु एवं शिष्य के मध्य सम्बन्ध  
सूत्र है, गुरु शक्ति का कंचकण है शिष्य  
के भ्रीतक, ... गुरु की रूपा और  
शिष्य की शब्दा इन दो पथित्र धाकाओं  
का कंगम दीक्षा है।

दीक्षा शहद वान और क्षेप इन दो शहदों  
के सहयोग से बना है वान अर्थात् गुरु  
द्वाका प्रदान की गई शक्ति एवं क्षेप  
अर्थात् शिष्य के विज्ञाकों का नाश  
यही दीक्षा का मूल अर्थ है।

**06 मई 2007**

### आद्या शक्ति युक्त महालक्ष्मी साधना शिविर

शिविर स्थल : मध्यर मिलन टैकेट हॉल, निकट शक्ति  
चौक, जजीरोड़, बिजनौर (उ.प्र.)

दिल्ली-मेरठ-हरिद्वार-मुरादाबाद से बस सुविधा।

आयोजक: पंकज भारद्वाज - 098978-98964 ○ अनुराग त्यागी  
- 097190-31783 ○ विनोद कुमार - 098374-80889 ○ चन्द्रभान  
सिंह - 097588-73049 ○ राजीव देवरा - 093130-68804  
○ कल्याण सिंह ○ विजय चौधरी ○ सहारनपुर: प्रवीण शर्मा  
- 098375-80300 ○ हरिद्वार: संजय मिश्रा - 093193-72844  
○ काशीपुर: चन्द्रवली तिवारी - 094113-29028 ○ रुद्रपुर: विनोद  
सिंह - 097190-03716 ○ मुरादाबाद: डॉ. योगेश पांडे - 094122-  
48254 ○ गोकर्ण सिंह - 094127-05822 ○ सिद्धाश्रम साधक  
परिवार, शाहजहांपुर - 094151-66893/093352-65459/0584-  
2222138/2227217/2226451 ○ बरेली: उमेश अग्रवाल  
○ सिद्धाश्रम साधक परिवार, आगरा - 094112-06768 ○

◆◆◆ ◆◆ ◆◆◆ ◆◆ ◆ ◆◆ ◆◆◆

**21-22 मई 2007**

### शिव शक्ति महालक्ष्मी साधना शिविर, बैतुल

शिविर स्थल: न्यू बैतुल हायर सैकण्डरी, थाने के  
पास कोठीबाजार थाने के पास, बैतुल (म.प्र.)

आयोजक: बैतुल (07141): प्रशांत गर्ज - 94250-03036  
○ आर.सी.मिश्रा - 232341 ○ राजीव खंडेलवाल - 94250-

02638 ○ मनोज अग्रवाल - 098276-78341 ○ जनकलाल मवासे  
- 094253-61761 ○ आई.डी.कुमार - 094253-04226  
○ एस.एल.धूर्वे - 099931-55686 ○ विजय सीते - 94250-02418  
○ बी.एस.संकत - 98935-75765 ○ टी.एन.अनिहोत्री - 236776  
○ बलदेव दवन्डे - 099267-68495 ○ पी.आर.सोनारे - 291900  
○ जनक प्रसाद ठेकेदार - 094250-03246 ○ संजय भाटिया -  
094256-57090 ○ कैलाश सोनी (सेहरा) ○ राकेश कोकाश -  
099264-53756 ○ राजू झरबडे - 098939-19302 ○ रविन्द्र तायवाडे  
- 265965 ○ रीता धुर्वे ○ देवी प्रसाद राठौर - 099933-70496  
○ अनिल राठौर - 291025 ○ सोनूलाल वरकडे - 098937-  
92926 ○ राजश्री मरकाम - 099931-55462 ○ आई.एल. डोगरे  
○ गुलाब कोडोपे ठेकेदार - 093295-19159 ○ आमला: संतोष  
कवडकर - 098933-45081 ○ उदय मालवीय - 094256-58497  
○ अशोक नावंगे - 093296-59556 ○ रुकेश घोटे - 098266-  
45404 ○ रमेश डोगरे - 093291-53201 ○ राजेश वट्टी ○ भैसदेही  
(07143): निखिल बामने - 099263-28193 ○ राजू वर्टी - 093021-  
01535 ○ खडगले बाबूजी - 283264 ○ संतोष मालवीय - 094218-  
28233 ○ भीमसेन भलावी - 293397 ○ बिहारी लाल सूर्यवंशी  
- 223174 ○ अमरसिंह परते ○ एस.आर.उइके - 231473 ○ अनूप  
डोगरे - 094244-22684 ○ गणेश जावरकर - 243069 ○ सूरजलाल  
जायरकर ○ चिचोली: सुरेन्द्र चौहान ○ इमरत लाल कास्दे  
○ अशोक आर्य ○ सुखलाल अखंडे ○ उदेशा बरकडे ○ पूरनलाल  
धूर्वे ○ मिलाप सिंह वट्टे ○ सुरेन्द्र चौहान ○ मुलताई (07147):  
यू.आर.उइके - 094243-56471 ○ सी.एल.मरकाम - 297565  
○ सरदार निर्मल सिंह - 224333 ○ मनीष परमार - 224577  
○ भीमपुर (07142): सुनिता उइके (सरपंच) - 247539  
○ अमरसा इरपाचे ○ सोमलाल वरकडे ○ घोड़ा डोगरी (07146):  
नरेन्द्र मेहतो - 290944 ○ आर.डी.मरकाम ○ सारणी (07146):  
श्यामराव वाघमारे - 094244-22542 ○ शिवकुमार धाइसे -  
250764 ○ एस.आर.पड़लक - 094244-30737 ○ राजेश रजने -  
094256-70702 ○ रमेश बिसन्दे - 098264-30197  
○ एस.आर.कवडकर - 099933-36850 ○ जयराम झरबडे -  
098269-40810 ○ कर्तिक जगदेव - 093090-02670 ○ विजय लाल  
परते - 099263-71429 ○ भिऊ भादे - 251305 ○ सुन्दरसिंह  
ठाकुर - 271791 ○ घनश्याम मालवीय - 270879 ○ प्रभातपट्टन:  
उदयराम लौजीवार ○ ठाकुर नागवंशी ○ डॉ.एस.के.सोनी  
○ महादेव तागडे ○ शंकरलाल मालवीय ○ शमहपुर (07146):

धनू सिंह धुर्वे ○ शंकरलाल जीतपुरे - 241631 ○ महेन्द्र मवासे - 094250-02564 ○ रतन वरकडे ○ आठनेर(07144): कमलाकर धाडसे - 094256-70011 ○ अमित जीत पुरे - 286453 ○ पी.एन.दवंडे - 286307 ○ प्रदीप झोडे - 286383 ○ होशंगाबाद (07574): सरनाम सिंह ठाकुर - 200271 ○ सुरेश धुर्वे - 255278 ○ ब्ही.के.झारीया - 07791-255789 ○ भोपाल (0755) : आर.एन.वर्मा - 093031-08299 ○ राजेश पंवार - 2752539 ○ आई.एस.पदाम - 2783931 ○ प्रशांत उपासे - 098273-66374 ○ विदिशा (0759): एन.के.श्रीवास्तव - 094251-49852 ○ वी.पी.दूबे - 236052 ○ राजगढ़: विमलाश्री निखल - 98266-43069 ○ खण्डवा: रणजीतसिंह यादव ○ परतवाड़ा: गणेश मवासे - 98225-74290 ○ केवलराम काडे - 94221-28304 ○ इंदौर : प्रेम सूर्यवंशी - 98260-37244 ○ कुलदीपसिंह - 94250-57411 ○ कटनी: महेन्द्रसिंह उड्के - 94250-03544 ○ बी.बी.सिंह ○ राजपाल गांधी - 94258-59129 ○ विश्वाचरण - 92295-73185 ○ नागपुर: श्रीनिशांत पाटिल - 94221-19917 ○ ब्ही.बी.ठाकरे - 94221-17995 ○ सुधीर सेलोकर - 093256-05353 ○

◆◆ ◆◆ ◆ ◆◆ ◆◆ ◆ ◆◆ ◆◆◆

**30 जून - 01 जुलाई 2007**

### मंजुल महोत्सव

#### साधना शिविर, गोंदिया

शिविर स्थल : इंदिरा गांधी स्टेडियम,

गोंदिया (महाराष्ट्र)

आयोजक: चंदनलाल ठाकुर - 093255-65715 ○ रविन्द्र भोंगाडे - 098229-49458/094236-17513 ○ के.एन.मोहाडीकर - 094228-34716 ○ कमलाकर चौरागडे - 098232-94900 ○ प्रशांत डोये - 092262-69325 ○ डी.के.भगत - 07182-230018 ○ डॉ.टी.एम.धुवरे - 07182-226815 ○ विजय तुपटे - 07182-252603 ○ आर.टी.पट्टे - 07182-250912 ○ डी.के.डोये - 092262-70872 ○ शरद ठाकुर - 093255-65715 ○ विनायक पट्टे - 093251-73180 ○ राजु सोनवाने - 07182-233198 ○ हेमराज चिखलोंडे - 093739-63362 ○ संतोष गौर - 093267-54103 ○ सिद्धाश्रम साधक परिवार, गोंदिया ○ तिरोडा: बबलु बैस - 094234-24285 ○ शुक्राचार्य ठाकरे - 094326-06893 ○ आगांव: जयंत पट्टे - 094236-07080 ○ सालेकसा: सुदेश जनबंधु - 07180-244030 ○ गोपीचंद शेंडे ○ बापुटोला: भरतसिंह बैस -

099226-62356 ○ देवरी: मोतीराम मुनेश्वर ○ यशवंत राजकोंडावार - 07199-229575 ○ मोरगांव अर्जुनी: पतिराम मुनेश्वर - 07196-220734 ○ तुमसर: श्रीनिवास मैहरपल्लीवार - 094228-30697 ○ गोबरवाही: बन्डु खोब्रागडे - 07183-50095 ○ ब्रह्मपुरी: सुधीर सेलोकर - 093256-05353499 ○ नागपुर: किशोरसिंग बैस - 092252-24818 ○ कन्हान: गुरारी - 098235-82275 ○ भाऊराव ठाकरे ○ गढचिरोली: प्रदीप चुंदरी ○ अशोक लडके ○ आरमोरी: कुंभारे गुरुजी ○ भानेगांव: सुरेश रावते - 07635-254661 ○ बालाघाट: नरेन्द्र बोम्पे - 093002-79790 ○ भौंडेकरजी - 093015-87841 ○ दिलीप कनोजिया ○ वारासिवनी: धमेन्द्र जैन ○ भंडारा: प्रशांत परसोडकर ○ कमलाकर साठवने - 094236-05631 ○ मनोज वालोकर ○ यवतमाल: दिपक ऐन्डे - 098500-15587 ○ श्रीकांत चौधरी - 098227-28916 ○ घुग्घुस: वासुदेव ठाकरे - 094221-17995 ○ कंचन राठोड ○ चंद्रपुर: वतन कोकास - 098603-31210 ○ विजय वैद्य ○ अमरावती: सतीष भिवगडे - 093701-56631 ○ अरुण भातकुलकर ○ साहेबराव बान्ते ○ परतवाड़ा: गणेश मवासे ○ पालोरा: शांताराम अगडे - 094217-16235 ○ अकोला: ज्ञानेश्वर टापरे - 0724-2458163 ○ वणी: महेश वराडे ○ प्रशांत मानगांवकर ○ वरोरा: जाधवसर ○ देशमाने सर ○ मरीहटदा: डॉ. सुधीर बिसेन ○

◆◆ ◆◆ ◆ ◆◆ ◆◆ ◆ ◆◆ ◆◆◆

**14-15 जुलाई 2007**

### हिंडिम्बा साधना शिविर, मनाली

शिविर स्थल : ट्रिनिम क्लब हाऊस, मनाली (हि.प्र.)  
 आयोजक: ज्ञानचन्द रत्न - 094180-90783 ○ जगरनाथ नडा - 094182-55835 ○ राजेश - 093187-85988 ○ हेमलता कौडल - 094180-45068 ○ के.डी.शर्मा - 094180-65655 ○ शिव कुमार - 094181-14916 ○ श्रीराम - 098164-91011 ○ रविन्द्र - 098160-60145 ○ प्रकाशोदेवी - 094180-84207 ○ ओम - 094180-05016 ○ राम कुमार - 093187-95419 ○ संतोषी - 098171-69978 ○ जीवन लता - 094180-46965 ○ धर्मदिव - 098161-53964 ○ चैनलाल - 01978-243244 ○ रत्नलाल - 01978-224816 ○ ब्रह्मीदेवी - 01978-254512 ○ धर्मपाल - 01978-255418 ○ सागर - 094183-29008 ○ जगदीश - 098172-48400 ○ संतोष कुमार - 098161-60261 ○ प्रकाश राणा - 098165-80845 ○ प्रवीण गौतम - 01978-

266762 ○ अन्नत राम - 01978-270245 ○ डॉ. दिनेश कुमार - 099792-79563 ○ आनन्द: अल्पेश भाई रथवा - 094278-  
 098160-55484 ○ उत्तम - 01978-275112 ○ मण्डी: शलैन्द्र - 57887 ○ विरेन्द्र सांलेकी - 098255-71555 ○ वीरपुर: बल्लुभाई  
 094180-00140 ○ महेन्द्र गुप्ता - 094180-43420 ○ भुवन - 098170-  
 41416 ○ बंशी राम ठाकुर - 01907-242544 ○ अशोक बंटा - 094276-17523 ○ डाकोर: प्रगनेशभाई पंडया - 0994244-  
 ○ रोशन लाल - 01905-237849 ○ सुन्दर नगर: रविन्द्र नाथ - 22038 ○ ब्रजेश खम्भोलजा - 099256-70133 ○ भरुच: हिंतेश  
 098161-54123 ○ खुबराम गुप्ता - 098161-50014 ○ बल्ह: शुक्ला - 099989-75772 ○ आर.सी.सिंह - 098250-41689 ○ हरेश  
 श्यामलाल - 098170-42859 ○ करसोग: महेन्द्र - 094184-  
 99160 ○ शिमला: सुवेग सिंह - 0177-2831025 ○ अशोक शर्मा - 094268-60633 ○ कांतिलाल सी. रेशमवाला - 093747-  
 - 091181-20691 ○ टी.आर.कौडल - 0177-2623318 ○ चम्बा:  
 अमरीक सिंह - 094182-21352 ○ पंकज - 098166-42842 ○ मुनीश  
 शर्मा - 094181-01341 ○ ऊना: हैप्पी - 094183-50285 ○ प्रदीप  
 राणा - 09174-09582 ○ कांगड़ा: संजीव - 098161-  
 17888 ○ धर्मशाला: आर.एस.बधवार - 094180-88358 ○ ललित  
 - 094180-86082 ○ पालमपुर: आर.एस.मिन्हास - 094181-  
 61585 ○ नगरोटा सूरियां: ओमप्रकाश - 094182-50674 ○ कुशल  
 सिंह - 098160-02184 ○ नूरपुर: पीताम्बर - 01893-  
 250312 ○ ज्वाली: चमन लाल - 094180-40507 ○ हर्मीरपुर:  
 राजेन्द्र शर्मा - 094181-03439 ○ गगन प्रशाशर - 094184-  
 25421 ○ सोलन: गौरव मेहता - 094184-77239 ○ दिवान चन्द -  
 01792-240061 ○ कल्लू: बब्ली सिंह - 0202-222646 ○

A decorative horizontal border consisting of a repeating pattern of black five-pointed stars.

साधक कृपया द्यान दें -  
आप द्वारा साधना सामग्री के सम्बन्ध में  
जो निवेदन फौन अथवा पत्र द्वारा किया  
जाता है, उसे सही रूप से भैड़नी का पूरा  
प्रयास किया जाता है। यदि आप साधना  
सामग्री का पूर्ण विवरण अर्थात् वह साधना  
किस माह/वर्ष के अंक में प्रकाशित हुई है,  
तिख भैड़ों तौ हम उचित साधना सामग्री भिड़वा  
सकेंगे। आप अपना पूर्ण पता अवश्य लिख  
कर भैड़ों अथवा फौन पर कार्यालय में उसे  
पूरा-पूरा अंकित करायें, जिससे कि आपकी  
साधना सामग्री जल्द प्राप्त हो सकें।

किसी विशेष मुहूर्त, पर्व, शुभ दिन इत्यादि से सम्बन्धित साधना सामग्री का समय रहते आर्डर अवश्य ब्रैड दें ताकि हम आपको समय पर साधना सामग्री उपलब्ध करवा सकें।

## कायलिय ट्युवस्थापक

२. कुण्डलिनी जागरण दीक्षा - इससे शिष्य के शरीर स्थित एक के बाद एक चक्र जाग्रत होने लगते हैं और कुण्डलिनी जागरण क्रिया तेजी के साथ गतिशील होती है।

मंत्रः ॥ॐ श्रीं ऐं कुल कुण्डलिन्यै फट्॥

३. बगलामुखी दीक्षा - जो व्यापार में या जीवन में आने वाली बाधाओं को जड़ से समाप्त करने एवं शत्रुओं से एवं अन्य बाधाओं से रक्षा करने में सहायक है।

मंत्रः ॥ॐ ह्रीं बगलामुखि सर्व दुष्टान्तां वाचं मुखं पदं स्तम्भय जिह्वां कीलय बुद्धिं विनाशय ह्रीं ॐ फट्॥

४. मनोवांछित कार्य सिद्धि दीक्षा - आपके मनोनुकूल कार्यों में आ रही बाधाओं को समाप्त कर सफलता प्राप्त करने के लिए आवश्यक दैवीय सहायता हेतु श्रेष्ठ दीक्षा।

मंत्रः ॥ॐ ह्रीं मम समस्त मनोकामना सिद्धि देहि देहि फट्॥

५. सरस्वती दीक्षा - बच्चों को मेधावी, बुद्धिमान, प्रवीण एवं विद्या में निपुण बनाने के लिए श्रेष्ठ दीक्षा।

मंत्रः ॥ॐ ऐं ॐ॥

६. रोग निवारण दीक्षा - शरीर को रोगरहित करने के लिए इस दीक्षा का प्रावधान है।

मंत्रः ॥ॐ ऐं ह्रीं सर्व रोगाय निवृत्तिं ह्रीं फट्॥

७. अप्सरा सिद्धि दीक्षा - अप्सरा साधनाओं में पूर्ण सफलता के लिए इस दीक्षा को लेना आवश्यक है।

मंत्रः ॥ॐ श्रीं ह्रीं अप्सरा सिद्धिं प्रत्यक्ष दर्शय ह्रीं श्रीं ॐ॥

८. गुरु हृदयस्थ धारण दीक्षा - गुरु को ही समस्त सिद्धियों का आधार कहा गया है। इस दीक्षा के माध्यम से गुरु अपने ज्ञान स्वरूप में शिष्य के हृदय में स्थापित होते हैं और उसको जीवन के उतार-चढ़ाव में संकेत देते रहते हैं। अपने प्राणों को, हृदय को गुरु से जोड़ने की यह दीक्षा है।

मंत्रः ॥ॐ ह्रीं गुरु हृदय धारणाय ह्रीं ॐ॥

९. तंत्र बाधा निवारण दीक्षा - तंत्र बाधा, मूठ, भूत-प्रेत बाधा, बन्धन आदि से व्यक्ति का आशुर्य जनक रूप से जीवन अस्त-व्यस्त हो जाता है, ऐसी बाधा से निवारण के लिए यह दीक्षा ली जाती है।

मंत्रः ॥ॐ ऐं ह्रीं तंत्र निवारणाय फट्॥

१०. भाग्योदय दीक्षा - कई बार मनुष्य के अथक प्रयास करने के बाद भी सफलता हाथ से आते आते रह जाती है, यह भाग्य दोष के कारण होता है, जिसका नियाकरण यह दीक्षा है।

मंत्रः ॥ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं ॐ॥

इन दीक्षाओं को प्राप्त करने के बाद यदि साधक नियमित स्वप्न से अपनी दैनिक पूजन पद्धति के साथ दीक्षा सम्बन्धी मंत्र का मात्र १०८ बार जप करे, तो दीक्षा की ऊर्जा शीघ्र फलीभूत होती है। यहां प्रत्येक दीक्षा के साथ उनके सम्बन्धित मंत्र भी दिए जा रहे हैं, जिन्हें दीक्षा प्राप्त करने के उपरांत साधक अपने साधनाक्रम में जोड़ सकते हैं।

गुरु मंत्र : ॐ परम तत्त्वाय नारायणाय गुरुभ्यो नमः।

चेतना मंत्र : ॐ ह्रीं मम प्राण देह रोम प्रतिरोम चैतन्य जाग्रय ह्रीं ॐ नमः।

गायत्री मंत्र : ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमहि धियो

योनः प्रचोदयात्।



## COLLECTION OF VARIOUS

- > HINDUISM SCRIPTURES
- > HINDU COMICS
- > AYURVEDA
- > MAGZINES

FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)

Made with



By

Avinash/Shashi

[creator of  
hinduism  
server]

रजिस्ट्रेशन नं- 35305/81

With Registrar Newspapers of India  
Posting Date 06-07 every Month

A.H.W

Postal No. RJ/WR/19/65/2006-08  
Licence to post Without pre payment  
Licence No. RJ/WR/PP04/2006-08



## माहः जून में दीक्षा के लिए निर्धारित विषेष दिवस

पूज्य गुरुदेव निम्न दिवसों पर साधकों से मिलेंगे  
व दीक्षा प्रदान करेंगे। इच्छुक साधक निर्धारित दिवसों  
पर पहुंच कर दीक्षा प्राप्त कर सकते हैं।

निर्धारित दिवसों पर यह दीक्षाएं प्रातः 11 से 1 बजे के  
मध्य तथा सायं 5 बजे से 7.30 बजे के मध्य प्रदान की जाएंगी।

स्थान  
गुरुधाम (जोधपुर)

दिनांक  
01-02-03 जून

स्थान  
सिद्धाश्रम (दिल्ली)

दिनांक  
28-29-30 जून

वर्ष - 27

अंक - 05

.. संपर्क ..

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान डॉ. श्रीमालीमार्ग हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर-342001 राज. फोन : 0291-2432209, 2433623, टेलीफै क्स-0291-2432010  
सिद्धाश्रम 306, कोहाट एन्कलेव पीतमपुरा, नई दिल्ली-34, फोन : 011-27352248, टेली फै क्स 11-27356700